# विकासात्मक विलंब वाले शिशुओं और बच्चों में प्रारंभिक मध्यस्थता पर मैन्युअल सीरीज़ - 3

## वाणी, भाषा, संप्रेषण और सामाजिक विकास


**लेखकगण**

डॉ.अमर ज्योति पर्शा

एन. सी. श्रीनिवास

आर. सी.नितनवरे



**राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान**

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

आईएसओ 9001:2008 संस्थान

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009 आंध्र प्रदेश, भारत

दूरभाष: 040-27751741 फैक्स: 040-27750198

ई-मेल: library@nimhindia.org वेबसाइट: www.nimhindia.org, www.nimhindia.gov.in

**विकासात्मक विलंब वाले शिशुओं और बच्चों में प्रारंभिक मध्यस्थता पर मैन्युअल**

**सीरीज़-3 वाणी, भाषा, संप्रेषण और सामाजिक विकास**

**लेखकगण**
डॉ.अमर ज्योति पर्शा
एन. सी. श्रीनिवास
आर. सी.नितनवरे

कापी राइट © 2012
राष्ट्रीय मानसिक विकलॉग संस्थान
सिकंदराबाद - 500 009

**महत्वपूर्ण**

© सर्वाधिकार सहित कापीराइट के सभी अधिकार राष्ट्रीय मानसिक विकलॉग संस्थान, प्रकाशकों के पास आरक्षित हैं। इस पुस्तक के किसी रूप या किसी माध्यम (ग्रफिक्स, इलेक्ट्रानिक या मेकानिकल) के या किसी भी सूचना, भंडार, उपकरण को प्रकाशकों की लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पत्ति नहीं की जानी चाहिए ।

**विकासात्मक विलंब वाले शिशुओं और बच्चों में प्रारंभिक मध्यस्थता पर मैन्युअल**

**सीरीज़-1 संज्ञान, श्रवणींयता और दृष्टि**

**सीरीज़-2 ग्रॅस मोटर और फाइन मोटर**

**सीरीज़-3 वाणी, भाषा, संप्रेषण और सामाजिक विकास**

आईएसबीएन 81 89001 96 5

मुद्रक: श्री रमणा प्रासेस प्रा.लिमिटेड, सिकन्दराबाद-500 003 फोन: 040-27811750

# विषय-वस्तु


प्राक्कथन

आमुख

भूमिका

विकासात्मकता के क्षेत्र

1. वाणी, भाषा तथा संप्रेषण 13 - 64

2. सामाजिक 65 - 128

परिशिष्ट 129 - 134

संदर्भ ग्रंथ 135 - 144

टी.सी. शिवकुमार
निदेशक
T.C. SIVAKUMAR
Director

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
NATIONAL INSTITUTE FOR THE MENTALLY HANDICAPPED
(Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India)
(An ISO 9001 : 2008 Institution)

# प्राक्कथन

अक्षमता पुनर्वास के क्षेत्र में लगे हुए किसी भी व्यावसायिक के लिए अक्षमता की रोकथाम सर्वप्रथम महत्वपूर्ण कार्यावली है। फिर भी, ऐसे कई कारण हैं जिनमें परिस्थितियॉ व्यावसायिकों के परिप्रेक्ष्य से बाहर निकल जाती हैं। ऐसी घटनाओं में जोखिम में पड़े हुए और अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों की स्थिति की गहनता और गंभीरता को घटाने के लिए प्रथम और महत्वपूर्ण कदम प्रारंभिक मध्यस्थता ही है। रा.मा.वि.सं. अपनी स्थापना के समय से प्रारांभिक मध्यस्थता के वर्ग के अंतर्गत पड़नेवाले बच्चों अर्थात् 0-3 वर्षों की आयु वाले बच्चों के लिए सेवाएँ प्रदान करने के लिए फोकस करता और ध्यान देता आ रहा है । हमारे द्वारा प्रदान की गयी सेवाओं से प्राप्त अनुभवों ने हमें दो शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभिक मध्यस्था में पी.जी. डिप्लोमा और अक्षमता अध्ययनों (प्रारंभिक मध्यस्थता) में एम.एससी- विकसित करने पर जोर दिया है। यह अपेक्षा की जाती है कि उपर्युक्त शैक्षिक पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित व्यावसायिक थिरेप्युटिक्स के साथ-साथ मानव-शक्ति का सृजन भी कर पाएँगे ।

उपर्युक्त कार्रवाइयों के आगे रा.मा.वि.सं., ने देश के कुछ जिलों में प्रारंभिक मध्यस्थता केंद्र स्थापित किऐ है, आधारित स्तर पर वास्तविक आवश्यकता का अंदाजा लगाने के लिए और अद्यतन सूचना प्राप्त करने के लिए पायलट परियोजना स्थापित की है। इसके अलावा विभिन्न सेवा प्रदायकों के कार्मिकों से लेकर व्यावसायिकों के लिए हम लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करते आ रहे हैं । इन तमाम कार्यक्रमों को समर्थन प्रदान करने के लिए रा.मा.वि.सं., ने प्रशिक्षणार्थियों में कुशलता को हासिल करने के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार और प्रकाशित की है । अपितु, आवश्यकता के परिमाण, विस्तृत विशाल जनसंख्या के मद्देनजर, विशेषकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकता की पूर्ति की चुनौती का सामना करता आ रहा है । यह महसूस किया गया है कि स्वास्थ्य, महिलाओं और बाल विकास और अक्षमता पुनर्वास के मौजूदा नेटवर्क में कार्यरत व्यावसायिकों, चिकित्सकों और विशेषज्ञों के कौशलों को उन्नत करने के लिए अन्तर-विषयक पहुँच के साथ उपयुक्त पाठ्यक्रम के लिए (बड़ी) मॉग है । रा.मा.वि.सं. की प्रारंभिक मध्यस्थता टीम ने महसूस किया इस कमी को पूरा करने अब तक जिन तक न पहुँचे वहॉ तक पहुँचने के लिए प्रशिक्षण मैन्युअलों को तैयार किया जाए, जिसके परिणाम स्वरूप विकासात्मक विलंब वाले शिशुओं और बच्चों में प्रारंभिक मध्यस्थता की निम्न शीर्षकों वाले मैन्युअलों की सीरीज़ पूरी की है:

सीरीज -1: संज्ञान, श्रवणीयता और दृष्टि
सीरीज -2: ग्रॅस मोटर और फाइन मोटर
सीरीज -3: वाणी, भाषा, संप्रेषण और सामाजिक विकास

इस क्षेत्र के व्यावसायिकों के संदर्भ के लिए यह मैन्युअल तैयार है । प्रारंभिक मध्यस्थता में समुचित प्रशिक्षण कार्यक्रम और मैन्युअल के उपयोग पर अनुदेशों की सहायता से अधिक कार्मिक अपनी सेवाएँ प्रदान कर पाएँगे तथा इस क्षेत्र में मानव संसाधन में कुछ जोड़ पाएँगे।

मै, डॉ.अमर ज्योति पर्शा, जो रा.मा.वि. संस्थान में चिकित्सा विज्ञान की विभागाध्यक्ष हैं, की अगुआई में अनुसंधान टीम द्वारा इस सेवा मैन्युअल जो प्रारंभिक मध्यस्थता के क्षेत्र के लिए असाधारण योगदान है, उनकी योगदान प्रशंसनीय है ।

प्रारंभिक मध्यस्थता पर यह मैन्युअल रा.मा.वि.सं. के पहले से प्रकाशित प्रकाशनों के साथ जैसे रैपिड (रीचिंग एंड प्रोग्रामिंग फार आइडेंटिफिकेशन ऑफ डिसेबिलिटीज), कम कीमत वाले मोटर समस्याओं पर प्रेरक सामग्री, शिशुओं और बच्चों के लिए स्थानिकता और प्रेरणा क्रियाकलाप, किड्स प्ले (सीखने की राह), प्रारंभिक अंतराक्षेपण- सेवा मॉडल और पोस्टर्स और पर्चियॉ/ सूचना ब्रोशर्स आदि प्रारंभिक मध्यस्थता के लिए व्यापक मध्यस्थता का निर्माण करेगी ।

मुझे ठोस विश्वास है कि इस पैकेज के द्वारा रा.मा.वि.सं., प्रारंभिक मध्यस्थता की सेवा देश के कोने-कोने तक अवश्य पहुँचाएगा।

दिनांक: 1 मार्च, 2011
स्थान: सिकंदराबाद

(T.C. SIVAKUMAR)

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009 तार : मनोविकास दूरभाष : (का) 27759267 (नि) 27992617 फेक्स : 040-27758817
Manovikasnagar, Secunderabad - 500 009. Grams : MANOVIKAS Phones : 27759267 Fax : 040-27758817
E-mail : director@nimhindia.org, nimh.director@gmail.com Website : www.nimhindia.org

# आमुख

इस मैन्युअल को, अपने स्वयं के विशेषज्ञों के अलावा विकास के अन्य क्षेत्रों के व्यावसायिकों, चिकित्सकों और विशेषज्ञों की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखकर, तैयार किया गया है । मौलिक सूचना के साथ-साथ तकनीकी पृष्ठभूमि भी प्रदान की गयी है जिसे आसानी से समझकर व्यावसायिकगण मध्यस्थता सेवाएँ प्रदान कर पाएँगे । फिर भी, पाठकगण यह जान लें कि सेवाएँ प्रदान करने के लिए हरेक खंड पर्याप्त तो है परंतु, अपने स्वयं के लोगों के अलावा उन विशिष्ट क्षेत्रों में किसी को विशेषज्ञ नहीं बनाता । अत:, विशेषज्ञता राय और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए विशेषज्ञ से परामर्श लेना अपरिहार्य है ।

जो शिशु और बच्चे जोखिम में हैं, या विकासीय देरियों और अक्षमताओं से ग्रस्त हैं, यह मध्यस्थता पैकेज उनके लिए है । चूँकि, यह व्यावसायिकों और चिकित्सकों के लिए है इसीलिए विषय और भाषा में सरल से सरलतम व संभव पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है । विषय में अनेकों उदाहरण हैं और इन्हें ड्राइंगों द्वारा समझाया गया है । समस्याओं और अक्षमताओं को लाल पर्ची द्वारा विशेष रूप से दोहराया गया है। विभिन्न अक्षमताएँ दृष्टि, श्रवण और सीपी आइकान द्वारा दर्शाया गया है जिसके सामने अनुकूलन विवरित हैं।

मैन्युअल के दो खंड़ हैं वाणी, भाषा और संप्रेषण तथा सामाजिक विकास ।

हर खंड के दो भाग हैं । प्रथम भाग में संक्षिप्त भूमिका के बाद विकास (अवस्थाएँ और मील के पत्थर) की महत्ता, उस अवस्था की चारित्रिकता लक्षणों की कमियाँ, देरियाँ और अपसमानताएँ और बच्चे के विकास पर उनके प्रभाव बताये गये हैं । दूसरे भाग में हासिल किये जानेवाले कौशल और मध्यस्थता तकनीक हैं । मध्यस्थता तकनीकियों को बहुत सारे चित्रों द्वारा स्पष्टत: समझने के लिए दिया गया है । जहाँ कहीं तरमीमें और अनुकूलन आवश्यक हैं, आवश्यक परिवर्तनों के संकेत दिये गये हैं ।

**वाणी, भाषा और संचार :** इस खंड में वाणी और संचार का महत्व बताने और वाणी की परिभाषा के बाद, वाणी और भाषा के सामान्य विकास की पूर्व आवश्यकताओं के बारे मं बताया गया । वाणी के उपकरण की संक्षिप्त एनाटमी डायाग्राम के द्वारा प्रस्तुत की गयी और सारिणी के रूप में विभिन्न अंगों के कार्य बताये गये हैं। भाषा के वर्णन के बाद भाषा के प्रमुख संघटकों तथा सामान्य वाणी तथा भाषा के विकासीय ब्यौरे प्रस्तुत किये गये हैं। इसके बाद संप्रेषण की परिभाषा, विकास और संप्रेषण व भाषा के कार्य बताये गये हैं । वाणी और भाषा सीखने का क्रम, उसमें आवेष्टित प्रमुख कौशल और वाणी और भाषा की समस्याओं के चिह्न सूचीबद्ध किये गये हैं ।

इस क्षेत्र में मध्यस्थता के पैकेज में 1 से 25 मद दिये गये हैं । हरेक मद का सामान्य विकास, उसका महत्व और मध्यस्थता तकनीकों और अनुकूलनों का संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है ।

**सामाजिक :** नवजात और शिशुओं की विभिन्न सामाजिक प्रतिक्रियाएँ सामाजिक प्रतिभागियों के रूप में शिशुओं की प्राकृतिक प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं । सामाजीकरण और सामाजिक सक्षमता की परिभाषा के साथ सामाजिक विकास के मील के पत्थर को सारणी में उपलब्धि के आयु क्रम के अनुसार सूचीबद्ध किया गया है।

उसके बाद के अध्याय में सामाजिक विकास क्रम को संक्षिप्त रूप से स्पष्ट किया गया है । सामाजिक विकास में अनुरक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है । सामाजिक विकास में अनुरक्ति विकास की अवस्थाएँ और अनुरक्ति के विभिन्न रूप और सुरक्षित रूप से संबद्ध शिशु की चारित्रिकताओं का ब्यौरा है ।

शिशु को सामाजिक रूप से सक्षम बनने अंतत: विकास की योग्यताएँ और क्रियाकलाप जो सामाजिक विकास को अपनाते हैं, उन्हें भी यहाँ शामिल किया गया है ।

मध्यस्थता पैकेज में 38 मद हैं । हरेक मद को निम्न क्षेत्रों जैसे अनुरक्ति, सामाजिक खेल, पहचान, सहयोग, स्वतंत्रता, स्वयं की छवि के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है । हरेक मद पर उसके महत्व, मध्यस्थता पद्धतियों, संबंधित अक्षमता स्थितियों के लिए अनुकूलनों के अंतर्गत विचार किया गया है । हरेक मध्यस्थता मद चित्र में उदाहरण स्वरूप समुचित रूप से दर्शाया गया है ।

मध्यस्थता पैकेज में कुल 12 मद हैं और हर मद के लिए सामान्य विकास और उसके महत्व पर चर्चा की गयी है । विकास के वर्धन के लिए और मौजूदा समस्याओं के लिए मध्यस्थकर्ता को निर्धारित किया गया है।

*- डॉ.अमर ज्योति पर्शा*
*- एन.सी. श्रीनिवास*
*- आर.सी.नितनवरे*

# भूमिका

अक्षमता के क्षेत्र में प्रारंभिक मध्यस्थता से तात्पर्य है बहुत ही छोटे शिशुओं और बच्चों जो जोखिम में हैं या जिनमें विकासीय देरियाँ या अक्षमताएँ हैं उन्हें मार्गदर्शन, समर्थन देना और मध्यस्थता योजनाओं का कार्यान्वयन करना है । हालाँकि हमारे देश में कुछ दशकों से सेवा अभिमुख और समर्थित कार्मिकों द्वारा प्रारंभिक मध्यस्थता सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं, फिर भी, विश्वस्तरीय और गुणता युक्त सेवाओं की कमी है। कुछ ही ऐसे व्यावसायिक हैं जिनके पास अपने स्वयं की विशिष्ट व्यावसायिक क्षेत्र की सीमित विशेषज्ञता है।

मानसिक मंदन और संज्ञान कमियों के क्षेत्र में प्रारंभिक मध्यस्थता मिश्रित है क्योंकि, संज्ञान का विकास और बुद्धिमत्ता के उद्भव में मोटर, वाणी, भाषा, संप्रेषण, संवेदी प्रणालियाँ (दृष्टि, श्रवणीय आदि) और सामाजीकरण जैसे सभी अन्य विकासीय क्षेत्रों के योगदान हैं । परिवार, मकान, पर्यावरण, सामाजिक-आर्थिक पहलू, संस्कृति और विश्वास जैसे समाजी-मनोवैज्ञानिक पहलुओं का बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव होता है । अत:, प्रारंभिक मध्यस्थता के क्षेत्र को व्यावसायिक और तकनीकी निवेश की अर्थात् विभिन्न व्यावसायिकों जैसे चिकित्सीय व्यावसायिकों, चिकित्सकों, भौतिकचिकित्सकों, पेशेवर चिकित्सकों, वाणी चिकित्सकों और श्रवण विशेषज्ञों, बाल विकास विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नर्सिंग स्टाफ और कई अन्य लोगों की, आवश्यकता होती है ।

**लक्ष्य जनसंख्या :** लक्ष्य जनसंख्या में शिशु और बच्चे शामिल हैं जो जोखिम में हैं या जो विकासीय विलंबों या अक्षमताओं से ग्रस्त हैं । इस वर्ग मे कई प्रकार के प्रस्तुतीकरण, नैदानिक लक्षण, रोग निर्धारण, विकलांगताएँ, क्रियात्मक स्तर, संबंधित स्थितियाँ, समस्याएँ, प्रगति, पूर्वानुमान और परिणाम जैसे अति उच्च पंचमेल वर्ग के बच्चों का समूह होता है। अत: उनकी प्रारंभिक मध्यस्थताओं की आवश्यकताओ में भी तदनुसार अंतर होंगे । प्रारंभिक मध्यस्थताओं को पवित्र अभिगम की आवश्यकता होती है और इसलिए विशेषज्ञों और व्यावसायिकों का समागमन आवश्यक होता है ।

इस क्षेत्र के व्यावसायिक और उच्च विशिष्ट सेवाएँ केवल शीर्ष संस्थानों और शहरी विशिष्ट केन्द्रो में ही उपलब्ध हैं । हमारे देश की 70% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है । ऐसे परिदृश्य में अधिकांश लक्ष्य आबादी को ये सेवाएँ प्राप्त नहीं हैं, जहाँ उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और उच्च प्राथमिकता का है । इन सब पहलुओं पर विचार करने और योजना बनाने और प्रारंभिक मध्यस्थता कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करना एक बड़ी चुनौती है ।

**पाठ्यक्रम :** इस क्षेत्र में कई प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं जिनके लक्ष्य विभिन्न हैं जैसे - बच्चा, परिवार घर आदि । बच्चा मध्यस्थता और सीख का केन्द्र बिंदु है । मूल रूप से सभी मध्यस्थताओं का उद्देश्य बच्चे के विकास को बढ़ाना, नये कौशलों को हासिल करवाना, स्वतंत्र रूप से कार्य करना और द्वितीयक विकलाँगताओं की रोकथाम करना है ।

पत्येक पाठ्यक्रम में वह सब कुछ दिया गया है जिसे बच्चे को सीखना चाहिए और उसे अत्यंत समुचित ढंग से करना होगा । पाठ्यक्रम की योजना बनाते समय ध्यान चाहिए कि हर व्यक्तिगत बच्चे में चारित्रिकता लक्षणों, विकास और संबंधित समस्याओं में अंतर होता है । अत:, मध्यस्थता योजना वैयक्तिक है तथा बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार संशोधनों और अनुकूलनों का प्रावधान भी है ।

पाठ्यक्रम अंतिम उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग होता है, व्यावसायिकगण या गैर-व्यावसायिकगण, शीर्ष स्तरीय, मध्यवर्तीयता तृणमूल कार्यकर्ताओं और अभिभावकों के अनुरूप है । यह उपयोग करने के स्थान पर आधारित है । उदा. गृह-सेटिंग या केन्द्र में, ग्रामीण या शहरी इलाकों पर यह आधारित होता है । पाठ्यक्रम को अति उच्च संरचनात्मक नहीं होनी चाहिए और इसके लचीलेपन की मात्रा भी आवश्यक हो ।

प्रारंभिक मध्यस्थता के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामान्य बच्चे के विकास और साधारणता से व्यतिक्रमों के बारे में मौलिक सूचना जानें । पाठ्यक्रम में बाल विकास के क्षेत्रों जैसे मोटर, संज्ञान, वाणी, भाषा, और संप्रेषण संवेदी विकास और सामाजीकरण और खेल को आवरित करे । विकास के विभिन्न क्षेत्रों पर सुविधा और बाल विकास को आसानी से संभालने के लिए अलग से विचार किया जाए परंतु क्षेत्रों के भीतर निहित अंत:निर्भरता को भलीभांति समझकर उसका अनुपालन किया जाना चाहिए।

आधारिक स्तर के कार्यकर्ताओं और परि भ्रमण अध्यापकों द्वारा उपयोग के लिए कई पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इनमें से कई मध्यस्थताओं को आसानी से समझने और उन्हें प्रदान करने के लिए अनुदेशात्मक मैन्युअल हैं। वे अक्सर जोखिम में पड़े बच्चों की या जो माइल्ड से मोडरेट विकासीय देरियों से ग्रस्त हैं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए हैं। अधिकांश में तो अनुकूलताएँ नहीं हैं और उनका लचीलापन भी सीमित है। चिकित्सीय मध्यस्थताओं की मौलिकताओं को न्यायपूर्वक हटा दिया गया है। आधारिक स्तर के कार्यकर्ता इन अनुदेशों को समुचित प्रशिक्षण के बाद देखभालकर्ताओं को सरलतापूर्वक अंतरित कर पाएँगे।

**अंतर विषयक पहुँच :** सेवाओं की गुणता में वृद्धि करने और उन्हें उच्चतर स्तर तक ले जाने के उद्देश्य से व्यावसायिक सेवाओं की अत्यंत आवश्यकता है । चूँकि, प्रारंभिक मध्यस्थता के क्षेत्र को विभिन्न क्षेत्रों से व्यावसायिक निवेश की आवश्यकता है, बहुविषयक पहुँच को नियम की तरह माना गया है। फिर भी, यह पहुँच अभिगम्यता, एक ही छत के नीचे सेवाएँ प्रदान करना सुनिश्चित नहीं करती और न सेवाएँ ही प्रभावशाली होती हैं। अत:, सबसे अधिक बहुविषयक पहुँच से अंतरविषयक पहुँच वांछित पहुँच में बदलना है। यहाँ बहुविषयक टीम का सदस्य या एक व्यावसायिक महत्वपूर्ण मध्यस्थता निवेश लक्ष्यों, तकनीकियों और भिन्न व्यावसायिकों और विशेषज्ञों की निष्पदान की पद्धति से, बच्चे को मध्यस्थता प्रदान करने की जिम्मेदारी लेता है। यह पहुँच लागतों को घटाती है और बच्चे को, बिना समय गँवाये और सीखने की क्रान्तिक अवधि को बिना खोये, मौलिक मध्यस्थताएँ प्रदान करती हैं जबकि, बच्चे व्यावसायिकों की मध्यस्थता की प्रतीक्षा करते रहते हैं । अत: अंतरविषयक पहुँच अभिगम्य, स्वीकार्य और लागत प्रभावी है ।

**स्थल :** प्रारंभिक मध्यस्थता की सेवाएँ अस्पतालों, शिशु चिकित्सालयों, बाल मार्गदर्शन चिकित्सालयों, पुनर्वास संस्थानों और केन्द्रों, विशेष प्रारंभिक मध्यस्थता केन्द्रों आदि में, प्रदान की जा सकती हैं।

विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिशुओं और बच्चों को प्रारंभिक मध्यस्थता प्रदान करने के लिए पहले ही से मौजूद नेटवर्किंग प्रणाली और स्वास्थ्य सेवाओं, महिला और शिशु कल्याण सेवाओं और अक्षमता, पुनर्वास सेवाओं से लैस स्थलों का उपयोग करना सुविधाजनक और लागत प्रभावी है ।

**कार्मिक :** माता-पिता और परिवार सबसे पहले अपने बच्चे की तमाम समस्याओं और चिंताओं के निवारण के लिए चिकित्सीय व्यावसायिकों और चिकित्सीय डाक्टरों के पास पहुँचते हैं क्योंकि वे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और जिला केन्द्रों में उपलब्ध रहते हैं, प्रारंभिक मध्यस्थता प्रदायकों के रूप में उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए वे आदर्श व्यक्ति हैं। अन्य व्यावसायिकों, और भौतिक चिकित्सक, पेशेवर चिकित्सक, वाणी भाषा चिकित्सक, श्रवण विशेषज्ञ, पुनर्वास व्यावसायिक , शिशु विकास विशेषज्ञ और बाल-विकास की मौलिक जानकारी रखनेवाले अर्हता प्राप्त नर्सिंग स्टाफ आदि सभी प्रारंभिक मध्यस्थता सेवाएँ प्रदायकों के रूप में पात्र हैं । इनमें से कुछ जिला केन्द्रों में उपलब्ध हैं परंतु सीमित रूप में । उन्हें प्रारंभिक सेवा प्रदायकों के रूप में तैयार करने के लिए उन्हें आगे प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी व्यावसायिक पृष्ठभूमि और ज्ञान का उपयोग किया जा सकता है ।

**प्रशिक्षण :** इन व्यावसायिकों को प्रारंभिक मध्यस्थता सेवा प्रदायकों की तरह लक्षित करने के लिए उन्हें प्रारंभिक मध्यस्थता पर अभिमुखीकरण का लघुअवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम देना होगा और उन्हें ऐसा पाठ्यक्रम प्रदान करना होगा जो उनके सेवा-प्रावधान में उनके कौशलों को बढ़ाए । इसीलिए, उनके प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को नजर में रखकर ही यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है । फिर भी, इन कार्मिकों को चाहिए कि वे विशेषज्ञों से परामर्श लें और जब कभी या जहाँ कहीं आवश्यक हो उनका मार्गदर्शन प्राप्त करे । यह मैन्युअल मध्यस्थता प्रतिपादन में सहायता कर सकता है और सेवा प्रदाताओं को मार्गदर्शन देने के लिए तत्काल संदर्भ के रूप में भी सहायता कर सकता है ।

# वाणी, भाषा और संप्रेषण

# वाणी, भाषा तथा संप्रेषण

मनुष्य एक दूसरे से बात-चीत करने के लिये वाणी का उपयोग करते हैं । वाणी विलक्षण तथा मानव के लिये मूलभूत वस्तु है । यह अत्यधिक प्राथमिक है । अपने विचारों को आपस में बॉटने का एक मुख्य साधन है । बातचीत की प्रक्रिया बहुत कठिन, तथा, अत्यन्त समन्वयकारी, संक्लिष्ट तथा समन्वित प्रक्रिया हैं, जिसमें मानव शरीर के कई तन्त्रों का आवेष्टन है । इन प्रणालियों का समन्वित न होना, वाणी में बाधक सिद्ध हो सकता है ।

**परिभाषा :-** बातचीत, भाषा का श्रवणीय प्रकटीकरण है, भाषा की उत्पत्ति ऐसा जटिल प्रेरक है जिसमें अनेक उच्चारण अवयवों का उपयोग होता है।

## वाणी तथा भाषा के सामान्य विकास की पूर्वापेक्षा

बात-चीत की प्रक्रिया के लिये यानी, भाषा सीखने तथा उपयोग करने के लिये व्यक्ति को निम्न पूर्वापेक्षाओं की आवश्यकता होती है ।

- **साधारण तंत्रिका गति परिपक्वता : -** सीएनएस की परिपक्वता केवल सूक्ष्म मोटर कौशलों की शिक्षा ही नहीं बल्कि वाणी को समझने तथा उत्पन्न करने के लिये भी पूर्वापेक्षित है । तीन माह की आयु का शिशु ध्वनि के स्रोत का स्थानीकरण नहीं कर सकता। फिर भी वही शिशु जब 6 माह की आयु का हो जाता है तब वह ध्वनि के स्रोत का स्थानीकरण करता है। यह प्रणाली परिपक्वता के कारण ही संभव है।

- **संर्वधन क्षमताएँ :-** मौखिक तथा लिखित भाषा के सीखने तथा संप्रेषण के लिये पर्याप्त श्रवण तथा दृष्टि आवश्यक हैं । श्रवण-शक्ति से ही, वाणी अर्जित की जाती है। अत: श्रवण-शक्ति की क्षति जिन बच्चों में होती है, उनकी वाणी तथा भाषा के विकास में विलम्ब होता है।

- **चालक क्षमता :-** वाणी की ध्वनि उत्पत्ति की क्षमता से लेकर हस्त-चालित, हस्त-संकेतों को संप्रेषण का माध्यम बनाना आदि चालक क्षमताओं के उदाहरण हैं । भाषा की उत्पत्ति ऐसा जटिल प्रेरक है जिसमें अनेक उच्चारण आवयवों का उपयोग होता है।

- **वाणी उत्पत्ति प्रक्रिया :-** वाणी की उत्पत्ति करने के लिये, वाणी का परिपूर्ण ढॉचा तथा वाणी-उत्पादन प्रक्रिया की क्रियात्मकता का होना आवश्यक है। यदि अधर(होंठ ), जिह्वा तथा गले जैसे ध्वनि प्रक्रिया के ढॉचे प्रभावित होते हैं, तब वाणी की समस्याओं के साथ-साथ खाना खिलाते समय, उत्पन्न होने वाली समस्याएँ, अनुनासिकता तथा मुँह से लार टपकने जैसी समस्या भी उत्पन्न हो सकती है ।

- **साधारण बुद्धिमत्ता तथा संज्ञान क्षमता का विकास:-** भाषा सीखने के लिए शिशु में चिह्नों का उपयोग करने की साधारण बुद्धिमत्ता का होना आवश्यक है । चिह्नों का ठीक ढंग से उपयोग करने के लिये उन चिह्नों को देखकर, पहचान कर, उनको अपनाकर तथा साधारणीकरण करके अपने मस्तिष्क में संजोकर रखने की आवश्यकता होती है । भाषा का विकास, संज्ञान की शक्ति के विकास के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है ।

- **प्रेरणा देनेवाला वातावरण:-** सामाजिक परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में ही भाषा को सीखा जा सकता है । व्यक्ति और माहौल ही भाषा तथा सम्प्रेषण के स्रोत हैं । भाषा के सीखने को प्रेरित करने के लिये तीन वातावरणीय पक्ष महत्वपूर्ण है ।

अ) बात करने के प्रयत्नों को पुरस्कृत करने वाले, माता-पिता के संवेदात्मक तथा स्नेहशील सम्बन्ध।
आ) ऐसा प्रभावी आदर्श जो बहुत ही सामान्य परन्तु श्रेष्ठ भाषा पद्धति का उपयोग करता हो ।
इ) शिशु को संप्रेषण का मौका देना या कुछ न कुछ बात करने के लिये शिशु को सहायता करना ।

- **अभिव्यक्ति/संप्रेषण के साधन :-** शिशु को अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिये मार्ग सुगम करना चाहिए । यह भाषण द्वारा या फिर संकेतों की भाषा द्वारा या मूक भाषा द्वारा हो सकता है।

## वाणी ध्वनि से संबन्धित उपकरण

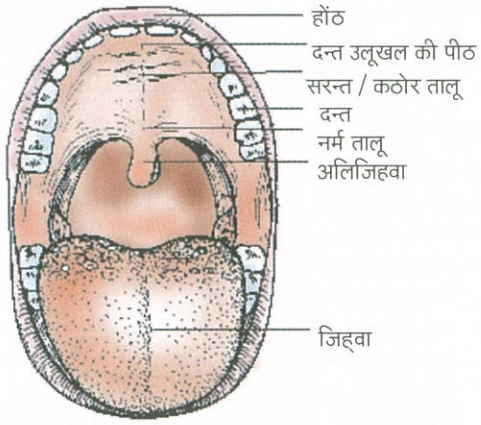


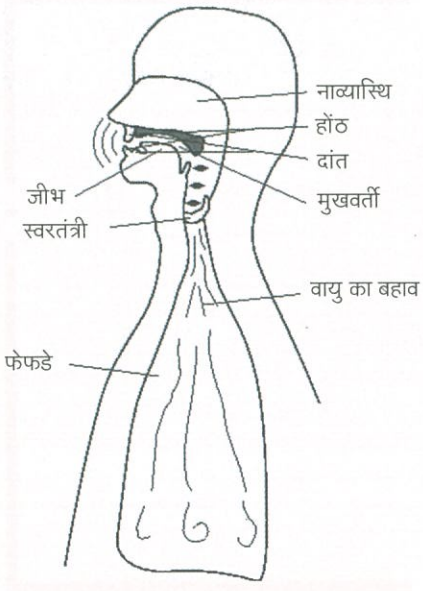


## वाणी यांत्रिकता की संरचना और कार्य

| संरचना | दिखावट | कार्य |
|---|---|---|
| होंठ | प्रतिसम | उभार, सिकुडन |
| जीभ | प्रतिसम | उभार, सिकुडन, प्रशासन, ऊँचाई |
| दाँत | सामान्य काट | विशिष्ट वाणी ध्वनियों की उत्पत्ति में सहायक होती है |
| कठोर तालु | सामान्य कमान | विशिष्ट वाणी ध्वनियों की उत्पत्ति में सहायक होता है। |
| नम्र तालु | सामान्य | समुचित अनुनासिकता प्रदान करती है । |
| जबड़ा | प्रतिसम | मुँह को बंद करने के लिए उठाने, खोलने के लिए नीचे करने । |

# भाषा

**परिभाषा :-** अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किसी व्यक्ति-समूह द्वारा उपयोग किये जाने वाले विवेचक चिह्नों का समूह । संप्रेषण के लिए भाषा अति मुख्य साधन है।

## भाषा के प्रमुख अंग

**स्वरूप :-** भाषा के ढाँचे से सम्बन्धित है, जैसे कि शब्दों तथा वाक्यों और व्याकरण के सिध्दान्तों के आधार पर कैसे निर्माण किया जाए ।

**विषयवस्तु :-** भाषा के अर्थ से सम्बन्धित है । जैसे कि क्या कहा जाए या संदेश की विषय-वस्तु क्या है ?

**उपयोगिता :-** भाषा की उपयोगिता से सम्बन्धित है । जैसे कहाँ, कब, किससे तथा किस उद्देश्य के लिए भाषा का उपयोग हो रहा है ।

## साधारण वाणी तथा भाषा का विकास

जीवन की प्रारम्भिक दशा से ही बल्कि, जन्मत: ही, भाषा सीखने की प्रकिया आरम्भ हो जाती है, जो आत्मवाचक रोने, तुतलाने और अन्तत: भाषा को संम्पूर्ण रूप से सीखने जैसे पड़ावों से गुजरती हुई आगे बढ़ती है ।

**भाषा का विकास :-** ध्वनिलेखन, आकृति-विज्ञान, वाक्य-रचना, अर्थविज्ञान और व्यवहारिक ये चारों भाषा के मुख्य अंग हैं ।

**ध्वनि लेखन :-** भाषा के वाणी ध्वनियों के उपयोग के लिए नियमों का अध्ययन करता है।

**ध्वनि शास्त्र:-** विविध प्रकार के उच्चारणों को जोड़कर, अर्थपूर्ण शब्दों का निर्माण करने की प्रक्रिया ही ध्वनिशास्त्र है ।

**वाक्य-रचना:-**ये भाषा के व्याकरण-सम्मत पहलू से सम्बन्धित और शब्द-क्रम संज्ञारूप या क्रियारूप तथा शब्दों के बीच के सम्बन्ध को सूचित करता है । वाक्य संरचना तथा वाक्यों के ज्ञान से सम्बन्धित उन नियमों का उल्लेख करता है, जिसका वक्ता पालन करता है ।

**अर्थविज्ञान:-** भाषा के अर्थ तथा उपार्जन के उद्‌गम का अध्ययन ही अर्थविज्ञान है । यह वास्तविक दुनिया की वस्तुओं तथा घटनाओं के ज्ञान तथा भाषा के बीच के सम्बन्ध से जुड़ा हुआ विज्ञान है।

**व्यावहारिक** भाषा के उपयोग के अध्ययन को व्यावहारिक कहते हैं । ये ऐसे नियमों का समूह है जो यह निर्धारित करता है कि कौन, क्या और किससे और किन परिस्थितियों में कुछ कह रहा है ।

**ग्रहणशील भाषा:-** मौखिक तथा लिखित / लिपिबद्‌ध शब्दों के चिह्‌नों की जानकारी यानी व्यक्ति द्वारा किसी को देखकर या उसकी बातें सुनकर भावी शब्द तथा उसके अर्थ को उस व्यक्ति से जोड़ना ।

**अभिव्यंजक भाषा:-** श्रोता को विविध प्रकार के अर्थ तथा आवश्यकताओं को वाणी द्वारा सूचित करने, लिपि या चिह्‌नों के उपयोग को अभिव्यंजक भाषा कहते हैं ।

**मस्तिष्क में भाषा-क्षेत्र:-** मानव के मस्तिष्क के बाएँ अर्धगोल में तीन प्रमुख भाषा क्षेत्र होते हैं ।

- **ब्रोका का क्षेत्र:-** यह मस्तिष्क के दाएँ अग्रभाग में होता है । इस क्षेत्र के क्षतिग्रस्त होने के फलस्वरूप असामान्य ब्रोधा वाचापात्त लक्षण होता है, जहाँ अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है।
- **वेर्निकेस क्षेत्र:-** यह दाहिनी कनपटी के पिण्डक के पिछले भागों में स्थित होता है । इस क्षेत्र की क्षति से ऐसे वाचापात को उत्पन्न करता है, जो अस्थिर, तथा निरर्थक तथा समझ में न आने वाली वाणी से ओत-प्रोत होता है।
- **परिशुद्‌ध पूलिका:-** यह उपप्रान्तस्थ तन्तुओं की वह पट्‌टी है जो वेर्निकस क्षेत्र को ब्रोका क्षेत्र से जोड़ता है । ऐसा मरीज़ जिनका चापाकार पूलिका में घाव है, वाचापात चालन जैसे रोग से पीड़ित होता है ।

## संप्रेषण

**परिभाषा:-** सूचना तथा अभिमतों के विनिमय की प्रक्रिया को संप्रेषण कहते हैं । यह ऐसी क्रियात्मक प्रक्रिया है जिसमें अभीष्ट संदेशों का कूटीकरण, संप्रेषण, तथा कूटानुवाद का आवेष्टन होता है।

**संप्रेषण का विकास:-** शिशु में जन्मत: ही संप्रेषण विद्यमान होता हुआ प्रतीत होता है । जन्म के कुछ ही मिनटों में, शिशु अपना शरीर मानव के स्वर के साथ समकालिकता के साथ घूमता है । शिशु की देखभाल करने वाले संरक्षक शिशुके प्रारम्भिक प्रतिवर्ती क्रिया की प्रतिक्रिया करते हैं । शिशु अपने अभीष्ट की अभिव्यक्ति करना सीखते हैं । शिशु अभिव्यक्तिके लिये उपयोग की जाने वाली टकटकी के विविध नमूनों को सीखते हैं । प्रारम्भिक संप्रेषण के लिये चेहरे तथा सिर के हिलने को भी शिशु सीखता है। प्रारंम्भिक संप्रेषण के लिये चेहरे तथा सिर की आकृतियाँ महत्वपूर्ण हैं, क्योकि, ये आकृतियाँ परिपक्वता में अन्यों से अधिक अग्रवर्ती होती हैं । यही विवेचनात्मक सामर्थ्य तथा वरीयताएँ शिशु के प्रारम्भिक अभिव्यक्ति का आधार- स्तम्भ हैं ।

## संप्रेषण तथा भाषा के कार्य

| क्रम | संप्रेषण के कार्य | अर्थ | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| 1 | सहायक | आवश्यकताओं की पूर्ति | मुझे पानी चाहिए |
| 2 | नियंत्रक | अन्यों के व्यवहार को नियंत्रित करना, सुधारना | झूठ मत बोलो |
| 3 | अन्योन्य क्रियाशीलता | दिनचर्या के बारे में बातचीत करना तथा अन्य व्यक्तियों के साथ मेलजोल बढाना | नमस्कार, धन्यवाद |
| 4 | व्यक्तिगत | स्वयं के बारे में जानकारी रखना तथा अपने व्यवहार को नियंत्रित करना | मुझे वह काम नहीं करना चाहिए |
| 5 | स्वत: शोध | जानकारी तलाशना विचार/धारणा का निर्माण, विचारों तथा ज्ञान का विकास | हमारे नये प्रधान मंत्री कौन हैं? |
| 6 | कल्पनाशक्ति संपन्न | कल्पना में आवेष्टित होना स्वप्नचित्र, टिप्पणी करना या भाषा के बारे में सूचना | तुम फूल की तरह हँसते हो |

**संप्रेषण की पद्धतियाँ :** संप्रेषण की विविध पद्धतियाँ होती हैं । निम्नलिखित मैट्रेक्स (उत्पत्ति स्थान) संप्रेषण की विभिन्न पद्धतियों को सोदाहरण समझने में सहायक होता है ।

| | **शाब्दिक** | **अशाब्दिक** |
|---|---|---|
| **मौखिक** | मनुष्य की वाणी | रोता है<br>चिल्लाता है, कराहता है । |
| **अमौखिक** | लिखित,<br>इंगित भाषा | इशारे<br>चित्र |

- **मौखिक संप्रेषण** :- मौखिक उपकरण (वाणी प्रक्रिया) का उपयोग करके संप्रेषण करना जैसे: मनुष्य की वाणी, शोधन इत्यादि ।
- **अमौखिक संप्रेषण:**- ऐसा संप्रेषण जिसमें स्वर उपकरण शामिल नहीं होता । उदाहरण: लिखना, इशारे आदि ।
- **शाब्दिक संप्रेषण:**- संप्रेषण जिसमें भाषायी संरचना हो उदाहरण: मनुष्य की वाणी, संकेत भाषा ।
- **अशाब्दिक संप्रेषण**:- ऐसा संप्रेषण जिसकी संरचना भाषा-विज्ञान जैसी हो । उदाहरणार्थ मनुष्य की वाणी तथा इंगित भाषा जिसकी बनावट अवाचिक संप्रेषण जैसी न हो उदा: कराह या इशारे ।

संप्रेषण, भाषा तथा वाणी ये तीनों परस्पर आपस में जुड़े हुए होते हैं । संप्रेषण सिर्फ भाषा का तथा वाणी का प्रयोग ही नहीं करता बल्कि उससे अधिक है । भाषा का आवेष्टन, वाणी से कहीं अधिक है । भाषा के बिना वाणी अर्थरहित है ।

- **प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति (आयु: 0-3 वर्ष) :-** नवजात शिशु का अधिकतम व्यवहार प्रतिक्रियात्मक होता है तथा उसकी इच्छा शक्ति/संकल्प शक्ति तथा नियंत्रण के बाहर होते हैं । प्रथम तिमाही शिशु के मौखिक व्यवहार सीमित रंगपटल होता है । नवजात शिशु द्वारा किये गये सबसे साधारण आवाजें हैं - रोना तथा सांत्वना शब्द ।

अ) **रोने की आवाजें :-** प्रारंभिक रोदन साधारण तथा असुविधा दुखी होने पर होनेवाली आवाजें हैं तथा जन्म के बाद पहले माह तक रोदन की शैली बदल जाती है । जब शिशु 2 महीने की आयु का हो जाता है । तब उसके माता-पिता, उस शिशु के विभिन्न विशिष्ट रोदन शैलियों से पहचान सकते हैं । उदाहरणार्थ: गुस्सा, सुख, दर्द तथा भूख । रोदन के समय शिशु अपनी स्वर-पेटिका, मुँह तथा कान के बीच में पुर्निवेशन चक्कर बनाने के अतिरिक्त शिशु आवश्यक मोटर समन्वयन का अभ्यास करता है । रोदन, खासकर जब अवकलन किया जाता है तब माता-पिता तथा शिशु के बीच एक आदिम संप्रेषण कड़ी की स्थापना हो जाती है ।

आ) **सांत्वना ध्वनियाँ :-** गुड़गड़ाहट, आह तथा घुरघुराहट जैसी प्रतिक्रियात्मक ध्वनियों, को सांत्वना ध्वनियों का नाम दिया गया है । ऐसा, साधारणत: कष्ट/पीड़ा से उपशमन के समय या पश्चात् अबतक शिशु को अपने मुँह को खोलने तथा बंद करने के लिए आवश्यक मॉसपेशियों के नियंत्रण का अभ्यास हो चुका होता है । ऑखों तथा मुस्कुराहट जैसी प्रौढ़ क्रियाओं का अनुकरण करके शिशु अपने सामाजिक ज्ञान तथा दृष्टि-खोज के लक्षण दिखलाता है ।

- **तुतलाना (आयु: 4-6 महीने):-** ये सारे मानव-शिशुओं में सार्वजनिक प्रक्रिया है । इसमें एक ही नि:श्वास में विभिन्न ध्वनियों की लड़ी बनाकर आपस में जोड़ने का वैशिष्टय होता है । इन टूटे-फुटे अक्षरों का कोई अर्थ नहीं निकलता । यह क्रिया मौखिक खेल है । शिशु अपनी जीभ, होठों से स्वतंत्र रूप से खेलता हुआ प्रतीत होता है। स्नायु की मॉसपेशियों का नियंत्रण, मुखविवर के पीछे से सामने तक होता है ।

- **सामाजिक तुतलाहट (आयु: 6-8 महीने):-** 6 माह की आयु से ही तुतलाहट एक हथियार के रूप में काम आती हैं जिसमें शिशु तुतलाहट को अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा मॉग का व्यक्तिकरण करने के लिए, हथियार के रूप में उपयोग करता है। यह अवस्था अक्षरों को दोहराने या कण्ठ से अभिनय / बदलाव द्वारा दुगुनी ध्वनि को उत्पन्न करने से अभिलक्षित है । उदाहरणार्थ: दादादाहा

- **सुर का बदलाव (आयु: 8-10 महीने):-** शिशु सुर / कंठ का ऐसा बदलाव करता है कि उसकी आवाजें प्रश्नों तथा आदेशों जैसी प्रतीत होती है। निजी सुर-बदलाव तथा सामाजिक सुर-बदलाव जारी रहता है । शिशु अपने कंठ के व्यायाम से ऐसा आवश्यक समन्वय करता है जो अर्थपूर्ण बाचचीत के लिए जरूरी है । शिशु अपने माता-पिता की बातचीत का उत्तर देता है ।

- **प्रथम शब्द (आयु: 1-1½ वर्ष):-** 1 से 1½ वर्ष की आयु तक अत्यधिक बच्चे, अपने जीवन के पहले शब्द का उच्चारण करने से पहले, ऐसे विभिन्न स्वनिर्मित शब्दों का उपयोग करते हैं । जिसे इडियोमार्फ कहा जाता है । प्रथम अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति/ इकहरे शब्द के होते हैं । ये शब्द अकसर दुगुने होते है ।
उदाहरणार्थ: डैडी के बजाय बाबा शब्द का प्रयोग, जो उसके पूर्व तुतलाहट के प्रभाव को दर्शाता है ।

- **दोहरे शब्दों की पदावली (आयु: 18 महीने):** 18 माह की आयु में दो शब्दों को जोड़ना शिशु के लिए साधारण बात है । प्रारंभिक दो शब्दों को जोड़ के सम्मिश्रण के समय, बच्चें अधिकतर वस्तुओं के बारे में बात करते हैं । वे उन वस्तुओं की ओर इंगित करके, उनके नाम से पुकार कर तथा उन वस्तुओं के रहने के स्थान तथा उनका वर्णन करते हैं । कुछ ऐसे ही सामान्य संयोग शब्द के उदाहरण हैं । (1) कर्ता+क्रिया - मम्मी आती या (2) कर्ता+क्रिया - दूध पियो ।

- **वाक्य संरचना करना:-** लगभग दो वर्ष की आयु के बच्चे ऐसे वाक्यों का प्रयोग करते है जो लंबाई 3-4 शब्दों के बराबर होते हैं और ऐसे शब्दों को जोड़कर विभिन्न प्रकार के व्याकरण युक्त वाक्य, प्रश्न, आदेश तथा कथन को गठन करते हैं । बच्चा 2½ से 3 वर्ष की आयु में ही इनकार / नकारात्मक तथा प्रश्नों के विविध रूपों का उपयोग करता है । 2½ से 3 वर्ष की आयु में अनुभव की वृद्धि होने के कारण, उसका शब्द भण्डार बढ जाता है साधारण वाक्यों के स्तर से ऊपर उठकर धीरे-धीरे जटिल वाक्यों का प्रयोग करता है ।

## वाणी तथा भाषा के सीखने का क्रम:

**भाषा**

- पहले समझना तथा पश्चात् अभिव्यक्त करना ।
- पहले बार-बार उपयोग की जानेवाली वाणी की ध्वनियों तथा शब्दों के पश्चात् बिरले उपयोग में आनेवाले शब्दों की समझ तथा अभिव्यक्ति ।
- पहले सामान्य शब्दों को तथा पश्चात् कठिन शब्दों की समझ तथा अभिव्यक्ति ।

**सुस्पष्टता**

- वाणी की ध्वनियों को क्रम से सुस्पष्ट रूप से उच्चरित करना ।
- पहले दोनों होठों से उच्चरित किये जाने वाली ध्वनियों जैसे: प, ब, म, आदि का सुस्पष्ट उच्चारण ।

**धाराप्रवाह उच्चारण:**

- 5 वर्ष की आयु तक साधारणतया, धाराप्रवाह रूप से बातचीत करने में अड़चन होती है ।
- आरंभ में बातचीत करने की गति धीमी होती है तथा जैसे-जैसे ज्ञान में वृद्धि होती है बातचीत की गति बढ़ती है ।

**स्वर-ध्वनि**

प्रारंभ में शिशु की वाणी ऊँचे स्वर में होती है तथा जैसे-जैसे शिशु की आयु बढ़ती जाती है, उसका स्वर बदलने लगता है। 12 वर्ष की आयु से ही नर तथा मादा दोनों शिशुओं में तीव्र बदलाव आता हैं ।

## वाणी तथा भाषा की समस्याएँ:

- आवश्यक चीजों के लिए शिशु का बार-बार रोना तथा चीखना ।
- बोलते समय असंपूर्ण विशुद्धता ।
- 6 माह की आयु तक बड़बड़ाता, तुतलाना नहीं ।
- श्रवण-शक्ति कम होने के कारण शिशु बड़बड़ाना / तुतलाना बंद कर देता है ।
- शिशु का उच्चारण सीमित हो जाता है या वैविध्य की कमी हो जाती है ।
- भाषा तथा अभिव्यक्ति में शिशु की आयु के अनुरूप अपर्याप्तता होती है ।
- तालू में दरार या नासूर ।
- बंद-जीभ: (जीभ का बंद रहना)
- जिह्वा पर दबाव
- लार टपकना
- माइक्रोग्लोसिया
- वाणी के उपकरण के आकार तथा बनावट में प्रत्यक्ष अनियमितता
- फूकने में अशक्तता, गालों में फुलाव तथा चुंबन के लिए होठों का सिकुड़ना ।
- जीभ, जबड़ा तथा होठों के हिलने की क्षमता में कमी या सीमा ।
- स्वर की ऊँचाई तथा तीव्रता में असाधारणता अनुपयुक्तता ।
- वाणी की ध्वनियों के अनुकरण की अशक्तता ।
- आँखों से संपर्क की कमी या संपर्क न होना ।
- किसी क्रिया के प्रति ध्यान की कमी ।

## वाणी तथा भाषा संबंधी प्रमुख कौशल

1) विषय - परिज्ञान
2) प्रकटीकरण

# "मध्यस्थता संवेष्टन"

(परिशिष्ट - अ
पर संलग्न परीक्षण-सूची अनुरूप ये संवेष्टन है
मध्यस्थताएँ हरेक मद के लिए है, जिनका अनुसरण शिशु के द्वारा सामान्य
रूप से विकसित न करने पर किया जा सकता है ।)

आवेष्टित समस्याएँ

मध्यस्थता : मध्यस्थता

दृष्टि क्षति

श्रवण क्षति

# वाणी, भाषा और संप्रेषण

## मद - 1 बोलने वाले के चेहरे की ओर देखता है
### आयु: 0-3 महीने

### सामान्य

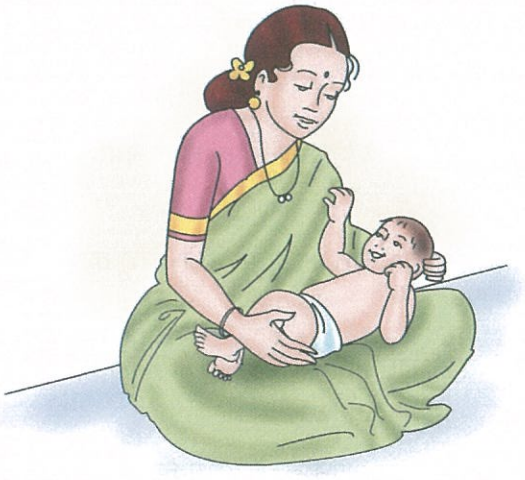

- सामान्यत: बोलने वाले की आवाज सुनते ही, शिशु बोलने वाले के चेहरे की ओर देखते हैं ।
- बोलने वाले के चेहरे, विषमता तथा चेहरे के हाव-भाव की ओर आकर्षित होते हैं ।
- बोलने वाले की ओर देखते हुए शिशु उस की ओर ध्यान देने की कोशिश करता है
- इसके लिए सामान्य दृष्टि तथा श्रवण शक्ति आवश्यक है ।

### महत्व

- यह ध्यान आकर्षण को सूचित करता है । यह सामान्य वाणी तथा भाषा के विकास के लिए पूर्वापेक्षा है ।
- संप्रेषण अभिव्यक्ति के लिए
- अभिव्यक्ति, भावुकता तथा सामाजिक विकास का आधार बनती है ।
- इससे शिशु के आस-पास विद्यमान विविध प्रेरकों के बारे में जानकारी बढ़ती है ।

### मध्यस्थता :

- यह प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला व्यवहार है।
- नवजात शिशु अधिकतम लगभग एक फुट की दूरी तक देख सकता है ।

- शिशु, चेहरों तथा वस्तुओं की ओर इतनी दूरी तक दृष्टि केन्द्रीकृत करते हैं ।
- अपना चेहरा शिशु के चेहरे से, लगभग एक फुट की दूरी पर रखें ।
- शिशु की आँखों में मुस्कुराकर देखते हुए उससे बातचीत करें ।
- शिशु से ऊँची आवाज में धीरे-धीरे बातचीत करें ताकि वह आपके चेहरे की ओर अधिक समय तक देख सकें ।
- इस प्रक्रिया को अधिक दिलचस्प बनाने के लिए अपने मुख के विविध प्रकार के अतिरंजक अभिव्यक्ति हाव-भाव मुद्राओं के साथ-साथ अपनी आवाज में विविधता का उपयोग करें ।
- मुखौटे तथा भारी सजावट गहरा काजल, चमकीले रंग की बिन्दियाँ तथा लिपस्टिक/रंजन-शलाका के उपयोग से शिशु आपके चेहरे को अधिक देर तक देखता है ।
- ध्यान रखिए कि चेहरे पर पर्याप्त प्रकाश पड़े जिससे शिशु को आपका चेहरा ठीक से दिखे ।

### दृष्टि क्षति

- श्रवणीय तथा स्पृश्य [कंपन महसूस करने के लिए बातचीत करते समय गति के लिए होठों तथा गले का स्पर्श करना तथा गले] की अधिक आवश्यकता है ।
- ध्वनि तथा स्वर-शैली में परिवर्तन तथा बातचीत की धीमी गति-शिशु को बोलने वाले की ओर ध्यानाकर्षित करने के लिए आवश्यक है ।
- शिशु की देखभालकर्ता के चेहरे व आँखों को गहरे मेकअप / सजावट तथा भड़कीले रंग की बिंदी तथा लिपस्टिक से सजाएँ ।
- शिशु के ध्यान को आकर्षित करने के लिए अपने चेहरे पर प्रकाश को केन्द्रित करें ।

### श्रवण क्षति:

- चेहरे पर अधिक हाव-भाव बनाएँ, होठों की गति भी बढ़ाएँ ।

# मद - 2 मानव की आवाज को सुनकर रोना बंद करता है आयु: 0-3 महीने

## सामान्य

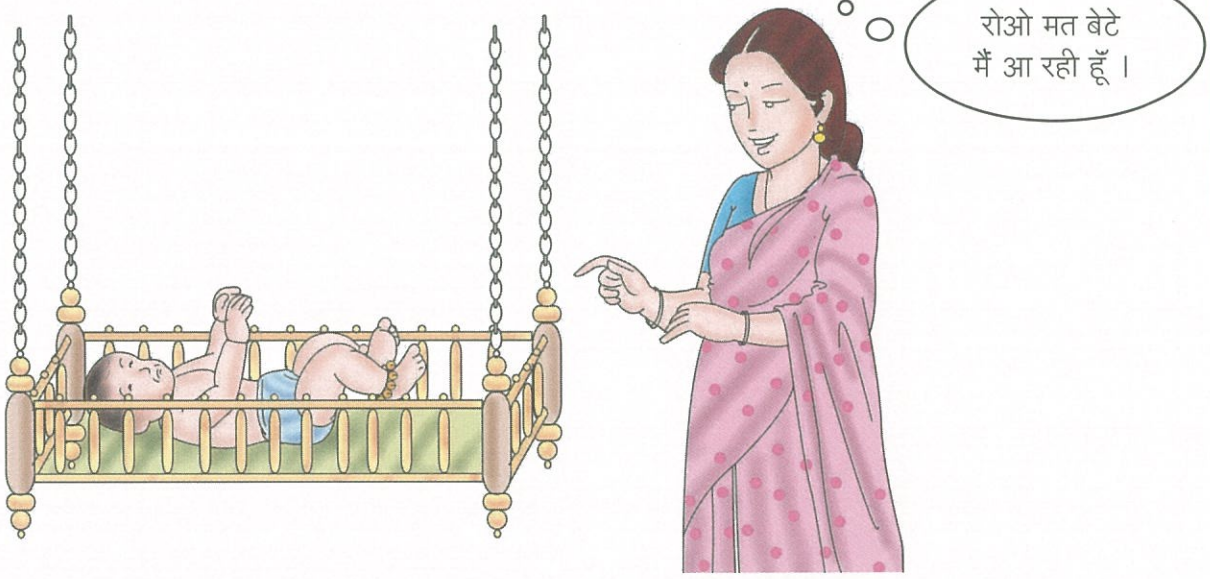


- नवजात शिशु रोता है, तो उसका अर्थ हे यातो उसको भूख लगी है, डायपर बदलने की जरूरत है कपडे गीले हो गये हो या कोई असुविधा हो इसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।
- वे अपनी आवश्यकताओं को रोकर अभिव्यक्त करते हैं ।
- बच्चे के परिचारक या अभिभावक बच्चे के मनोभावों को समझ कर बच्चे से बातचीत करके तुरंत उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं ।
- अपनी अलग-अलग आवश्यकताओं के लिए शिशु, धीरे-धीरे अलग-अलग तरीकों से रोता है ।

## महत्व

- श्रोता के ध्यान को आकर्षित करने का एक महत्वपूर्ण सूचक है जो संप्रेषण के लिए आवश्यक है ।
- सामान्य वाणी तथा भाषा विकास के लिये श्रोता के ध्यानाकर्षण एक पूर्वापेक्षा है ।
- देखभालकर्ता तथा शिशु के बीच में भावुकतापूर्ण बंधन को मजबूत करता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु के रोते ही उसकी परिचर्या करें ।
- जब आप शिशु के पास पहुँचने लगेंगे, उससे जोर की आवाज में तथा कोमल वाणी में बातचीत करें ।
- शिशु की परिचर्या करते समय उससे बातचीत जारी रखें ।
- इस तरह शिशु आश्वस्त होता हैं कि वक्ता उसकी आवश्यकता की पूर्तिकर रहा है ।

## दृष्टि क्षति

- श्रवण संबंधी संकेत जहाँ पर देखभाल करनेवालों को जोर से बात करना पड़ता है तथा अपने स्वर के लहजे को बदलना पड़ता है ।
- शिशु को छूकर उसको छाती से लगाने से वह आपकी आवाज सुनते ही रोना बंद करता है ।

## श्रवण क्षति:

- उपयुक्त चेहरे के हाव-भाव का प्रदर्शन करें ।
- वस्तुओं के बारे में बातचीत करते समय उन वस्तुओं को शिशु को दिखलाएँ । जैसे: बोतल, डायपर इत्यादि जिससे आप शिशु की परिचर्या कर रहे हैं ।

# मद - 3 विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं के लिए विभिन्न प्रकार के रोदन आयु: 0-3 महीने

## सामान्य

- मूल रूप से देखा जाए, तो रोना स्पष्ट रूप से एक लयबदध रोदन है जिससे एक आधे सेकंड के लिए निश्ब्द हो जाता है और इस समय (एक आधे सेकंड के लिए) शिशु श्वास लेता है
- यह एक ऐसे संकेत के रूप में प्रकट होता है जिससे ज्ञात होता है कि शिशु असुविधा महसूस कर रहा है। इसे असुविधा जनक रोदन कहा जाता है ।
- दूसरा प्रकार है पीड़ा रोदन जिससे चार सेकंड के लंबे समय तक लगभग चार सेकण्ड श्वास रुकने का अभिलक्षण होता है।
- तीसरा प्रकार है पागलपन की सीमा तक रोना । यह तब होता है जब कोई वस्तु शिशु के हाथ से छीनी जाती है, इसे संघर्ष कोलाहल कहा जाता है ।
- इन सारे प्रकार के रोदनों में ऐसे सुर की रचना होती है जो पहले ऊपर उठती है तथा अंत में नीचे आती है।

## महत्व

(गर्भाशय से बाहर आते ही शिशु को रोना आरंभ करना चाहिए, जिससे यह पता चले कि वह साँस ले रहा है तथा उसके मस्तिष्क की कोशिकाओं को आक्सीजन मिल रहा है। शिशु जब तक गर्भाशय में रहता है, तब तक आक्सीजन की आवश्यकता की पूर्ति नाभिका-रज्जू द्वारा होती है ।)

- ऐसे शिशु जो जन्म लेते ही नहीं रोता है उसके विकास में विलंब या अन्य समस्याएँ उत्पन्न होने का जोखिम रहता है ।
- प्रारंभिक जीवन में रोदन का महत्व इतना स्पष्ट है कि तंत्रिका संबंधी अंक-लेखन शिशु के रोदन की तीव्रता के आधार पर किया जाता है ।

- शिशु द्वारा संप्रेषण के लिए उपयोग की जाने वाले साधन/पद्धति है, रोना ।
- अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देखभालकर्ता के ध्यान को आकर्षित करने के लिये, शिशु आरंभ में रोदन का उपयोग करता है ।
- शिशु के रोदन के कारण को समझने के लिए समय व्यर्थ करने की बजाए, उसकी अंतरीय रोदन, अभिभावक को उसकी आवश्यकता को समझने तथा उसकी पूर्ति करने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

शिशु के रोदन को सावधानी से सुनें और अंदाजा लगाएँ कि आखिर उसके रोदन का क्या कारण, दर्द या पीड़ा हो सकती हैं ।

बडी ऊँची आवाज में रोने का मतलब है उसे दर्द हो रहा है ।

- तब शिशु के शरीर को ऊपर से लेकर नीचे तक जाँचें, यदि उसे कोई चीज चुभ रही है या चोट पहुँच रही है ।
- यह जाँचे कि यदि शिशु का अंगूठा या उंगलियाँ तौलिये के धागे में अटक गया हों या हाथ या पैर झूले में फँस गये हो ।
- यह जाँचें कि शिशु मल या गैस त्याग करना चाहता है ।

बीच-बीच में रुककर ऊँची आवाज तथा कम मात्रा में रोने का अर्थ है कुछ न कुछ असुविधा हो रही है ।

- असुविधा का कारण ढूँढें ।
- गीला या गंदा पोतडा बदलने की आवश्यकता हो सकती है ।
- असुविधाजनक कपडे. जैसे बिस्तर की अननुकूलता को ठीक करें।

ऐसा रोदन जो कम मात्रा में शुरू हो कर जोर की आवाज में बदल जाए तो उसका मतलब भूख हो सकती है ।

- तब शिशु को खाना खिलायें ।

स्वर में कुछ बदलाव करके चिल्लाहट के साथ रोना

- छाती से लिपटना, प्रेरणा देना तथा गुनगुना कर गाना गाकर तथा बाहों में लेकर शिशु को सांत्वना के शब्द कहने की आवश्यकता को सूचित कर सकता है । शिशु को अपने छाती से लगाकर, गाना गाकर या हाथों में लेकर सांत्वना दीजिए।

  चेहरे से चेहरा लगाकर, मुस्कुरा कर उससे बातचीत करें ।

### टिप्पणी:

सारे शिशु एक जैसे नहीं होते । जिस तरह विकास में विभिन्नता होती है वैसे ही रोदन में भी विभिन्नता होती है । अत: ऊपर बतायी गयी गतिविधियाँ सहज रूप से होने वाली प्रक्रियाएँ हैं, परंतु शिशुओं के व्यक्तिगत विभेदों को तुरंत ही अनुवर्तित करें । इससे शिशु अपने रोने के विविध किस्मों का विभेदीकरण करके, अपनी आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति करता है ।

# मद - 4 शिशु को खाना खिलाने के बाद या डायपर बदलने के पश्चात् कुजन करना आयु: 0-3 महीने

## सामान्य

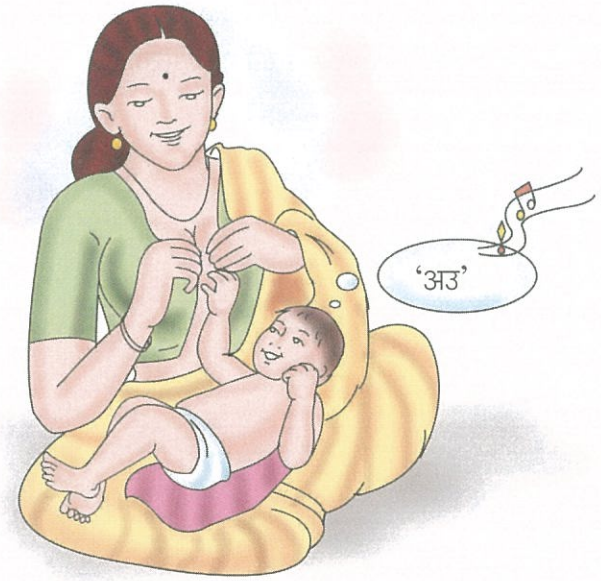


- साधारणतया नवजात शिशु दूध पीने के बाद विश्राम तथा खुश रहते हैं ।
- उनके गीले डायपर को बदलने के पश्चात् वे सुखद महसूस करते हैं ।
- शिशु उस समय आ, औ तथा इ जैसी ध्वनियों का अभिव्यक्ति करता है ।

## महत्व

- देखभालकर्ता के ध्यान को आकर्षित करने के लिए शिशु ऐसी आवाजें निकालता है ।
- वाणी तथा भाषा को सीखने के लिए जो आवश्यक पारस्परिक क्रिया है उसे आरंभ करना चाहिए ।
- ऐसा प्रतिक्रियात्मक उच्चारण आगे चलकर तुतलाने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को खाना खिलाने के पश्चात् पारस्परिक क्रिया / बातचीत को आरंभ करें ।
- शिशु विश्रांत तथा सुखद प्रतीत होता है ।
- होठों को अतिशयोक्तिपूर्ण क्रियान्वित करते हुए कुछ प्रतिक्रियात्मक ध्वनियाँ जैसे: 'आ', 'ए' तथा 'ई' उत्पन्न करें ।

- 'आ', 'औ', 'ई' जैसी आवाजों का उच्चारण करके उसे उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें । शिशु के पीठ को थपथपाकर तथा छाती से लगाकर शिशु के अनुकरण को सुदृढ करें ।
- तोते की स्वर-शैली / लहजे में बातचीत करते हुए शिशु की वाणी का अनुकरण कीजिए । ऐसा करने से शिशु को सकारात्मक पुनर्निवेशन मिलता है तथा शिशु में ऐसे आचरण की आवृत्ति होती है ।

## संशोधन:

### दृष्टि क्षति

- शिशु को सकारात्मक प्रबलीकृत करने के लिए देखभालकर्ता उससे जोर-जोर से बातें करके, उसे चूमकर तथा गले से लगाना चाहिए । फलस्वरूप शिशु अपने देखभालकर्ता की ओर मुस्कुराते हुए देखता हुआ कुजन करेगा ।

# मद - 5

# शिशु क्रोध से कही गयी ध्वनियों से भयभीत होता है तथा प्रतिक्रिया दिखाता है आयु: 4-6 महीने

## सामान्य

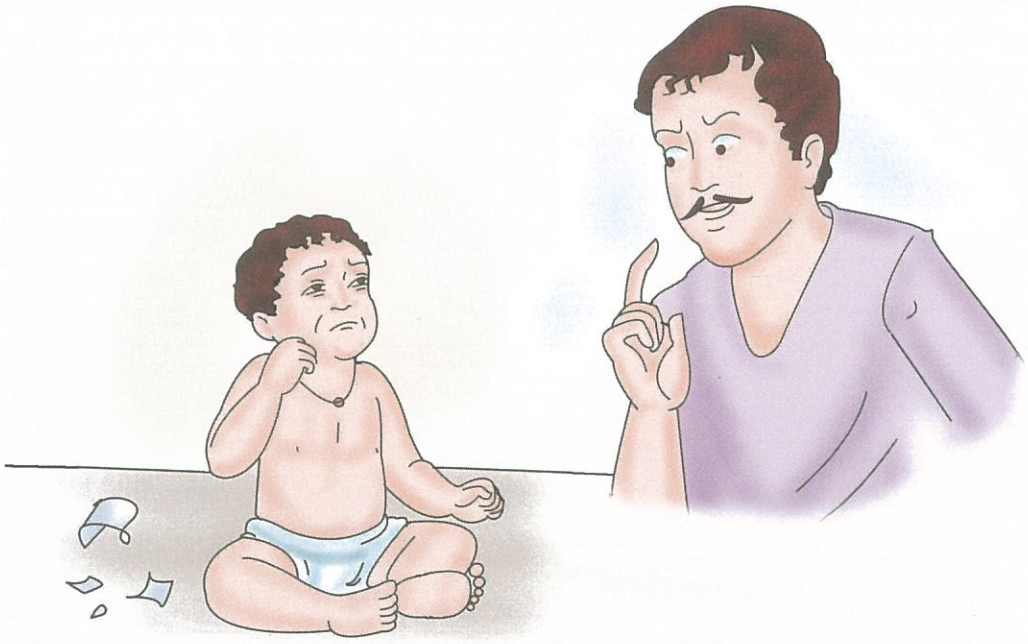

- इस आयु में विविध प्रकार के प्रेरकों से प्रभावित होकर शिशु आस-पास के परिसर की छानबीन करता है।
- शिशु अपनी माँ की आवाज को औरों से अलग करके पहचान सकता है ।
- चेहरे के हाव-भाव तथा लहजे में बदलाव को पहचान सकता है ।
- माँ की आवाज तथा हाव-भाव (गुस्से वाली आवाज या चेहरे) को देखकर शिशु तुरंत ही रोना आरंभ कर सकता है ।

## महत्व

- अजनबियों से, अपने माता-पिता या देखभालकर्ता की आवाज को पहचान सकता है ।
- वयस्कों की चेष्टाओं को पहचान सकता है । अपनी आँखों से खोजते हुए शिशु अपनी सामाजिक जानकारी का संकेत देता है ।
- वयस्कों के चेहरे के हाव-भाव की नकल कर सकता है ।
- प्रिय तथा अप्रिय ध्वनियों तथा हाव-भाव में भेद कर सकता है ।

**टिप्पणी:**

यह सब सहज रूप में होता है उदा :- यदि माँ जब ऊँचे लहजे में बोलती हो तो यह सूचित करता है कि माँ गुस्से में है । इससे शिशु डर जाता है और रोने लगता है । उसके विपरीत यदि माँ शिशु से धीमी आवाज में मुस्कुराते हुए बात करती है तो यह सूचित करता है कि वह खुश है । इससे शिशु स्वाभाविक रूप से यह सीखता है कि गुस्सैल आवाज में कही गयी बात उसको नापसंद है और माँ की खुशी भरी आवाज माँ की स्वीकृति को सूचित करती है ।

## मध्यस्थता :

गुस्सैल आवाज या चेहरे के हाव-भावों की बजाय शिशु का उपयुक्त अवसरों पर खुशी से भरी आवाजों तथा चेहरे के हाव भावों से अनुभव कराएँ ।

# मद - 6 मुख में जीभ का अन्वेषण तथा होठों को चाटने, चरमराने, बड़बड़ाने खट-खट की आवाजें आयु: 4-6 महीने

## सामान्य

- अपनी आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति तथा खाना खिलाने के पश्चात् अपनी खुशी को कुंजन द्वारा अभिव्यक्त करने के अतिरिक्त शिशु अक्सर अपनी स्वयं की ध्वनि के उपकरणों को खोज कर कई आवाजें करते हैं ।
- अपने होठों से खेलते समय शिशु अपने होठों को चाटता है ।
- शिशु अपनी जीभ तथा अधरों से खेलते हुए तालु से बड़बड़ाने की या खटखटाने की आवाज निकालता है।
- शिशु चरमराने की आवाज को उत्पन्न करने के लिए अपनी स्वर-पेटी को प्रभावित करता है ।

## महत्व

- ये क्रियाएँ शिशु के मुख की कोशिकाओं को सहज करने में सहायक हो सकते हैं ।
- सामान्य वाणी तथा भाषा के विकास के लिए जिह्वा की आवश्यक गतिशीलता में सहायक होता है ।
- उच्चारण संबंधी प्रक्रिया पर नियंत्रण होगा । ये क्रियाएँ वाणी-ध्वनियों जैसे पशुओं की आवाजों, आदि के अनुकरण का आधार बनती है ।

## सामान्य विकास:

- स्वाभाविक रूप से अनुकरण द्वारा ऐसा उच्चारण उत्पन्न किया जा सकता है ।
- शिशु खाना खाते समय चरमराता तथा बड़बड़ाता है । उदाहरणार्थ: जब शिशु को मीठा तथा नर्म खाना खिलाया जाता है तब वह चरचराता या बड़बड़ाता तथा खट-खट की आवाज करता है ।
- जब दूध को मुँह से चूसता है तो आवाज आती है और जीभ और नरम तालु के बीच बंद जैसी स्थिति आ जाती है और मुँह का खोल बडा हो जाता है और दूध को चूसता है ।

## मध्यस्थता :

- कुछ शहद, मुरब्बा लेकर शिशु के होठों पर रखने से उसे चखने के लिए अपने होठों को चूसना आरंभ करता है । इस प्रक्रिया को सुदृढ करने के लिए शिशु की इस क्रिया की नकल कीजिए ।
- हाथ से लेकर पैर तक की प्रारंभिक क्रिया को बोतल की निप्पल, झुनझुना तथा दंतोद्भवक् जैसे खिलौने से आरंभ किया जा सकता है ।

# मद - 7 शिशु प्रारंभिक, तुतलाहट, बहुधा सुनी गई बाबा या दादा जैसी ध्वनियाँ करता आयु: 4-6 महीने

## सामान्य

- ध्वनियों को आपस में जोड़कर कड़ी बनाकर एक ही नि:श्वास के रूप में कहना तुतलाहट की विशेषता है।
- यह ऐसा सार्वजनिक तथ्य है जो सारे मानव शिशुओं में पाया जाता है ।
- स्वर तथा व्यंजन के अक्षर बहुधा सुनाई पड़ते हैं ।
- ऐसा प्रतीत होता है कि शिशु जीभ, होंठ तथा स्वर-तंत्र से खेल रहा हो । शिशु जब अकेला होता है तब ये कण्ठ-क्रीड़ा जारी रहती है तथा जैसे ही कोई उसके घाव को आकर्षित करता हैं रुक जाती है ।

## महत्व

- उच्चारण अवयव का तेज नियंत्रण होता है ।
- तुतलाहट के द्वारा चेहरे की मॉसपेशियॉ मजबूत होती हैं जिसके फलस्वरूप वाणी तथा भाषा का विकास होता है ।
- आसपास के परिसर से सामाजिक परिज्ञान प्राप्त करके अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी कण्ठ साधना से उच्चारण करता है ।
- यह स्पर्श, गति बोधक दोनों के बीच कड़ी बनाता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को अपने चेहरे की ओर देखने दें । तब बा, बा, या दा दा दा जैसी ध्वनियाँ करें ।
- आपकी बातों का अनुकरण करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये तथा दोहराइए । यदि वह कोई प्रयत्न करता है तो शिशु की प्रशंसा कीजिये ।
- शिशु द्वारा की गयी ध्वनियों का अनुकरण आप जितनी कुशलता से हो सकता है कीजिए ।
- जैसे ही वह आपकी ध्वनियों को दोहराये, उसकी प्रशंसा कीजिए ।
- कभी-कभी तुतलाहट, स्वत: ही हो जाती है । ऐसी-ऐसी घटनाओं पर ध्यान दीजिए तथा शिशु की ध्वनियों को शीघ्रता से अनुकरण करके शिशु को प्रोत्साहित कीजिए । यह शिशु की तुतलाने की आदत को सुदृढ करता है ।

# मद - 8 नाम सुनते ही सिर घुमाता है
## आयु: 4-6 महीने

### सामान्य

- इस आयु तक शिशु गर्दन पर नियंत्रण पा लेता है ।
- उसमें पहचानने की क्षमता आती है तथा दोहराये जाने वाले विशिष्ट वाक-ध्वनियों का संबद्ध करता है ।
- नाम लेने पर वक्ता का ध्यान से पुनर्बलन होता है, तब शिशु बुलाने वाले की ओर सिर घुमाकर देखता है ।
- 6 माह की आयु तक शिशु को अपने सामाजिक परिसर का ज्ञान हो जाता है ।
- तुतलाहट जारी रहती है तथा शिशु आस-पास के लोगों के साथ जुड़ने में आनंद महसूस करता है ।
- शिशु को जब कोई व्यक्ति उसके नाम से पुकारता है, तब वह अपना सिर उस व्यक्ति की ओर मोड़कर जवाब देने का प्रयत्न करता है ।

### महत्व

- आसपास के व्यक्तियों तथा ध्वनियों के बारे में जानकारी ।
- अपने नाम जैसे विशिष्ट ध्वनियों को पहचानना ।
- सामाजिक अभिव्यक्ति तथा नाम पुकारने पर जवाब देना, यह सामाजिक अन्योन्य क्रिया का आरंभ है ।
- बातचीत की तीव्रता ऊँचाई को अपने माता-पिता के साथ मेल मिलाकर जानी-पहचानी आवाजों को पहचानना ।

## मध्यस्थता :

- यदि उसके नाम से पुकारने पर शिशु अपना सिर आपकी ओर नहीं घुमाता, तब नाम पुकारते ही आपकी ओर देखने के लिए सिर आपकी ओर घुमाने का उपाय कीजिए ।
- हर बार शिशु से बात करने से पहले उसका नाम लीजिये ।
- निश्चित कीजिए कि शिशु अपना नाम जानता है ।
- शिशु के नाम के साथ जोड़कर उसकी गतिविधियों को उसे समझाइये ।

  उदाहरणार्थ: रानी खा रही है
  रानी देख रही है
  रानी क्यों रो रही है ?

- प्रतिदिन की गतिविधियों के साथ शिशु के नाम को लगातार दोहराने से शिशु अपने आप को खास ध्वनि या नाम से अपने आप को जोड़कर पहचानेगा ।
- शिशु को दर्पण के सामने लाकर उसकी छवि दिखलाकर कहिये कि ये उसका नाम है ।
- जब उसका नाम लिया जाये, शिशु को अपनी ओर इंगित करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये ।
- शिशु के नहाते समय या खेल खिलवाते समय उसके शरीर के अवयवों का नाम लीजिये ।

# मद - 9 आसपास के परिसर में कुछ सामान्य वस्तुओं तथा व्यक्तियों के नामों को पहचानता है आयु: 7-9 महीने

## सामान्य

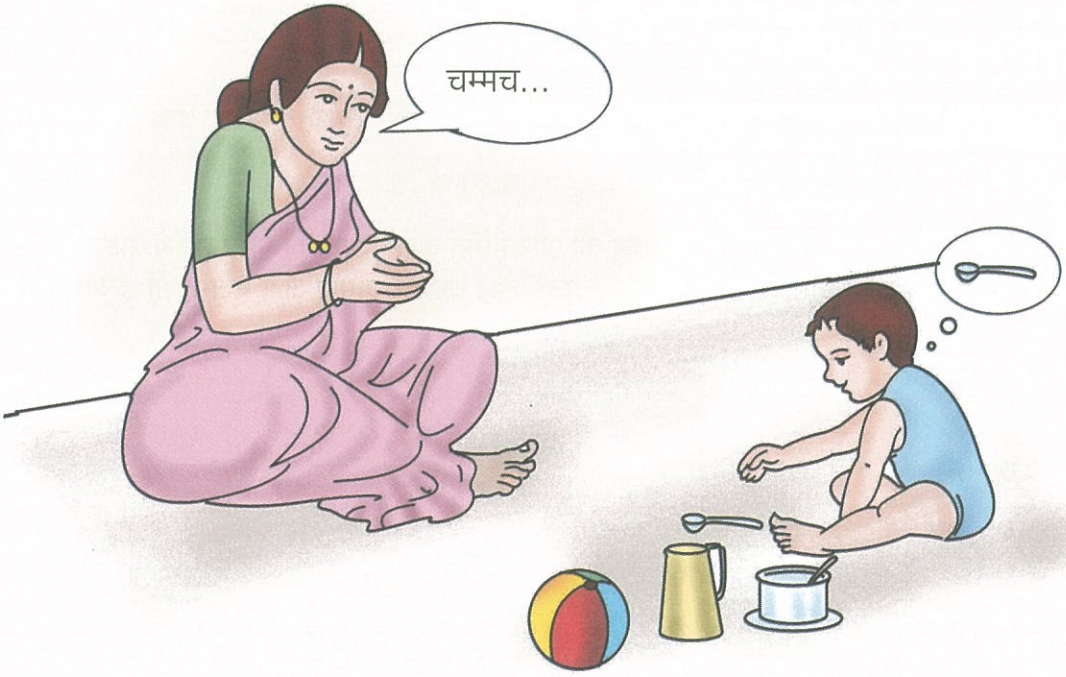


- शिशु अपने माता-पिता तथा आसपास के व्यक्तियों के आवाज पहचानने में सक्षम है । उदाहरणार्थ: भाई-बहन ।
- ऐसा इसलिए होता है कि माता-पिता तथा भाई-बहन उस शिशु के परिसर में लगातार उसके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं ।
- किसी वस्तु का नाम बार-बार सुनकर उस नाम को उस वस्तु के साथ जोड़कर उस वस्तु को नाम से पहचानने लगता है ।
- आस-पास की वस्तुओं तथा व्यक्तियों को पहचानने का एक क्रम होता है । प्रगति का क्रम इस प्रकार है ।
  - अ) परिचित से लेकर अपरिचित तक
  - आ) आस-पड़ोस के परिसर से लेकर बाहर के परिसर तक
  - इ) माता-पिता तथा आस पड़ोस के देखभाल करने वाले से लेकर अन्य व्यक्तियों तक ।

## महत्व

- यह कौशल शिशु की भाषा की ग्रहणशीलता को सुधारता है ।
- आस-पड़ोस के परिसर में स्थित कई वस्तुओं को पहचानने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

- आस-पड़ोस के परिसर से कुछ ऐसी वस्तुएँ लीजिए जो सामान्यत: उपयोग में आती हैं ।
- उस वस्तु के बारे में बात करते हुए उस वस्तु को शिशु को दिखाएँ । हो सके तो शिशु को उसे अपने हाथों से पकड़ने दें ।
- हर बार जब आप उस वस्तु को अपने हाथों में लें, उसका नाम लें ।
- शिशु से उस वस्तु के आकार, परिमाण तथा उसके उपयोग के बारे में बात करें । इससे शिशु को उन शब्दों से उस वस्तु को जोड़ने में मदद मिलती है ।
- इन वस्तुओं को शिशु के सामने कुछ इंचों की दूरी पर रखें ताकि उन वस्तुओं को शिशु देख सके ।
- शिशु को कुछ वस्तुओं के नाम सुनाएँ तथा उस वस्तु को बताने के लिए कहिये ।
- शिशु उस वस्तु को देखकर, छूकर, या उस वस्तु की ओर इंगित करके वस्तु को पहचानने में सक्षम होना चाहिए । उदाहरण: रसोई घर की वस्तुएँ, खेल से संबंधित वस्तुएँ तथा घर का सामान जैसे मेज-कुर्सी इत्यादि ।

# मद - 10 अन्य लोगों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए शब्दों की ध्वनियों का उपयोग करता है आयु: 7-9 महीने

## सामान्य

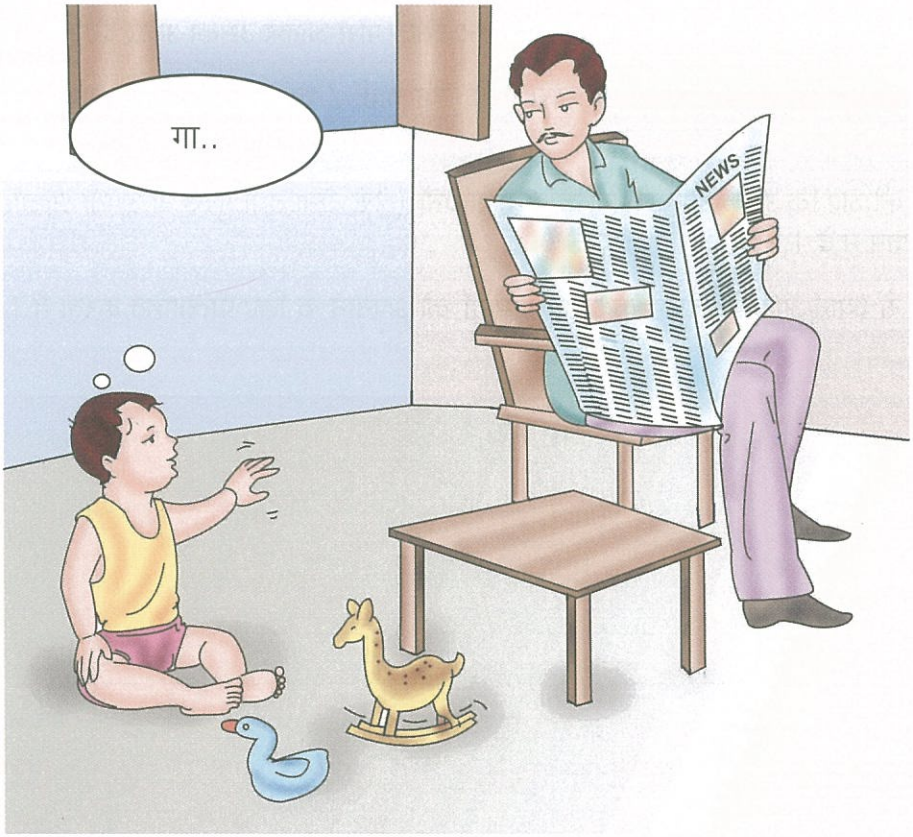


- ध्यान को आकर्षित करने के लिए, आरंभ में शिशु या तो सहायता के लिए या अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए रोता है ।
- ध्वनियों से बड़ों का ध्यान आकर्षित करने की कुशलता को विकसित करता है । **उदा:** अलग-अलग आवश्यकताओं के लिए अलग-अलग ध्वनियों का उपयोग ।
- साधारणतया शिशु अपने माता-पिता या देखभालकर्ता के ध्यान को आकर्षित करने के लिए तुतलाहट या उच्चारण जैसे अनेक तरीकों का उपयोग करता है ।
- साधारण रूप से यह देखा गया है कि माता-पिता तथा देखभालकर्ता शिशुओं की परिचर्या तब करते हैं जब वह रोता है । परंतु शिशु की अभिव्यक्ति के तरीके पर ध्यान दें और उपयुक्त तरीकों को सुदृढ़ बनाये ।

## महत्व

- यह मुँह के प्रेरक मॉसपेशियों को सुदृढ़ करता है ।

- यह श्वास-नियंत्रण, जो ध्वनि का स्रोत है - को बढ़ाता है ।
- यह शिशु के अभिव्यक्तिकरण-कौशल का विकास करता है ।
- यह सामाजिकीकरण-कौशल का भी विकास करता है ।
- यह अनुकरण कौशल के लिए मार्ग सुगम करता है ।

## मध्यस्थता :

- अभिव्यक्ति जैसे ध्यानाकर्षण के साधन को उपयुक्त तरीके से उपयोग करें ।
- शिशु के अभिव्यक्त करने तक निरीक्षण कीजिए और उसके पास जाकर उसका उत्तर दीजिए ।
- सौम्यता से बात कीजिये तथा उस शिशु द्वारा कही गयी बातों / ध्वनियों को उसका अर्थ जोड़ते हुए अनुकरण कीजिये ।
- सुनिश्चित कीजिए कि उसके ध्यानाकर्षण के अन्य साधनों (जैसे रोना तथा गुस्से से अपनी झल्लाहट व्यक्त करना) की ओर ध्यान न दें ।
- ऐसा करने से ध्यान आकर्षित करने के उपयुक्त मार्गों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है ।

# मद - 11 बातचीत जैसी अभिव्यक्ति को उपयोग करके, शिशु अपनी ही भाषा में कुछ वस्तुओं के नाम लेता हुआ प्रतीत होता है । आयु: 10-11 महीने

## सामान्य

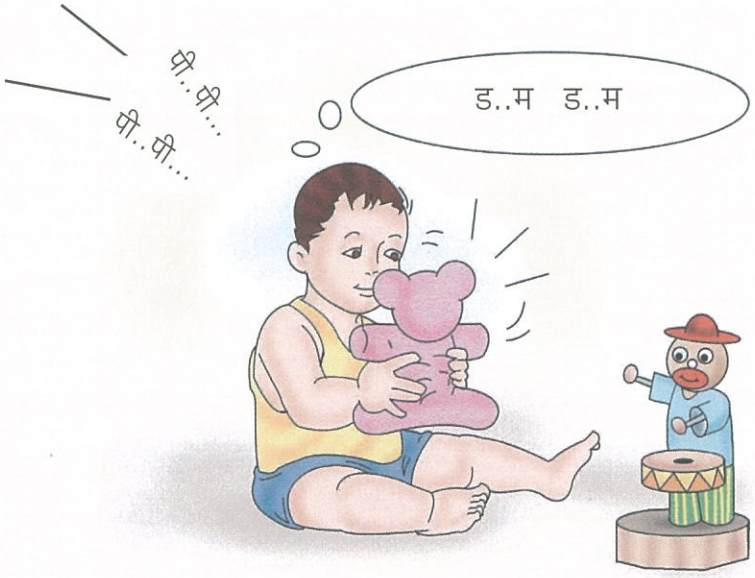


- शिशु कुछ ऐसी विशेष ध्वनियों का उच्चारण करता है, जिनका निश्चित अर्थ होता है । ये शब्द वयस्कों के शब्दों जैसे नहीं होते ।
- शिशु कुछ अलग-अलग वस्तुओं तथा क्रियाओं को पहचानने के लिए विभिन्न स्वनिर्मित अक्षरों का उपयोग करता है ।
- शिशु अपने शब्दों का स्वयं निर्माण करता है जिन्हें आइडियोमार्फ कहा जाता है ।

  **उदा:** "फफफ" का अर्थ है माचिस की तीली, धुआँ या चिम्नी इत्यादि । शिशु इस आइडियोमार्फ के विभिन्न स्वर-शैलियों को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अर्थों के साथ उपयोग करता है ।

## महत्व

- यह आवश्यकताओं को रोदन या कुंजन से न होकर सुसंस्कृत रूप से व्यक्त करने का मार्ग है ।
- यह अभिव्यक्ति की कला को सुधारता है ।
- यह वस्तुओं तथा व्यक्तियों को पहचानने में सहायक होता है ।
- यह आस-पास के परिसर में सामाजिक संबंधों का निर्माण करता है ।

## मध्यस्थता :

- इस अवस्था में आइडियोमार्फ के पश्चात् अनाप-शनाप उच्चारणों को जो केवल स्वनिर्मित होते हैं का उपयोग करता है । **उदा:** यदि शिशु को पानी चाहिए और वह "पानी" शब्द नहीं कह सकता, उसे "लाला" कहने से वह पानी को लाला नाम से अनुकरण करेगा ।
- इस तरह शिशु विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वनिर्मित शब्दों का उपयोग करना सीखता है, जो माता के शुरु करने से ही साध्य है । उदाहरण: दूध के लिए शिशु "दुदु" तथा चावल के लिए "आम" कह सकता है ।
- इन आदिशब्दों को स्वीकार कीजिए तथा देखिए की शिशु के लिए उन शब्दों के क्या अर्थ हैं ।
- एक सही शब्द को नमूना / प्रतिमान बनाएँ परंतु साथ ही साथ शिशु के उच्चारणों / बोलियों को सुधारिये मत ।

# मद - 12

# "नहीं" शब्द को समझता है

## आयु: 10-12 महीने

### सामान्य

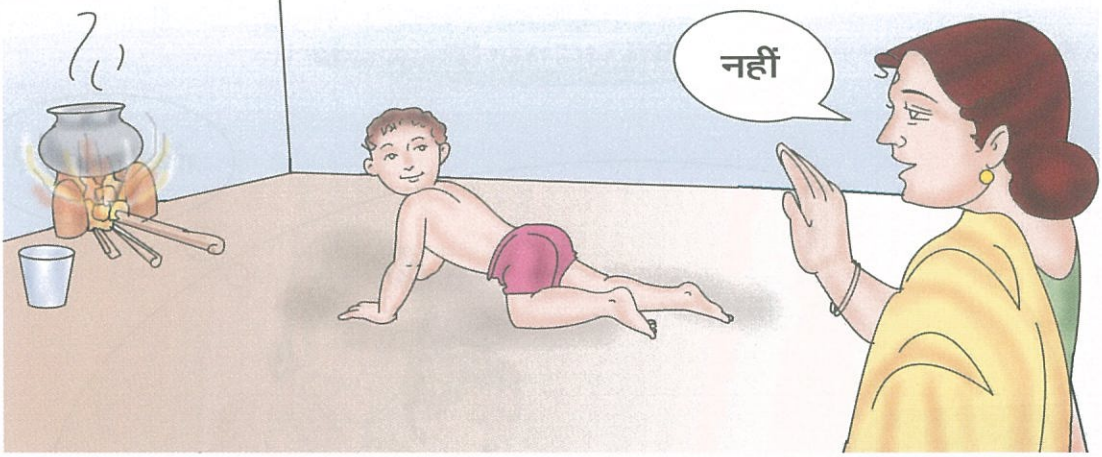


- जैसे-जैसे शिशु रेंगने की क्षमता में प्रवीणता हासिल कर घर में चारों ओर घूमता है तथा किसी वस्तु के सहारे से खड़ा होना सीखता है व हाथ में आई वस्तुओं को अपने मुँह में रखकर सारे परिसर की छानबीन करता है । देखभालकर्ता अक्सर उनको ऐसा करने से रोकने के लिए नहीं शब्द का उपयोग करता है । शिशु इस बात को शब्द की ऊँची आवाज तथा उच्चरित शब्द 'नहीं' के लहजे से समझना सीखता है तथा अपनी क्रियाओं को बंद करता है ।

### महत्व

- शब्द संग्रह की ग्रहणशीलता में सुधार आता है ।
- शिशु अपने आस-पास के लोगों को पहचानना शुरु करता है ।
- विविध प्रकार के चेहरे के निरनुमोदन की अभिव्यक्ति तथा स्वर के लहजे को समझने में सहायक होता है।

### मध्यस्थता :

- यदि शिशु की अपनी गतिविधियों में परिवर्तन नहीं आता है या अपनी गतिविधियाँ नहीं रोकता है, तब उसके हाथों को पकड़ कर मौलिक नियंत्रण उसकी आँखों व चेहरे की ओर देखते हुए अपने चेहरे पर उपयुक्त अभिव्यक्ति के साथ नहीं शब्द उच्चरित करके उस शिशु की क्रियाओं को रोकिये ।
- आप अपनी आँखों को खोलकर शिशु को पक्की तौर से जताएँ कि आप क्या चाहते हैं ।
- शिशु को उस जगह से दूर हटाएँ ।
- अगली बार जब आप उसी लहजे में 'नहीं' शब्द का उपयोग करेंगे और जब शिशु आपकी बात को मान ले तब उसकी प्रशंसा कीजिए ।
- आप उस शिशु के भाई-बहन या अन्य पारिवारिक सदस्यों के साथ ऐसा करके दिखाएँ जिससे नकल करके सीखने में आप उस शिशु की सहायता कर सकते हैं ।

# मद - 13 जब-तब इशारों के साथ-साथ शिशु का साधारण आदेशों का अनुसरण करना (जैसे: वह चीज नीचे रखे, गोला कहाँ है)

आयु: 10-12 महीने

## सामान्य

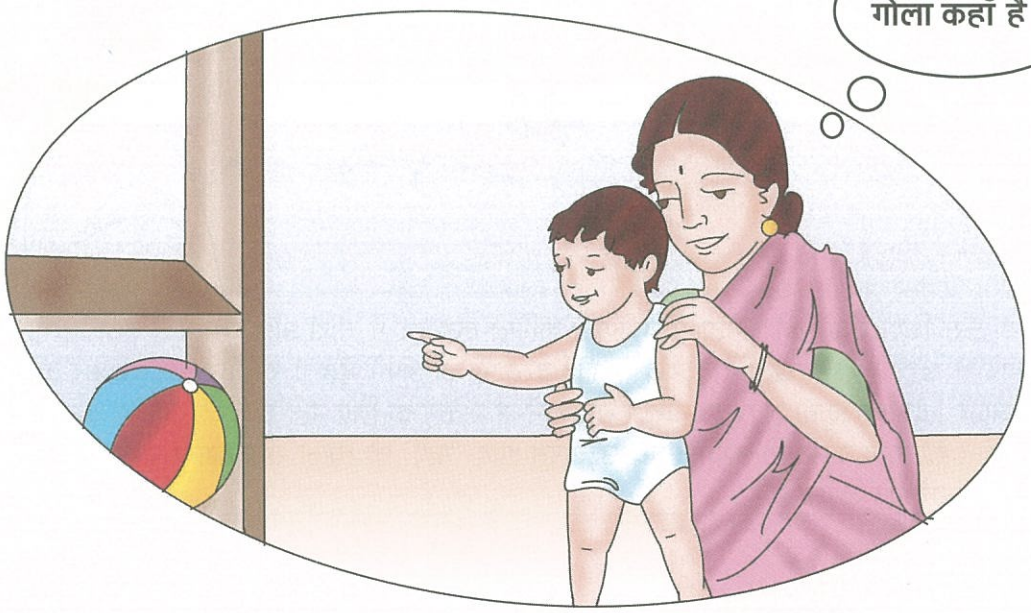


- इस आयु के शिशु इकहरे शब्दों को बोलने की क्षमता रखते हैं ।
- वे इशारों को लहजे / अभिव्यक्ति में परिवर्तन तथा माता-पिता की कुछ बातों के अर्थ को समझ सकते हैं।
- वे इशारे छोटे शब्द-समूह तथा साधारण आदेश तथा वाक्यों को समझते हैं ।
- शिशु द्वारा कहे गये शब्द एकाक्षरीय या दो अक्षरीय होते हैं ।
  उदाहरण: ममा

## महत्व

- ग्रहण शक्ति की कुशलता बढ़ती है ।
- अनुकरण को सुधारने की कुशलता बढ़ती है ।
- शब्दावली को सुधारने में सहायक होती है ।
- साधारण आदेशों का पालन करने में सहायक होता है ।
- आस-पास के परिसर से संबंध स्थापित करने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को गोले से खेलने जैसी प्रक्रिया में निमग्न करें ।
- शिशु को गोला अपने हाथ में लेने दें । उस गोले को आपकी ओर फेंकने के लिए प्रोत्साहित करें । उसके बाद गोला अपने हाथ में लेकर शिशु से पूछिये कि गोला कहाँ है ।
- उसी तरह कोई दूसरी गतिविधि / क्रियाकलाप करें । उदाहरण: दरवाजा बंद करो और दरवाजों की ओर इशारा कीजिये ।
- शिशु को इशारों के सहारे आपके आदेशों का पालन करना सीखना चाहिए । शिशु के लिए इसे आसक्तिपूर्ण बनाने के लिए एक रंग-बिरंगे कागज की टोपी बनायें तथा शिशु से कहिये कि टोपी को वह अपने सिर पर रखे ।
- प्रतिदिन दिनचर्या की गतिविधि की तरह जैसे खाना खिलाना, कपड़े पहनाना, स्नान कराना तथा खेलना ऐसे क्रियाकलाप किये जा सकते हैं ।

# मद - 14

# शिशु कुछ प्रश्नों की उपयुक्त मौखिक प्रतिक्रिया / उत्तर देकर अपनी ग्राह्यशक्ति/ समझने की शक्ति को प्रदर्शित करता है (उदाहरण: नमस्ते / बाई-बाई)

## आयु: 10-12 महीने

## सामान्य

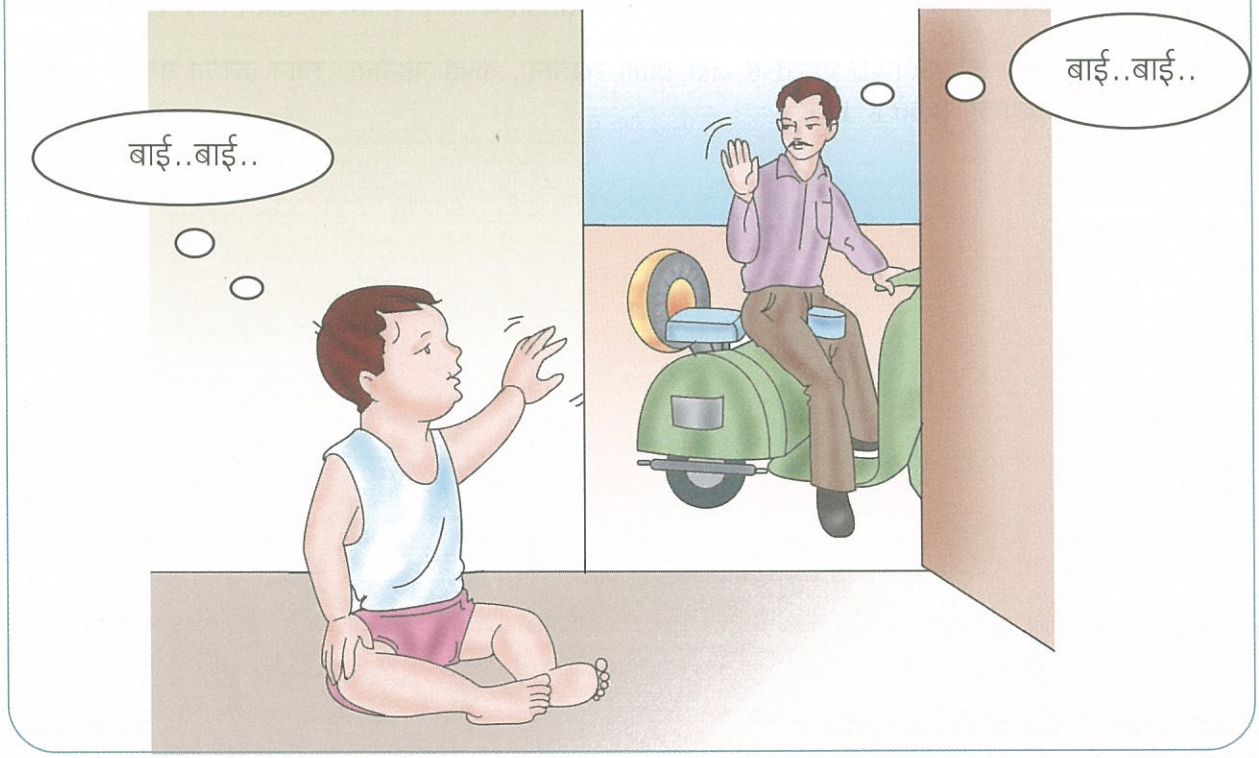


- सामान्य तौर पर देखी जानेवाली कुछ नेमी बातें जैसे: 'नमस्ते', 'बाई-बाई' करने को कहने पर शिशु कुछ उसका अनुकरण करते है ।
- इस अवस्था में वे इन क्रियाओं को अनुकरण (अमौखिक) द्वारा सीखते हैं ।
- शिशु ऐसी मौखिक ध्वनियों का जो बातचीत की ध्वनियों जैसे लगते हैं - अनुकरण करता है ।

## महत्व

- ग्रहण-शक्ति की कुशलता को सुधारता है ।
- साधारण आदेशों का पालन करना ।
- सामान्य वस्तुओं तथा व्यवहारों को पहचानना ।

## मध्यस्थता :

- यदि शिशु, अनुकरण को नहीं समझता, तब उसे एक नमूना दिखाकर उसकी सहायता करें ।
- उसके दोनों हाथों को जोड़कर नमस्ते करना सिखाएँ ।
- उसके हाथों को हिलाकर बाई-बाई करना सिखाएँ ।
- पुनर्बलन तथा दृष्टि पुनर्निवेश करने के लिए उस क्रिया को आइने के सामने करके दिखाएँ ।
- जब शिशु उस क्रिया को करने में सक्षम हो जाए तब उसकी प्रशंसा कीजिये तथा कहने पर उस काम को करने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- धीरे-धीरे उस क्रिया को वास्तविक परिस्थितियों में घर में कई लोगों के बीच में तत्पश्चात् अजनबियों के सामने उस क्रिया को करना सिखाएँ ।

# मद - 15 शिशु ध्वनियों का अनुकरण करने का प्रयत्न करता है
## आयु: 10-12 महीने

### सामान्य

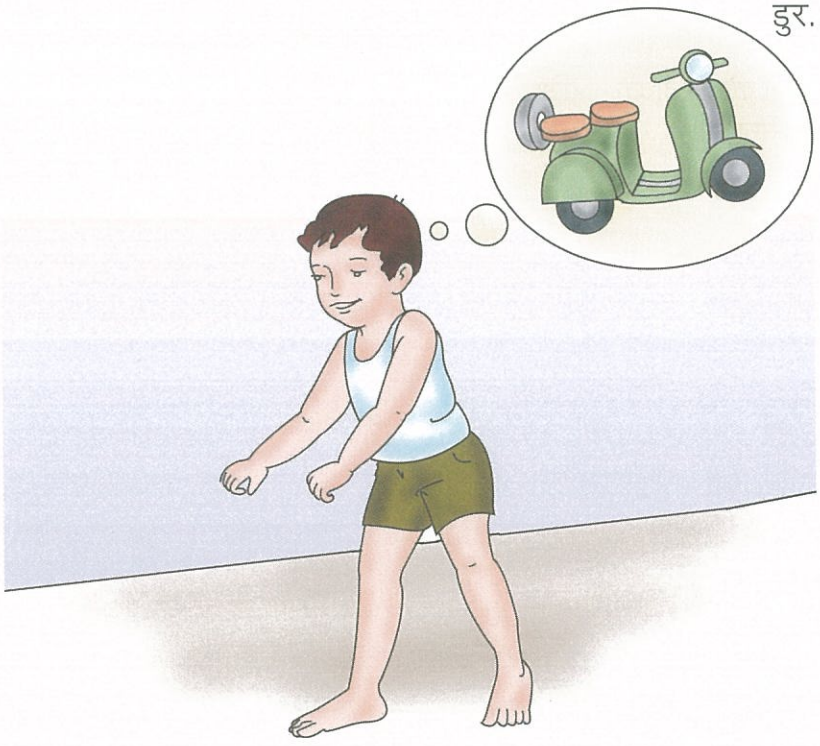


- अनुकरण एक ऐसी क्रिया है, जिसमें शिशु अन्य व्यक्ति की तरह अभिनय करता है या उसका अनुकरण करता है ।
- शारीरिक चेष्टाओं का या वाक-तन्तुओं के कसरत के द्वारा वाक् संबंधी ध्वनियों या अमौखिक ध्वनियों का अनुकरण यह हो सकता है:
- शिशु, धीरे-धीरे, अर्थपूर्ण बातचीत के लिए आवश्यक समन्वयन करने में नैपुण्य प्राप्त कर सकता है ।

### महत्व

- मुख संबंधी प्रेरक मॉसपेशियों का सुदृढ़ होना ।
- अनुकरण / नकल करने की कुशलता में वृद्धि ।
- उच्चारण-अवयवों की प्रक्रिया पर नियंत्रण ।
- अर्थपूर्ण वार्तालाप / बातचीत की उत्पत्ति में सहायक ।

## मध्यस्थता :

- शारीरिक चेष्टाओं के अनुकरण के साथ क्रिया आरंभ करें । उदाहरण: ताली बजाना, हाथ ऊपर उठाना, बालों / गालों को छूना, ध्यानाकर्षण के लिए सिर को एक ओर से दूसरी ओर घुमाना ।
- एक बार शिशु के ऐसा कर सकने पर, गालों को फुलाएँ / हवा फूँके / होठों को एक ओर से दूसरी ओर घुमाएँ ।
- बिल्ली / चूहे की आवाज का अनुकरण करें ।
- ध्यान दें कि इन क्रियाओं में वह ध्यान दे रहा है तथा वह अनुकरण करने में प्रयत्नशील है ।

### मौखिक प्रोत्साहन का उपयोग

**उदा:** यदि शिशु पा उच्चरित करता है तो पापा कहिये । इससे उसकी आसक्ति तथा अनुकरण शक्ति बेहतर पुनर्निदेश द्वारा बढ़ती है । धीरे-धीरे शिशु को वाक्-ध्वनियों से प्रारंभिक शब्दों की ओर आगे बढ़ायें । मद-15 तथा मद-16 के अंतर्गत, एक के पश्चात् दूसरा या साथ-साथ प्रयत्न करें ।

# मद - 16 शिशु, अम्मा, पापा, दादा इत्यादि प्रारंभिक वास्तविक शब्द उच्चरित करता है । आयु: 10-12 महीने

## सामान्य

- शिशु द्वारा उपयोग किया गया शब्द जिसका वह उच्चर करता है तथा जब भी चाहता है, तब उसका उपयोग करता है, वह शब्द प्रथम "शब्द" है।
- शिशु द्वारा उच्चरित किये गये शब्द या तो एक ही अक्षर या दो अक्षर वाले बार-बार दोहराये गये शब्द होते हैं।
- अक्सर शिशु द्वारा उच्चरित प्रारंभिक शब्द अन्ना / दादा / पापा होता है ।
- उच्चरित शब्द सीमित (उदाहरणार्थ: "शिशु" केवल भूरे रंग के कुत्ते के लिये ही कुत्ता शब्द उपयोग करता है, न कि किसी और रंग के कुत्ते को) या विस्तृत होते हैं (उदाहरणार्थ: सारे चार पैर वाले पशुओं को कुत्ता कहता है ।)

## महत्व

- अभिव्यक्ति के कौशल को सुधारना ।
- पारिवारिक सदस्यों के या सामान्य वस्तुओं के नाम लेना ।
- शब्द-समूह को सीखने के लिए पूर्वगामी ।

## मध्यस्थता :

- शिशु द्वारा कहे गये प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति जिसके बारे में शिशु से बात की गयी है, उसका नामपत्र तैयार करें ।
- वही शब्द बार-बार उद्‌भावित करें । **उदा:** माँ अपने शिशु को खाना खिलाते समय निम्न प्रकार कह सकती है ।

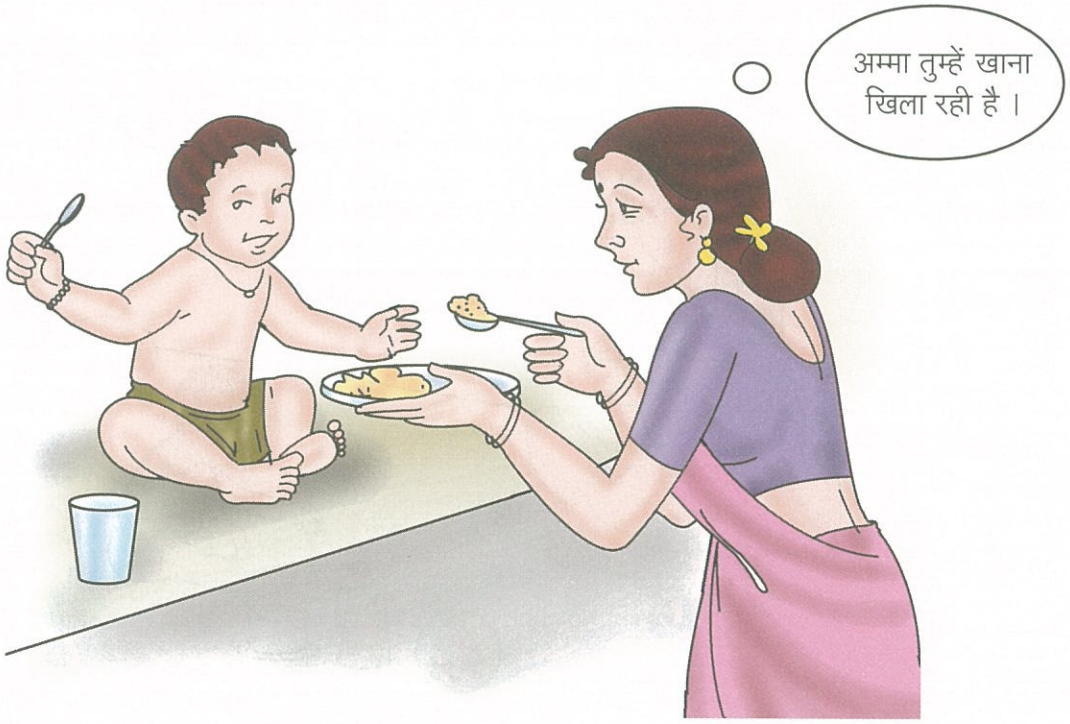


- अब राम भूखा है ।
- देखो अम्मा खाना ला रही है ।
- अम्मा खाना मिला रही है ।
- अम्मा तुम्हें खाना खिला रही है ।
- अम्मा तुम्हारे होंठ / गाल पोंछ रही है ।
- अम्मा तुम्हारे लिए थोड़ा पानी लाएगी ।

इसी तरह माँ अपने अलग-अलग कार्यक्रमों में / परिस्थितियों में यही नमूने का अनुसरण करे । ताकि शिशु को वही शब्द बार-बार सुनाई पड़े जिससे वह अपने आप को उनसे जोड़ सके । चित्र बने हुए कार्ड / पन्तक का उपयोग करे ।

# मद - 17 नाम बताने पर शिशु सामान्य वस्तुओं को इंगित करता है । आयु: 13-15 महीने

## सामान्य

- इस आयु में प्रारंभिक शब्द सीखे जाते हैं ।
- 15 शब्दों का ज्ञान हो जाता है ।
- आइडियोमार्फस् की जगह, वयस्कों के लिए बने शब्द आ जाते हैं ।
- अर्थविज्ञान की इच्छा में विकसित होता है ।

## महत्व

ग्रहणशीलता की निपुणता बढ़ती है ।
सामान्य वस्तुओं को पहचानना ।
सामान्य वस्तुओं के नाम लेना ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को अपने साथ लेकर आस-पड़ोस के परिसर में विद्यमान सामान्य वस्तुओं को दिखाएँ ।
- वस्तुओं की ओर इंगित करते हुए उनके नाम लेकर तथा उस वस्तु का वर्णन करें ।
- आप नाम लेकर शिशु को उस वस्तु की ओर इशारा करने को कहिये ।
  उदा: एक गोले को हाथ में लेकर उसके रंग तथा परिमाण के बारे में बात करें । उस बात को सुनते ही जब वह उस वस्तु की ओर इशारा करेगा तब कहिये "हाँ यही गोला है" और पुन: उसका वर्णन करते रहें ।
- इस तरह आप और आपका शिशु वार्तालाप करते रहें ।
- शरीर के अवयवों को बताते हुए उनके नाम बताते रहिये और उस अवयव की ओर इशारा करने को कहिये ।
- शिशु को आस-पड़ोस की वस्तुओं को देखने के लिए कहिये और इशारा करते हुए उनके नाम बताने के लिए कहें ।

# मद - 18 पशुओं की आवाजों का अनुकरण करता है
## आयु: 13-15 महीने

### सामान्य

- शिशु, अनुकरण द्वारा सीखते हैं । वाक् तथा भाषा को सीखने के लिए शिशु के कण्ठ के अनुकरण की आवश्यकता होती है ।
- पशुओं की आवाजें सुनकर उनका अनुकरण करना शिशु पसंद करते हैं ।
- जब माता-पिता विभिन्न पशुओं की आवाजों (जो सामान्य रूप से सुने जाते हैं) की नकल करके उनके बारे में बात करते हैं, तब शिशुओं को बहुत मजा आता है ।
- शिशु द्वारा कोई आवाज / शोरगुल करने तक प्रतीक्षा करके ऐसा किया जा सकता है । उस आवाज को थोड़ा रूपांतरित करके लगभग पशु की आवाज में बदलकर उसे दोहराया जा सकता है ।

### महत्व

- चालक समन्वयन की दर में वृद्धि होती है ।
- अर्थपूर्ण बातचीत के लिए आवश्यक समन्वयन करने में प्रवीणता प्राप्त करता है ।

### मध्यस्थता :

- यदि शिशु "बा" जैसी ध्वनि उच्चरित करता है तो माता-पिता गाय की आवाज यानी "अम्बा" या "बा" कहकर उसे दोहराएँ । उस ध्वनि को दोहरायें । फिर कहिये "हाँ" गाय 'बा' कहती है ।
- ऐसी पुस्तक लीजिए जिसमें पशु के चित्र हों । प्रत्येक पशु के बारे में शिशु से बात कीजिये तथा उस पशु की आवाज का अनुकरण कीजिये ।
- शिशु को पशुओं के पास लेजाकर, उनके साथ खेलकर, उसके आवाज का अनुकरण कीजिये और शिशु के उपयुक्त प्रतिक्रिया को सुदृढ़ कीजिये ।

# मद - 19 शरीर के 4-5 अवयवों की ओर इंगित करता है या 5 या अधिक चित्रों की ओर इशारा करता है । आयु: 14-16 महीने

## सामान्य

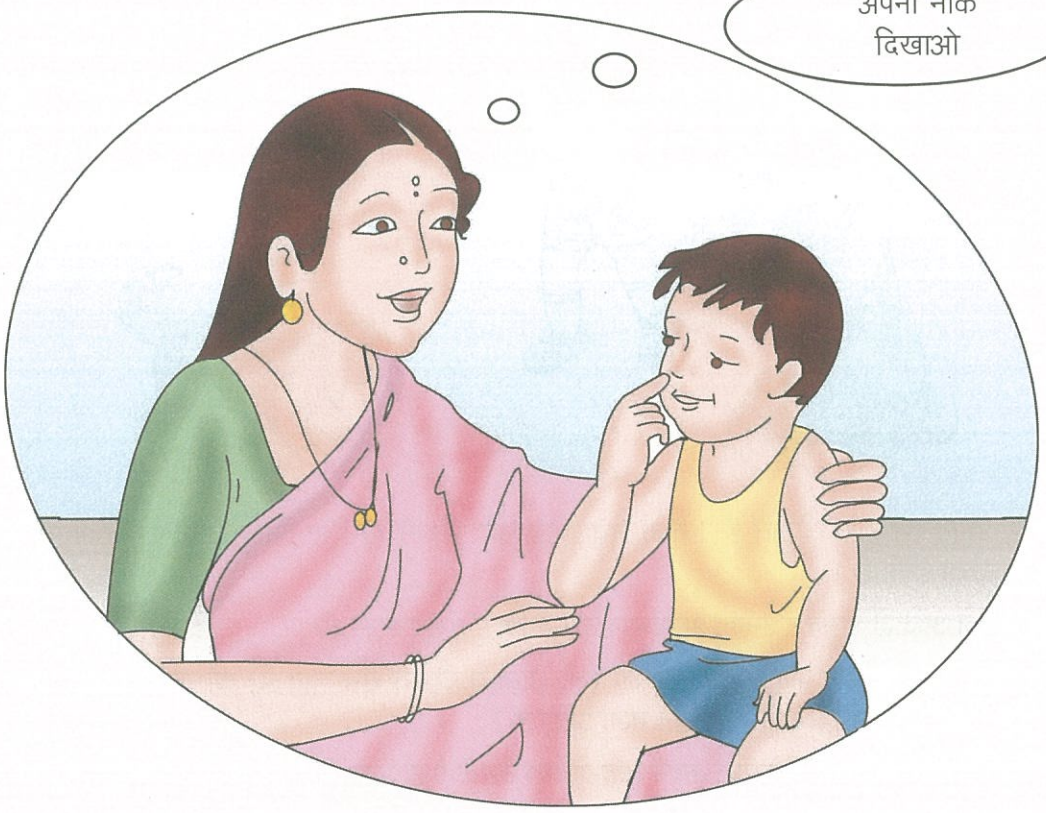


- शिशु के लिए शरीर के अवयवों के नामों को जानना बुनियादी आवश्यकता है तथा अधिक दिलचस्प गतिविधि ।
- आम तौर से बच्चे अपने शरीर के अंगों के नाम बिना सिखाये ही सीख जाते हैं । इन शब्दों को दैनिक क्रियाकलापों में उपयोग किया जाता है ।

  **उदा:** अपने हाथ धोलो
  अपनी नाक साफ करो ।

## महत्व

- शब्द संग्रह में वृद्धि ।
- क्रियात्मक अभिव्यक्ति जारी रहती है ।

## मध्यस्थता :

- एक गुड़िया को लेकर उसके नाम पत्र तैयार करके उस गुड़िया के शरीर के अवयवों जैसे: हाथ, पैर, पेट तथा बाल आदि शिशु को दिखाएँ ।
- बच्चे से बात करते हुए उन अवयवों की क्रियाओं को ऐसे मनोरंजक रूप से प्रस्तुत कीजिये ।
- शिशु से उस अवयव की ओर इशारा करने या उसे छूने को कहिये ।
- आपके पति / पत्नी / अन्य बच्चों द्वारा उपरोक्त प्रक्रिया को दोहरा कर, उस शिशु को उन अवयवों को दिखलाने के लिए कहिये ।
- पुस्तक में छपे चित्रों को या माँ या बच्चे या अन्य व्यक्ति के चित्रों को शिशु को दिखलाएँ ।
- यदि शिशु वस्तुओं को नाम से पहचान सकता है, उसे कुछ ऐसा चित्र बतायें जिसमें ऐसी वस्तुएँ हों जिन्हें वह जानता है । शिशु को उनकी ओर इशारा करने दें, या उन वस्तुओं को चित्रों से जोड़कर दिखाएँ ।
- वस्तु को हटाकर शिशु से कहिये कि चित्रों को पहचाने । धीरे-धीरे वस्तुओं की संख्या को बढ़ायें जिससे वह अधिक से अधिक वस्तुओं को पहचान सके ।

# मद - 20

# कुछ प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देता है क्या-कर रहा, कहाँ-वस्तु

## आयु: 16-18 महीने

## सामान्य

- 18 माह की आयु तक शिशु क्रियाओं के साथ कई प्रकार के शब्दों को सीख लेता है ।
- यदि आप शिशु को ऐसी क्रिया दिखलायेंगे जिसमें लड़की बालों में कंघी कर रही है और शिशु से पूछेंगे कि लड़की क्या कर रही है, शिशु 'कंघी' या 'बाल' कहकर इस बात को बताने का प्रयत्न कर रहा होता है कि लड़की बालों में कंघी कर रही है ।

## महत्व

- शिशु के शब्दज्ञान 50 शब्दों की वृद्धि ।
- वस्तुओं को जानते हुए उनका उपयोग करना ।
- अर्थगत निश्चय का विकास ।

## मध्यस्थता :

- यदि शिशु उत्तर देने से अशक्त हो, तब आप उसे उत्तर के रूप में एक नमूना दीजिये, जिससे वह कुछ सीखता है ।
- शिशु को कमरे या आस-पास के परिसर की वस्तुओं से जोड़ा हुआ प्रश्न "कहाँ?" जैसे प्रश्न पूछें । जैसे ("पुस्तक कहाँ है?") शिशु मेज पर रखी पुस्तक की ओर दिखा सकता है, या उत्तर दे सकता है "मेज" ।
- शिशु को एक चित्र पुस्तक देकर उससे उपयुक्त प्रश्न पूछ सकते हैं ।

# मद - 21 लगभग 50 शब्द तक कह सकता है
## आयु: 16-18 महीने

### सामान्य

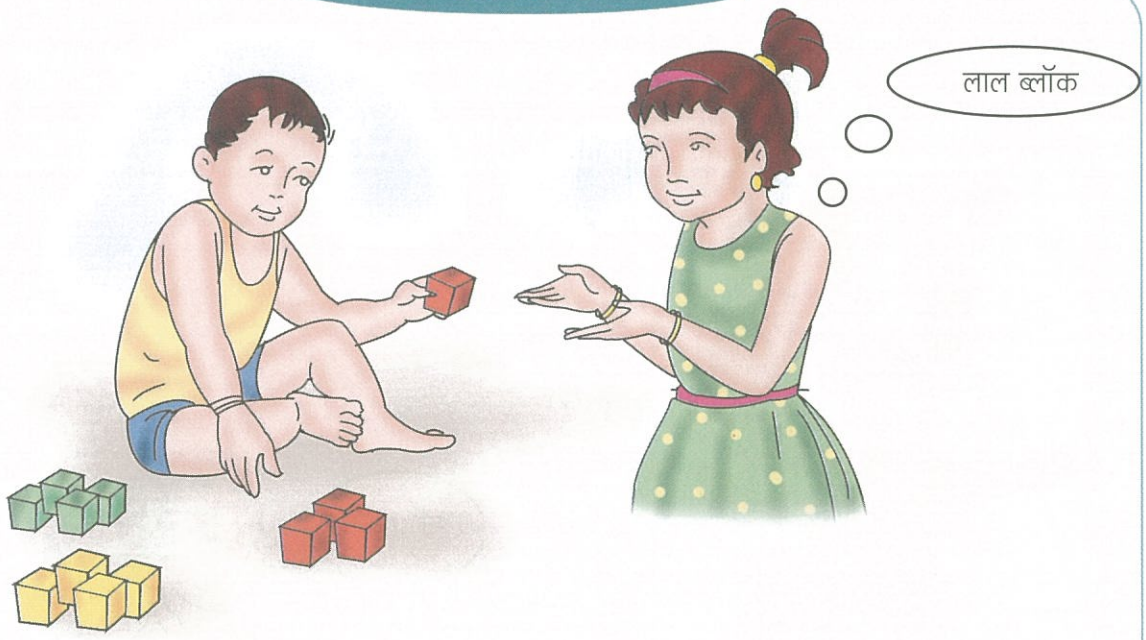


- इस आयु तक शिशु 50 शब्द तक कह सकता है जिसमें विभिन्न, क्रियाएँ होती हैं जिन्हें वह क्रियात्मक अभिव्यक्ति के लिए उपयोग करता है ।
- शिशु अभिव्यक्ति के लिए एकहरे शब्दों का उपयोग करता है ।
- शिशु की भाषा में, अस्तित्व, अंतर्धान / लोप, स्वामित्व / अधिकार, अस्वीकृति आदि अर्थ-विज्ञान से जुड़े निश्चय उपयोग में लाये जाते हैं ।

### महत्व

- अभिव्यक्ति की कुशलता को सुधारना ।
- शब्दज्ञान में वृद्धि ।
- क्रियात्मक अभिव्यक्ति का उपयोग ।

### मध्यस्थता :

- जहाँ तक संभव हो वास्तविक वस्तुओं को या चित्रों को लेकर एक बार एक वस्तु का परिचय कराएँ ।
- उस वस्तु के बारे में वर्णन करते हुए उसके आकार, रंग तथा उपयोग के बारे में बताएँ ।
- एक बार शिशु अपनी धारणा को विकसित करने के पश्चात् अनेकों वस्तुओं से परिचित कराएँ । जिससे उसका शब्दज्ञान बढ़े ।
- ऐसी परिस्थिति को निर्मित करें जिससे, इन शब्दों का उपयोग करके शिशु बातचीत शुरु कर सके ।

# मद - 22

# दोहरे शब्दों की पदावली

## आयु: 19-24 महीने

### सामान्य

### मध्यस्थता :

- जब शिशु कई शब्दों को सीखता है, तब उन शब्दों को जोड़कर शब्दावली / पदावली / वाक्यांश बनाने की शिक्षा देनी चाहिए ।
- शिशु को कुछ कहने या पूछने का अवसर दें तथा उसे एक शब्दावली का नमूना देकर उसके विभिन्न रूप बनवाएँ । उसे आपके कहने के बाद दोहराने को कहिये ।
  **उदा:** जब शिशु को गोला चाहिये, वह गोला या 'बॉल' कहकर उसकी तरफ इशारा कर सकता है ।
- उपयुक्त नमूना होगा "ओह । तुमको यह गोला चाहिए ।"
- तब कहिये "गोला दो" या "मम्मी गोला" और शिशु को यह बात दोहराने को कहिये ।
- धीरे-धीरे ध्यान दीजिये कि शिशु अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक पदावली बोलता है न कि सिर्फ इशारा ही करता है । उस शिशु को उपयुक्त तौर से बढ़ावा दीजिए ।

# मद - 23 सरल वाक्य तथा 3 शब्दीय वाक्य
## आयु: 19-24 महीने

### सामान्य

- शिशु काफी मात्रा में शब्दों का ज्ञान प्राप्त करता है ।
- अब / इस अवस्था में शिशु 3 शब्दीय वाक्यों को जिनमें कर्ता, कर्म तथा क्रिया तीनों का समावेश हो ।

### महत्व

- शब्दज्ञान मे शीघ्र वृद्धि
- औपचारिक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का आरंभ
- वाक्य रचना का विकास होता है ।

### मध्यस्थता :

- इस आयु में शिशु सरल मौखिक प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो जाता है ।
  **उदा:** यदि शिशु "मम्मी दूध" कहता है तो आप उसे वाक्य का विस्तार करें "मम्मी मुझे दूध दो" ।
- स्वयं वार्तालाप समानांतर वार्तालाप प्रतिरूपण तथा विस्तारण जैसे विविध प्रकार की भाषा के अनुकरण तकनीकों का उपयोग करें ।
  **उदा:** यदि शिशु "मम्मी / पानी" कहता है, आप उसका विस्तार करके कहिये "मम्मी मुझे पानी दीजिए ।"

# मद - 24 शिशु 4-5 शब्दवाले वाक्यों का निर्माण करता है ।
## आयु: 25-36 महीने

## सामान्य

- सामान्यत: 2 वर्ष की आयु को पार करते ही कम से कम 4 शब्दों के वाक्य बोल सकता है ।
- इन शब्दों को जोड़कर अनेक प्रकार के व्याकरण युक्त रचनाएँ कीजिये ।
- प्रश्न, आदेश तथा कथनों का उपयोग होता है ।

## महत्व

- सामाजिक अभिव्यक्ति में वृद्धि ।
- वाक्य-रचना के विकास में सहायक होता है ।
- व्यावहारिकता विकास में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

जब शिशु 3-4 शब्दों वाले वाक्य उच्चरित करता है, आप वाक्य को विस्तारित करके उसे इस तरह आगे बढ़ायें ।

**उदा:** यदि शिशु "मुझे गोला चाहिये" कहता है तब उसे विस्तारित करके आप पूछें "क्या तुम्हें लाल रंग का बड़ा गोला चाहिए ।"

# मद - 25 मिश्रित वाक्यों का उपयोग करता है
## आयु: 25-36 महीने

### सामान्य

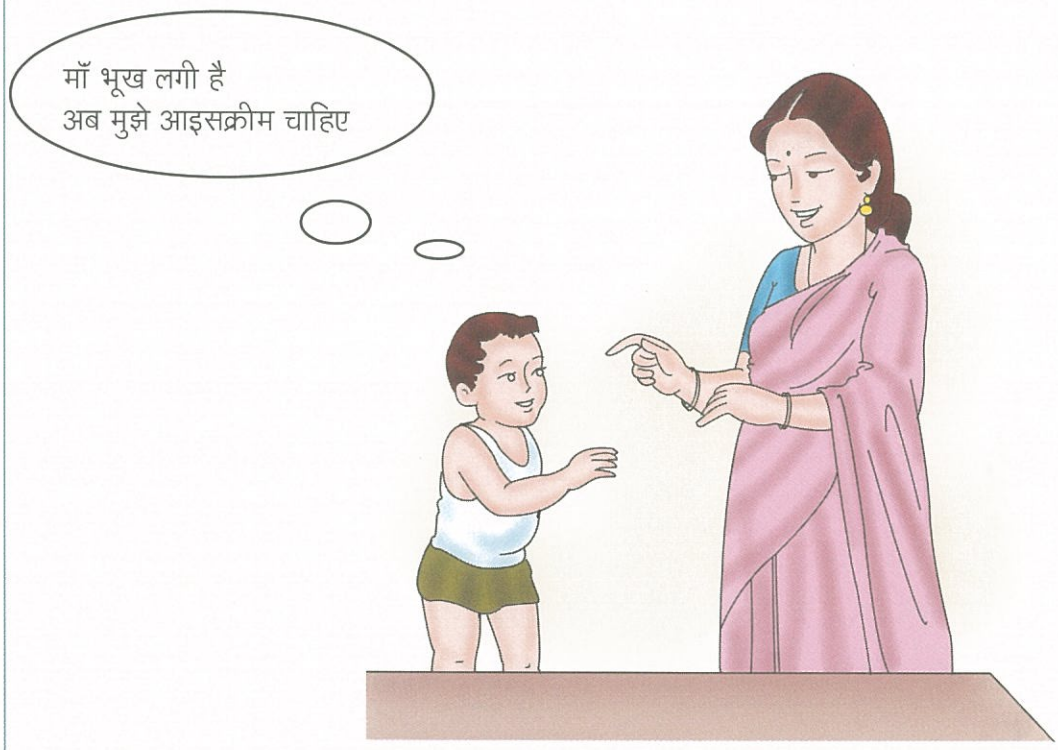


- शिशु नकारात्मक तथा प्रश्नों के विविध प्रकारों को 2½ से 3 वर्ष की आयु में उपयोग करता है ।
- अनुभव की अधिकता / अधिक्य के कारण शब्द ज्ञान बढ़ता है ।
- सरल वाक्यों की अवस्था से आरंभ करके क्रमश: वह मिश्रित वाक्यों का उपयोग करना आरंभ करता है।

### महत्व

- प्राथमिक वार्तालाप के कौशल दिखाई देते हैं ।
- वाक्य विन्यास में विकास जारी रहता है ।
- अर्थगत विकास में वृद्धि होती है ।
- व्यावहारिकता में विकास की वृद्धि होती है ।

## मध्यस्थता :

- एक नमूना देकर बात करने के लिए प्रेरित करने से शिशु मिश्रित वाक्यों को बोल सकता है ।
- स्वयं वार्तालाप, समानांतर वार्तालाप जैसे भाषा-प्रेरक तकनीक उपयोग में लाये जा सकते हैं ।
- शिशु की बातों में मिश्रित वाक्य तथा सरल सुधार का उपयोग करें ।
- स्वयं शोधन का प्रतिरूपण यानि जहाँ तत्पश्चात, उसे संशोधित करके मिश्रित वाक्य कहती है ।

**उदा:** राजू चाक तोड़ना.....नहीं, मेरा मतलब है
राजू ने चाक तोड़ा और उसके टुकड़े बाहर फेंके ।
राजू मुझे गोला दो .....नहीं, मेरा मतलब है
मुझे मेज पर रखा लाल रंग का बड़ा गोला दो ।

# सामाजिक

# सामाजिक

शिशुओं में सामाजिक भागीदार बनने की सहज प्रवृत्ति प्रतीत होती है ।

नवजात शिशु जन्म के तुरंत बाद माता की ध्वनियों को सुनने को वरीयता देता है ।

वे कई सामाजिक प्रतिक्रियाओं के काबिल होते हैं । **उदा:** नवजात शिशु अपनी (माता) मानव-ध्वनि को सुनते ही अपना सिर तत्परता से ध्वनि के स्रोत की ओर मोड़ता है तथा स्त्री की आवाज को वरीयता देता है तथा स्तन-पान के समय बीच-बीच में नियमित रूप से मानव-ध्वनि सुनने के लिए रुकता है । लेकिन अपनी माँ के दूध के लिए या दवाई, पानी या शकर के लिये नहीं रुकता (ब्राजेटन, 1976)

## I. सामाजिकीकरण की परिभाषा:

सामाजिकीकरण ऐसी भाषा है जिसके द्वारा, नवजात शिशु, संस्कृति में ढाला जाता है । तथा समाज में स्वीकार्य व्यक्ति बन जाता है । (स्मेलसर एवं स्मेलसर, 1913)

शिशु प्रतिदिन की अन्योन्यक्रिया से सामाजिक व्यक्ति बन जाता है ।

अंतत: रोदन या मानव से लिपटने की प्रवृत्ति की जगह सामाजिक व्यवहार के परिपक्व तरीके पुन: स्थापित करना चाहिए।

सामाजिक योग्यता / सक्षमता शिशु में सक्षमता है जो परिसर तथा व्यक्तिगत साधनों को एक अच्छे विकासशील निष्कर्ष को प्राप्त करने में सफल हैं । (वाटर्स एण्ड सूफ, 1983)

## II. विकासीय मील के पत्थर

| व्यवहार / प्रवृत्ति | आयु (महीनों में) |
|---|---|
| देखकर माँ को पहचानता है | 1 - 2 |
| सामाजिक मुस्कान | 2 - 3 |
| सामाजिक हँसी | 3 - 4 |
| समक्ष शिशुओं को देखता है और उनसे अन्योन्यक्रिया / पारस्परिक क्रिया करना आरंभ करता है । | 3 - 6 |
| बाँहों में आने के लिये तत्पर होता है | 5 - 6 |
| झाँक कर देखने का खेल खेलता है | 5 - 8 |
| अजनबियों से शर्माता है | 8 - 10 |
| थपकी मारने का खेल खेलता है | 9 - 10 |
| बाय-बाय करता है | 9 - 10 |
| पूछने पर गुड़िया देता है | 11 - 12 |
| नकारात्मकता का आरंभ | 18 - 24 |
| पारस्परिक क्रिया / अन्योन्य क्रिया के खेल खेलता है । | 24 - 30 |
| पर्यवेक्षण में कपड़े पहनता है | 30 - 36 |

एक शिशु अपने झूले में है । उसकी माँ उसपर झुककर उसको देखकर मुस्कुराती है । शिशु मुस्कुराकर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, तथा अपने हाथ पैर छटपटाता है । वास्तव में जो हमें शिशु द्वारा यादृच्छिक छटपटाहट की चेष्टा प्रतीत होती है, असल में उसके द्वारा की गई माँसपेशियों की गतिशीलता है जो, माँ की वाणी के अक्षरों के लहजे से पूरी तरह मेल खाती है । विलियम कान्डन के शब्दों में नवजात शिशु तुरंत ही तथा गहराई से अभिव्यक्ति में भाग लेता है और जन्मत: सामाजिक एकाकी नहीं है । इसे समकालिक अन्योन्य क्रिया कहते हैं।

यह तथ्य सूचित करता है शिशु जन्मत: ही सामाजिक होते हैं और वह सामाजिक अंतर्निहित है, शायद समकालिक अन्योन्यक्रिया संसूचनशील होती है । यह सामाजिक संबंधों को विकसित करने के लिए आवश्यक सामाजिक संपर्क तथा इकट्ठे रहने की आवश्यकता को दर्शाता है ।

## III. सामाजिक विकास के घटक:-

**शिशु संसूचना:-** शिशु कई प्रकार से संसूचित करते हैं: प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से कोलाहलपूर्ण तथा शांत, अभिव्यक्ति द्वारा तथा चेहरे के भावों द्वारा तथा इशारों से ।

**शैशव:-** शिशुओं में एक खास आकर्षण होता है । प्यारा शैशव, शिशुओं को ऐसे शक्तिशाली साधन से लैस करता है जो उनके पालन-पोषण के लिए आवश्यक है । शैशव-शिशु की उत्तरजीविता को सुनिश्चित करता है तथा वयस्कों को शिशु के पास रखता है तथा उसे खिलाने, आश्रय देने, तथा प्रेरणादायक बनाये रखता है । सामर्थ्य माता-पिता जिस तरह से शिशु से प्यार से बातें करते हैं तथा अतिशयोक्तिपूर्ण चेहरे के हाव-भाव, शिशुओं के खास तौर से शिशु को सीमित संवेदी के हिसाब से उपयुक्त लगता है । शिशु तथा माता-पिता का पारस्परिक आकर्षण बहुत ही प्रभावशाली तथा कुछ हद तक जीव-विज्ञान द्वारा निर्धारित होता है ।

**कौतुहल से देखना:** शिशु अपने आस-पास के लोगों का देखते हुए संप्रेषण करते हैं । जन्मत: ही शिशु बड़ी तथा पास की वस्तुओं को देख सकते हैं । जब शिशु को उसके माता-पिता अपने सीने से लगाते हैं, तब शिशु अपने दृष्टि-गवाक्ष से देख सकते हैं कि उन्हें सीने से लगाया गया है । माँ द्वारा दिलचस्प चेहरा बनाना तथा दृष्टि जो माँ दूध पिलाते समय या शिशु के साथ खेलने का समय शिशु के साथ सामाजिक तथा भावुक बंधन में बंधने के लिए करती है वह श्रेष्ठ सुअवसर है ।

## IV. विकासशील अनुक्रम:

- 6 सप्ताह में शिशु अपनी माँ की आँखों में चमकी अपनी चमकीली खुली आँखों को केन्द्रित कर देखता है।
- 3 माह की आयु में शिशु अपनी माँ के साथ दृष्टि संपर्क करके उसकी आँखों में कुछ सेकंड तक टकटकी लगाने के योग्य होते हैं, जिससे शिशु के प्रति उसकी माँ की अनुरक्ति और भी गहरी होती जाती है ।

*** दृष्टिहीन शिशुओं की माँएँ, जो शिशु की आँखों से संपर्क नहीं बना पातीं अपने बच्चे के प्रति लगाव उत्पन्न करने में उन्हें कठिनाई महसूस करती है । वे अपने शिशुओं को व्याकुल और प्रभावहीन पाती हैं ।**

अत: टकटकी लगाना ऐसा प्रभावशाली साधन है, जिसके द्वारा शिशु अपने माता-पिता से संप्रेषण कर सकता है ।

**3) स्वरोच्चारण (वोकलाइजिंग) :** स्वरोच्चारण ऐसा साधन है जिससे शिशु संप्रेषण करता है । पहले कुछ महीनों में शिशु के उच्चारण की ध्वनियाँ कुँजन तथा गड़गड़ाहट के रूप में होती हैं । जो खाना खाने के पश्चात या झपकियों के बाद घटित होती हैं । जब शिशु विश्रांत अवस्था में हो या माँ की गोदी में सुने हुए शब्दों या ध्वनियों का अनुकरण करते हैं तथा अपनी बड़बड़ाहट का अपने माता-पिता की वाणी के साथ समक्रमिकता (सिंक्रोनाइज) करते हैं शिशु के उच्चारण अपने माता पिता के साथ संसूचना करने का साधन बनते हैं ।

**4) मुस्कुराहट:** यह शिशु का सर्वप्रथम व्यवहार है । शिशु के प्रथम अर्ध-वर्ष की आयु में मुस्कुराहट सामाजिक विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है ।

**शिशु की मुस्कुराहटों को दो वर्गों में बाँटा गया है ।**

- अंतर्जात
- बहिर्जात

कभी-कभी नवजात शिशु अपनी निद्रा में मुस्कुराते हुए दिखाई देते हैं । इन मुस्कुराहटों को अंतर्जात कहते हैं क्योंकि, ये परोक्ष हैं तथा भीतर से नियंत्रित होते हैं । ये केन्द्रीय स्नायुविक तंत्र (सेंट्रल नर्वस सिस्टम) की क्रियाशीलता को उत्तेजित करने की मात्रा में बदलाव से उत्पन्न प्रतीत होते हैं ।

### विकासात्मक अनुक्रम :-

प्रथम सप्ताह या दो सप्ताहों के पश्चात या दोनों के पश्चात जोरदार आवाज में शिशु से बातचीत या शिशु के पेट में फूँक मारने जैसे सौम्य प्रेरक शिशु के अन्य प्रकार की मुस्कुराहट को उत्पन्न करता है । ऐसी प्रेरणा, स्पष्टता या स्नायु संबंधी उत्तेजना को बढ़ाता है । जैसे ही शिशु शिथिल हो जाता है 6-8 सेकंड में छोटी सी मुस्कान उसके चेहरे पर आती है । यह प्रेरक बहिर्वात होते हैं तथा ऐसे प्रेरकों के स्रोतों से प्रेरित होते हैं, जो शिशु के बाहरवाले होते हैं । पहले उत्पन्न हुई मुस्कुराहटें जो स्वैच्छिक हैं, केवल मुख के छोरों तक सीमित पाक्षिक मुस्कुराहटें होती हैं ।

दूसरे सप्ताह: जीवन के दूसरे सप्ताह में शिशु जब मुस्कुराता है, जब उसकी आँखे खुली रहती हैं । ऐसी मुस्कुराहटें अक्सर तब होती हैं जब शिशु भोजन के बाद तृप्त तथा निद्राजनक होते हैं या उसकी आँखें भावशून्य होती हैं । ऐसी मुस्कुराहटें स्वैच्छिक होती हैं या देखभालकर्ता की वाणी से प्रेरित होती हैं ।

तीसरे सप्ताह की आयु में शिशु मुस्कुराते हैं । तब वे पूर्ण रूप से जगे हुए तथा सावधान रहते हैं । ये मुस्कुराहटें संपूर्ण तथा अभिव्यक्ति पूर्ण होती हैं । केवल ध्वनि के ही सहारे नहीं बल्कि जोरदार आवाज के साथ हिलता हुआ सिर, शिशु को मुस्कुराने के लिए प्रेरित करता है ।

चौथे या पाँचवें सप्ताह में शिशु हिलते हुए मौन चेहरे, वस्तुओं के अचानक प्रकट होने या अभिनय क्रीड़ाओं की प्रतिक्रिया में शिशु मुस्कुराते हैं । इस अवस्था में मुस्कुराहट उत्पन्न करने के लिए ध्वनियाँ अधिक प्रभावी होती हैं ।

वोल्फ (1963) के अनुसार, मानव की ध्वनि के उत्तर में घटित होने वाली पहली मुस्कुराहट ही शिशु की प्रथम सामाजिक मुस्कुराहट की शुरुआत है ।

3-6 माह की आयु में शिशु अपनी मुस्कुराहट की प्रक्रिया में अधिक विभेदकारी हो जाता है ।

अत: यह बात स्पष्ट है कि मुस्कुराहट का विकास शिशु की बढ़ती हुई ज्ञानात्मक जानकारी तथा सुविज्ञता का परिचायक है ।

**5) हँसी:** शिशु प्रारूपिक तौर पर 6 सप्ताह तथा 3 माह की आयु के बीच में हँसना आरंभ करते हैं ।

**विकासात्मक अनुक्रम:**

प्रारंभिक दौर में शिशु केवल गुदगुदी तथा अत्यधिक ध्वनियों जैसे प्रेरकों की प्रतिक्रिया में हँसता है ।

जीवन की दूसरी छमाही में, शिशु दृष्टि तथा सामाजिक प्रेरकों तथा लुका छिपी या माँ के द्वारा अपने बालों को लहराने जैसी अन्योन्यक्रियाओं से हँसता है ।

अपनी आयु के दूसरे वर्ष में शिशु ऐसी वस्तुओं को देखकर हँसता है, जिसमें वह स्वयं भाग ले सकता हो जैसे, बाहर निकली हुई जीभ तक पहुँचने का प्रयत्न । भौतिक प्रेरकों द्वारा उत्पन्न हुई हँसी से आगे बढ़कर शिशु ज्ञानात्मक निर्वेचन की ओर अग्रसर होता है, हँसी का विकास, शिशुओं तथा आस-पास के परिसर के बीच एक ऐसा महत्वपूर्ण काम करता है जो उसे ऐसी परिस्थितियों में भी तनाव-मुक्त रखती है जो, अन्यथा बहुत परेशान करनेवाली हो सकती है । अत: हँसी ज्ञानात्मक विकास तथा भावात्मक विकास तथा अभिव्यक्ति के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी बन जाती है ।

**6) रोदन:** स्नायविक तंत्र नर्वस सिस्टम द्वारा उत्पन्न होनेवाले अत्यंत उत्तेजन की स्थिति को रोदन का निर्वाचन दिया गया है । भूख, पीड़ा, बीमारी, तिरस्कार या प्रेरण उत्तेजन के लिए आवश्यक प्रारंभिक वैयक्तिक भिन्नताओं तथा अविच्छिन निद्रा जैसे जीव विज्ञान संबंधी आशंकाओं द्वारा उत्पन्न होता है । रोदन ऐसी प्रतिक्रियात्मक क्रिया है, जो उत्तरजीविता के रूप में आरंभ होती है और जिसका उत्तरजीविता का मूल्य है । यह देखभालकर्ताओं द्वारा पालन-पोषण या संरक्षण की प्राप्ति करने के लिए अभिकल्पित क्रिया है ।

## विकासात्मक अनुक्रम:

6 वर्ष की आयु तक शिशु का रोदन प्रतीकात्मक तौर पर बढ़ता जाता है । तत्पश्चात् जैसे-जैसे शिशु की आयु बढ़ती है, धीरे-धीरे यह घटती है । शिशु के व्यवहार संगठन सामान्य शारीरिक क्रिया के लिए कुछ मात्रा में रोदन आवश्यक होता है ।

सामाजिक तौर पर रोदन का क्रियात्मक महत्व शिशु की बढ़ती आयु के साथ बदलता रहता हैं । जीवन की प्रथम छमाही में वह अपनी शारीरिक तथा मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोदन को एक साधन के रूप में उपयोग करता है।

यह एक ऐसा साधन भी है जो उसकी देखभालकर्ता को सूचित करता है कि वह अकेला रहने का इच्छुक है । तनाव या ऊर्जा के निर्मूलन के लिये उपयोग किया जा सकता है । फिर भी, ऐसे अवसर भी होते हैं, जब शिशु बिना किसी स्पष्ट कारण के भी रोते हैं ।

शिशुओं का न समझ में आनेवाला रोना 3-12 सप्ताह की आयु में मस्तिष्क में होनेवाले परिपक्वन संबंधित परिवर्तनों के कारण भी हो सकता है, मुस्कुराहट की तरह उत्तेजन तथा नियंत्रण आंतरिक साधनों के पश्चात बाह्य साधनों से भी होने लगता है ।

जन्म के प्रारंभिक समय में, शिशु आरंभिक रोदन इसलिए करता है क्योंकि, वह भूखा होता है या बहुत अधिक गर्मी या सर्दी होती है या कुछ शारीरिक असुविधा उसे परेशान करती है ।

जैसे-जैसे शिशु की आयु बढ़ती है, उसके रोने का कारण जोर की आवाजों या अस्पष्ट वस्तुओं को या छाया को देखकर, खिलौनों से ऊबकर, अनजान लोगों से डर कर तथा माँ के न दिखाई देने पर बढ़ते हुए शिशु के रोने के कई कारण हो सकते हैं । धीरे-धीरे केवल, शारीरिक आवश्यकताओं के लिए ही न होकर, शिशु का रोदन उसके ज्ञानात्मक तथा भावात्मक कार्यकलापों से अधिक संबंधित होता है ।

**7) चेहरे बनाना या इशारे करना:** अन्य व्यक्तियों से शिशु के संचार का एक और साधन है अपने कंधों तथा पैरों से या अपने चेहरे की अभिव्यक्ति से अपने तेवर से या चेहरे की शिकन से या अपने तड़क- भड़क से या मुँह बनाकर कम आयु के शिशुओं की अभिव्यक्ति भी ऐसी होती है जैसे वयस्कों जैसी खुशी, नाराजगी, उल्लास, आश्चर्य, दुख तथा घृणा व जुगुप्सा उनके चेहरे से अभिव्यक्त होती है ।

### माता-शिशु की पारस्परिक / अन्योन्य क्रिया:

माता शिशु का रिश्ता शिशु के जन्म से पहले से ही आरंभ हो जाता है । जैसे ही गर्भधारण की सम्पुष्टि हो जाती है, माता-पिता अपने शिशु का प्रतिरूप बना लेते हैं । अपने होने वाले शिशु के साथ कैसे व्यवहार करेंगे, उसका भी प्रतिरूप तैयार कर लेते हैं ।

माता-पिता तथा शिशु के बीच में निरंतर होनेवाली सामाजिक पारस्परिक क्रिया, एक गहरे समन्वय तथा सामूहिक कार्य का नमूना होता है जिसमें, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से पहले एक-दूसरे की पारस्परिक क्रिया को खत्म करने की प्रतीक्षा होती है । इस तरह की गहरी समन्वित पारस्परिक क्रिया को परिरक्षक-शिशु समक्रमिकता कहते हैं ।

केवल कुछ ही सप्ताह की आयु के शिशु भी निरंतर अपनी माँ की आँखों में आँखें मिला या आँख फेर लेने की क्षमता रखते हैं तथा ध्वनियाँ उत्पन्न करने या शारीरिक चेष्टाएँ करने के लिए माता के बाद अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं ।

शिशु अपना प्रारंभिक संपर्क अपनी माँ के साथ, जो उसके भोजन, सुख-सुविधा तथा ध्यान का प्राथमिक स्रोत है उससे ही करता है ।

अधिकतर शिशुओं के लिए माता ही प्रारंभिक सामाजिक तथा भावात्मक अनुभव प्रदान करती है, जो उसको संतुष्ट ही नहीं रखती अपितु उसके लिए लाभप्रद भी होती है । माँ और शिशु के बीच की गहरी पारस्परिक क्रिया के कारण शिशु अपनी माँ को घबराने वाले परिसर में एक पृथक तथा अनुपम व्यक्ति के रूप में पहचान पाता है ।

## IV) समकक्ष शिशुओं के साथ सामाजिक व्यवहार:

शिशु की समकक्षों के साथ सामाजिक प्रक्रिया आरंभ होती है । छोटे बच्चे या शिशु टकटकी, मुस्कुराहट या कुंजन द्वारा अन्य शिशुओं के प्रति अपनी ही दिलचस्पी दिखलाते हैं, जितना अपने माता-पिता के साथ शिशु अपने जीवन के प्रारंभिक समय से ही होते हैं वैसे ही अन्य शिशुओं से प्रभावित होते हैं । जैसे-जैसे अन्य क्षेत्रों में उनकी निपुणता पूरी तरह विकसित होती है, उनकी पारस्परिक क्रिया और अधिक सामाजिक तथा जटिल बन जाती है ।

इन पारस्परिक क्रियाओं की बारंबारिता तथा जटिलता ऐसे शिशुओं में और भी अधिक होती है जो एक दूसरे को पहचानते हैं और बड़े समुदाय के बजाय द्विसंयोजकों में खेलते हैं । शिशु जब अनजानी जगह की बजाय जाने पहचाने विन्यास में होते हैं, तब वे अपने समकक्ष शिशुओं के साथ अधिक अन्योन्यक्रिया करते हैं उपलब्ध खिलौने तथा खिलौनों के किस्म, समकक्ष शिशु के साथ पारस्परिक क्रिया को प्रभावित करते हैं ।

ऐसे शिशु जो अपनी माताओं के साथ सुरक्षित तौर से जुड़े हुए होते हैं, समकक्ष शिशुओं के साथ प्रभावशाली पारस्परिक क्रिया करने में सक्षम होते हैं । सामाजिक तौर पर सक्षम शिशुओं के माता-पिता सामाजिक तौर पर सक्षम होते हैं ।

किसी व्यक्ति की जावकता सामाजिक स्वतंत्रता तथा अन्य व्यक्ति में भावात्मक निवेश आदि इन प्रारंभिक सामाजिक अनुभवों के परिणाम पर आधारित होता है ।

केवल भूख को मिटाने के लिए किये गये उपायों से ही शिशु का उसकी माँ के साथ लगाव को नहीं दर्शाता, सुख तथा स्नेह देने वाले किसी भी स्रोत के साथ संपर्क स्थापित करने की आवश्यकता के द्वारा ही माँ के प्रति शिशु की अनुरक्ति बढ़ती है ।

## V) अनुरक्ति का विकास:

एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति अनुराग ही अनुरक्ति है ।

**अनुरक्ति के निर्माण के पड़ाव :**

1) प्रथम पड़ाव शिशु के जीवन के प्रथम दो माह को असामाजिक या पूर्व अनुरक्ति पड़ाव कहा जाता है । इस अवधि में शिशु अपने परिसर के मानवीय तथा निर्जीव दोनों लक्षणों के प्रति प्रतिक्रियाशील होता है । उत्तेजना तथा संतुष्टि के आधार पर शिशु विविध प्रकार के सामाजिक तथा असामाजिक प्रेरकों के प्रति उत्तरकारी होते हैं।

2) दूसरे पड़ाव में शिशु अपने-अपने परिसर के सभी व्यक्तियों के प्रति अपनी अनुरक्ति प्रदर्शित करते हैं यानि अंधाधुंध अनुरक्ति का प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति व्यक्त करते हैं ।

3) तीसरे पड़ाव को विशिष्ट अनुरक्ति या सुस्पष्ट अनुरक्ति के नाम से जाना जाता है । शिशु अपने सात माह की आयु तक तथा प्रथम जन्मदिन तक, एक विशिष्ट व्यक्ति, अधिकतर अपनी माता के प्रति विशिष्ट रूप से अनुरक्त होता है।

4) चौथे पड़ाव में लक्ष्य निर्देशित साझेदारी होती है । यह पड़ाव शिशु के जीवन के दूसरे वर्ष में आरंभ होकर क्रमश: और जटिल होता जाता है । इस समय शिशु अनुरक्ति के लक्ष्य के प्रति अपने माता-पिता के व्यवहार को और अच्छी तरह से जान सकता है ।

**अनुरक्ति के प्रकार (ऐन्सवर्थ):**

- अनुरक्ति की सुनिश्चितता
- उत्सुक विरोधी अनुरक्ति
- उत्सुक परिहार्य अनुरक्ति

## अनुरक्ति व्यवहार के पड़ाव

| क्रम सं. | अनुरक्ति व्यवहार का प्रकार | सन्निकट आयु सप्ताह में | शिशु की गतिविधि |
|---|---|---|---|
| 1 | अंतरीय रोदन | 12 | माता के अतिरिक्त किसी और के उठाने पर रोता है । |
| 2 | अंतरीय मुस्कुराहट | 32 | अन्य व्यक्तियों की तुलना में माता को देखकर तुरंत मुस्कुराता है। |
| 3 | अंतरीय उच्चारण | 20 | अन्य व्यक्तियों की तुलना में माँ को देखकर ही तुरंत बोल पड़ता है । |
| 4 | दृष्टि मोटर अनुस्थापन | 25 | माँ से दूर होने पर अपनी दृष्टि से माता का अनुसरण करता है । |
| 5 | अनुसरण | 25 | रेंगते हुए माता का अनुसरण करता है। |
| 6 | हाथ पैर के बल चढ़ना | 30 | माँ के शरीर पर चढ़कर उसके शरीर की छानबीन करता है । |
| 7 | मुँह को छिपाना | 30 | माँ की गोद में अपना मुँह छिपाता है । |
| 8 | माँ के पास रहकर ही अन्य वस्तुओं की छान-बीन करता है। | 33 | माँ के आसपास की अन्य वस्तुओं की छानबीन के लिए माँ की गोद से निकलता है परंतु बीच-बीच में वापस गोद में आ जाता है । |
| 9 | लिपटे रहना | 33 | बीमारी के समय अजनबियों को देखकर माँ से लिपटे रहता है । |
| 10 | अभिवादन के लिए हाथ ऊपर उठाता है । | 22 | हाथ उठाकर, मुस्कुराता है तथा माँ की अनुपस्थिति में उच्चारण करता है । |
| 11 | अभिवादन के लिए हाथ से ताली बजाता है । | 40 | अनुपस्थिति के पश्चात माँ के लौट आने पर हाथ से ताली बजाता है । |
| 12 | पास पहुँचना | 30 | माँ की अनुपस्थिति के पश्चात वापस आते ही चलकर माँ तक पहुँचता है । |

(ऐन्स्वर्थ से रूपांतरित, 1964)

## अनुरक्ति तथा सामाजिक विकास:

ऐसे शिशु जो अपनी माँ के व्यवहार से आश्वस्त होते हैं कि वह सुरक्षित है, इसी सुरक्षा के आधार पर तत्पश्चात वह नये सामाजिक संबंध स्थापित कर सकता है ।

## सुरक्षित रूप से अनुरक्त शिशुओं के लक्षण

1. शिशु अपने परिसरों को अधिक खोज सकता है ।
2. शिशु समकालिक शिशुओं का नेता बन सकता है ।
3. सामाजिक आचरण में आवेष्टित होना ।
4. सक्रिय रूप से परिसरों में जुटे रहना ।
5. अन्य व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करना ।
6. अधिक व्यक्तिगत क्षमता प्रदर्शित करना तथा समकक्ष शिशुओं का अनुमोदन प्राप्त करना ।

- माँ के साथ सुरक्षित तौर पर अनुरक्तित शिशु आगे चलकर परिपक्व वयस्क बनते हैं तथा इस सुरक्षा के अभाव में शिशु चिंताग्रस्त, अत्यधिक परावलम्बित तथा अपरिपक्व होते हैं ।

## VI) शिशु के सामाजिक तौर पर सक्षम बनने के लिए आवश्यक क्षमताएँ:

- सामाजिक तौर पर स्वीकार्य तरीकों से वयस्कों के ध्यान को आकर्षित करके उसे जारी रखना ।
- जब उपयुक्त हो, स्नेह तथा झुँझलाहट का प्रदर्शन करना ।
- यदि कोई कार्य इतना कठिन हो कि स्वयं से नहीं हो सके तो वयस्कों की सहायता लेना ।
- व्यक्तिगत उपलब्धियों को प्रदर्शित करके गर्व महसूस करना ।
- भूमिका अदा करना तथा ऐसी गतिविधियाँ करना जिससे विश्वसनीयता उत्पन्न करने का प्रयत्न हो ।
- समकक्ष शिशुओं का नेतृत्व तथा अनुसरण करना ।
- समकक्ष शिशुओं के साथ होड़ लगाना ।

## VII) सामाजिक विकास को बढ़ावा देनेवाली गतिविधियाँ:

- **आदर्श वयस्क**- माता-पिता तथा अन्य वयस्क, सकारात्मक तथा उत्तरदायी व्यवहार । पारिवारिक समर्थन- पारिवारिक जीवन अत्यधिक स्नेह तथा समर्थन प्रदान करता है ।
- **सकारात्मक पारिवारिक संचार**- माता-पिता, शिशुओं से सकारात्मक तरीके से संचार करते हैं और शिशुओं के प्रति यथोचित समय में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं तथा उनकी आवश्यकताओं का सम्मान करते हैं ।
- **अन्य वयस्क संबंध** - माता-पिता को तीन या अधिक वयस्कों का समर्थन प्राप्त होता है तथा आवश्यकता पड़ने पर सहजता माँगते हैं । शिशु अपने माता-पिता के अतिरिक्त, कम से कम एक अन्य वयस्क से अतिरिक्त स्नेह तथा सांत्वना प्राप्त होती है ।
- **स्नेहशील पड़ोस**- शिशु पड़ोसियों से प्यार पाते हैं ।
- **स्नेहपूर्वक घर के बाहर का वातावरण** - अपने घर के बाहर भी शिशु स्नेहपूर्वक वातावरण में पलते हैं ।
- **घर के बाहर की परिस्थितियों में माता-पिता का आवेष्टन** - अपने बच्चों को घर के बाहर की परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करने में माता-पिता सहायक होते हैं । माता-पिता अपने बच्चों की आवश्यकताओं को घर के बाहर बच्चे की देखभालकर्ता को बताते हैं ।
- **समाज बच्चों को महत्व देता है** - माता-पिता अपने बच्चों का परिवार के केन्द्र-बिंदु की तरह देखभाल करते हुए उनकी सीमाओं को तय करते हैं । समाज अन्य वयस्क बच्चों को महत्व देता हैं तथा उनका आदर करता है ।

- **बच्चों को उपयोगी भूमिका दी जाती है** - बच्चों को पारिवारिक जीवन में शामिल किया जाता है ।
- **वयस्क आदर्श** - माता-पिता तथा अन्य वयस्क, सकरात्मक तथा उत्तरदायी आचरण के प्रतीक होते हैं।
- **उत्तेजक गतिविधि** - माता-पिता बच्चों को उभरते हुए कौशल के अनुरूप उत्तेजक खिलौने देकर उनको प्रोत्साहित करते हैं । माता-पिता अपने बच्चों तथा विकास के परिमाण के प्रति संवेदनशील होते हैं ।
- **सकारात्मक समकक्ष लोगों का अवलोकन** - बच्चे अपने भाई बहन तथा अन्य बच्चों को सकारात्मक रूप से पारस्परिक क्रिया करते हुए अवलोकन करते हैं । उन्हें विभिन्न आयु के बच्चों के साथ पारस्परिक क्रिया करने का अवसर मिलता है ।
- **विभिन्न व्यक्तियों का अवलोकन** - माता-पिता अन्य व्यक्तियों के साथ सकारात्मक तथा निर्माणात्मक पारस्परिक क्रिया करते हैं । बच्चें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन शब्दों तथा क्रियाओं का उपयोग करते हैं, उन अभिव्यक्तियों द्वारा उनकी आवश्यकताओं को समझकर उनकी पूर्ति की जाती है ।
- **परिवार स्वस्थ जीवनशैली का मूल्यांकन करता है** - माता-पिता अपने बच्चों से प्यार करते हैं जिससे बच्चों में संबंधों के प्रति स्वस्थ मनोवृत्तियाँ तथा धारणाएँ विकसित होती हैं । माता-पिता, आदर्श स्थापित करके पर्यवेक्षण करके बच्चों को अच्छे स्वास्थ्य संबंधी आदतें पौष्टिक आहार के विभिन्न प्रकारों के बारे में सिखाकर उनको पर्याप्त विश्राम तथा विनोद का समय देते हैं ।
- **रचनात्मक गतिविधियाँ** - माता-पिता अपने बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप प्रतिदिन संगीत, कला तथा अन्य रचनात्मक कार्यों की ओर उद्‌भासित (एक्स्पोज) करते हैं ।
- **घर पर सकारात्मक तथा पर्यवेक्षित समय** - माता-पिता सर्वदा अपने बच्चों का पर्यवेक्षण करके उन्हें जाने पहचाने विनोदभरित घर के कार्य सौंपते हैं ।
- **पारिवारिक सीमाएँ** - माता-पिता को बच्चों की अभिरुचियों तथा वरीयता के बारे में जानकारी होती है तथा अपने बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप परिसरों में बदलाव लाते हैं और उनकी आयु के अनुरूप सीमाएँ निर्धारित करते हैं ।
- **विकास की उपयुक्त अपेक्षाएँ** - माता-पिता को अपने बच्चों के विकास के लिए वास्तविक अपेक्षाएँ होती हैं । बच्चों को उनके स्वयं की क्षमताओं के दायरे में ही बच्चों को विकास की ओर प्रोत्साहित करते हैं ।
- **परिवार स्वाभिमान का प्रतीक** - माता-पिता ऐसा वातावरण उत्पन्न करते हैं, जिससे बच्चे साकारात्मक स्वाभिमान विकसित कर सकते हैं । अपने बच्चों के अंतर्निहित कौशल तथा क्षमताओं के बारे में माता- पिता को सकारात्मक पुनर्निवेशन देना चाहिए ।

# "मध्यस्थता संवेष्टन"

(परिशिष्ट - बी
पर संलग्न परीक्षण-सूची अनुरूप ये संवेष्टन है
मध्यस्थताएँ हरेक मद के लिए है, जिनका अनुसरण शिशु के द्वारा सामान्य
रूप से विकसित न करने पर किया जा सकता है ।)

आवेष्टित समस्याएँ

मध्यस्थता : मध्यस्थता

दृष्टि क्षति

श्रवण क्षति

# सामाजिक

## मद - 1 व्यक्तियों के चेहरे की ओर एक क्षण देखता है

आयु: 0-3 महीने

### क्षेत्र : अनुरक्ति

#### सामान्य

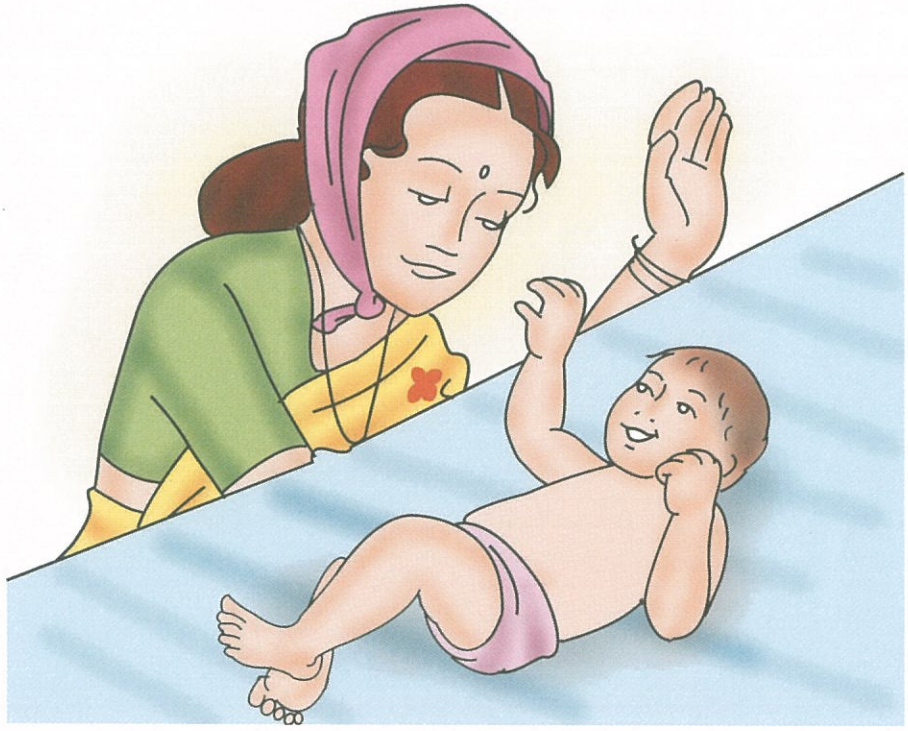

शिशु अपने आसपास के लोगों को एकटक देखते हुए उनसे संप्रेषण करते हैं । जन्म लेते ही शिशु बड़ी-बड़ी तथा पास की वस्तुओं को देख सकते हैं । जब शिशुओं को छाती से लिपट कर लगाया जाता है, शिशु अपने आप को अपने माता-पिता द्वारा उतनी दूरी से छाती से लगा हुआ देखते हैं जो शिशु के दृष्टि गवाक्ष के दायरे में होता है। शिशु को दूध देते समय माँ के चेहरे पर जो आसक्तिपूर्ण हाव-भाव होता है, शिशु के लिये अपनी माँ के साथ सामाजिक तथा भावात्मक संबंध बनाने का सुअवसर प्राप्त होता है ।

#### महत्व

सामाजिक संबंध विकसित करना शिशु का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है । किसी व्यक्ति के चेहरे की ओर देखने की चेष्टा करना, जीवन भर के संबंधों को बनाने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को बिठाइए और उसे अपने आस-पास के परिसर को देखने दीजिए । उसके दृष्टि-क्षेत्र में चलते हुए देखें कि वह आपकी गतिविधि का अनुसरण कर रहा है या नहीं ।
- शिशु से बात कीजिये तथा मुस्कुराइये या आवाज करने वाले वस्तु का उपयोग कीजिये ताकि शिशु आवाज की दिशा की ओर देखे ।
- बच्चे से बात करते हुए तथा मुस्कुराते हुए उसके बिलकुल पास बैठकर उसका ध्यान आकर्षित कीजिये । धीरे-धीरे बच्चे की दृष्टि रेखा की ओर अपनी दृष्टि रखकर उसके साथ आँख मिलाने का प्रयत्न कीजिए । बच्चे की प्रशंसा करते रहिये तथा जैसे ही वह अपनी दृष्टि को केन्द्रित करने में सफल हो जाये आगे बढ़िए ।
- किसी वस्तु को बच्चे के सामने लटकाइए तथा उसी समय उसके साथ बात कीजिए ।
- जब उसके पास पहुँचते है मुस्कुराते हुए धीरे से बात कीजिये और शांति बनाये रखने को प्रोत्साहित करें ।

# मद - 2 छूने पर / बात करने पर / देखने या आवाज सुनने पर मुस्कुराता है या आवाजें निकालता है ।

आयु: 0-3 महीने

## क्षेत्र : अनुरक्ति

### सामान्य

**विकास:मुस्कुराहट :** यह बच्चे के सर्व प्रथम व्यवहारों में से एक होता है । शिशु के जीवन के प्रथम महीने में होनेवाले सामाजिक विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है ।

शिशु की मुस्कुराहट दो वर्गों में बाँटी गई है ।

1. अंतर्जात
2. बहिर्जात

कभी-कभी नवजात शिशुओं को सोते समय मुस्कुराते हुए देखा जा सकता है । ऐसी मुस्कुराहट को अंतर्जात या स्वत: प्रवर्तित मुस्कुराहटों के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह निशष्चेष्ट या भीतर से नियंत्रित होता है तथा केन्द्रीय स्नायविक व्यवस्था के उत्तेजन के बदलाव के कारण होता है । ऐसी मुस्कुराहट शिशु की चेतना से परे होती है तथा खुशी का संकेत नहीं होता है ।

शिशु के जन्म के प्रथम या दूसरे सप्ताह के पश्चात् सौम्य प्रेरणा तथा जोर से बात करने तथा शिशु के पेट में फूँकने से एक और हँसी उभर कर आती है । शिशु ऐसी प्रेरणा उसकी केन्द्रीय स्नायविक व्यवस्था में उत्तेजना पैदा करता है । शिशु के विश्राम करने के 6-8 सेकंड में ही एक छोटी सी मुस्कुराहट चेहरे पर आती है । ऐसी प्रेरणा को बहिर्जात कहा जाता है क्योंकि, यह शिशु के बाहर से आती है । ऐसी प्रारंभिक मुस्कुराहटें, स्वत: प्रवर्तित जैसे मुस्कुराहटें केवल पाक्षिक मुस्कुराहटें है जो मुँह के कोने से आरंभ होती हैं ।

शिशु के जीवन के दूसरे सप्ताह में वह आँखें खुली रखकर हँसता है । ऐसी मुस्कुराहटें तब होती हैं, जब खाने के साथ बैठा, वह उनींदा या निद्रालु अवस्था में होता है । ऐसी मुस्कुराहटें या तो स्वत: ही आती हैं या देखभाल करने वाले की आवाज द्वारा उत्पन्न की जा सकती हैं ।

शिशु के जीवन के तीसरे सप्ताह में शिशु अपनी चेतनावस्था में तथा सतर्कता की अवस्था में मुस्कुराना आरंभ करता है । मुस्कुराहटें अभिव्यक्तिपूर्ण होती हैं । सिर हिलाते हुए जोरदार आवाज में बातचीत करने पर उसके चेहरे पर मुस्कुराहट उभर कर आती है ।

4 या 5 सप्ताह की आयु वाले शिशु शांत हिलते हुए चेहरों, अचानक दिखाई देने वाली वस्तुओं तथा चालू पुरजों का खेल देखकर मुस्कुराते हैं । इस अवस्था में मुस्कुराहट उत्पन्न करने के लिए अधिक दृश्यों का महत्व होता है ।

वोल्फ (1963) के अनुसार, 3-4 सप्ताह की आयु में मानव-ध्वनि की प्रतिक्रिया में जीवन की प्रथम मुस्कुराहट से उसकी सामाजिक मुस्कुराहट आरंभ होती है ।

3-6 महीनों की आयु के बीच, शिशु अपनी मुस्कुराहट के व्यवहार में अधिक विभेदकारी हो जाते हैं । स्पष्ट रूप से मुस्कुराना शिशु के बढती संज्ञान जागरूकता और दुनियादारी से संबंधित है ।

## महत्व

ये ध्वनियाँ शिशु की आवाज का उपयोग करने का पहला प्रयत्न है । जैसे ही शिशु नयी आवाज करना सीखता है, तथा अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होते हुए देखता है, वह और अधिक नयी आवाजें पैदा करता है ।

## मध्यस्थता :

- शिशु को खिलाते समय, पोतड़े बदलते समय तथा उठाते समय उसके साथ सौम्यता से बात करते हुए बार-बार मुस्कुराएँ ।
- धीरे से उसके पेट में गुदगुदी कीजिए जिससे उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आये ।
- शिशु के मुस्कुराते ही आप भी मुस्कुराएँ तथा हँसते हुए बात कीजिये ।
- शिशु के निद्रा से उठने के बाद तथा कहीं जाते समय मुस्कुराकर अभिवादन कीजिये ।
- शिशु के साथ चलते समय या लेटते समय रुककर उसकी नाक को पकड़ कर मुस्कुरा के कहिये जरा मुस्कुरा देना बेटा ।
- शिशु के पास पहुँचते समय हमेशा मुस्कुराएँ । उसकी आँखों से आँखें मिलाकर मुस्कुराएँ तथा उसे शाबाशी दें ।

## संशोधन

**दृष्टि क्षति :** शिशु से बार-बार मीठी अवाज में बात कीजिये । उसके सामने गाना गाइये । जब शिशु कुंजन के साथ तथा अन्य संतोष भरी ध्वनियाँ करता है, तब उसकी नकल कीजिये ।

# मद - 3 खेलते हुए हाथ पैर मारता है

## आयु: 0-3 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

शिशु अपने हाथ और पैरों को असमन्वित तथा यादृच्छिक तौर पर घुमाते हैं। गर्भ में भी शिशु अपने हाथ पैर मार कर लात मारता है या दबाव डालता है । जन्म के बाद भी ये सारी क्रियाएँ जारी रहती हैं, परंतु नियंत्रित, उद्देश्यपूर्ण तथा परिपक्व होती है । शिशु की सारी प्रतिवर्तित क्रियाएँ होती हैं। शिशु को पता ही नहीं होता कि उसके हाथ पैर उसके अभिन्न अंग हैं तथा वह उन्हें नियंत्रित कर सकता है । परंतु उसे शरीर के भीतरी संवेदन का आभास होता है ।

### महत्व

शिशु की उत्तरकालीन गतिशीलता चालक एकीकरण द्वारा ही संभव है । शिशु अपने शरीर को लुढकाने, रेंगने तथा बैठने के लिए सारे शरीर का एक साथ उपयोग करना सीखना चाहिए ।

### मध्यस्थता :

- शिशु को उसकी पीठ के बल लिटाएँ तथा उसके सामने एक खिलौना हिलाते हुए लटकाइये । जैसे ही वह अपने हाथ उठाये, खिलौने को उसके और पास ले जाएँ ताकि वह खिलौने को छू सके ।
- यदि शिशु अपने हाथ ऊपर नहीं उठाता है, कभी-कभार उसको हाथ उठाने को प्रेरित करें । विभिन्न खिलौने खास कर के दिलचस्प आवाजें उत्पन्न करने वाले खिलौनों द्वारा उसको आकर्षित कीजिये ।

# मद - 4 किसी के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखकर वह भी मुस्कुराता है । आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : अनुरक्ति

### सामान्य

शिशु जब वयस्कों को मुस्कुराते हुए देखता है तो उसे लगता है कि वह भी मुस्कुरा सकता है तथा वयस्कों का ध्यान आकर्षित करता है । जन्म लेने के बाद शिशु सामान्य रूप से 8-12 इंच की दूरी तक देख सकता है अत: देखभाल करनेवाले को उससे अन्योन्यक्रिया करने के लिए उसकी दृष्टि के दायरे में ही रहना आवश्यक है । यहाँ से सामाजिक अन्योन्यक्रिया का प्रारंभ होता है ।

### महत्व

यह शिशु के जीवन में, अपने देखभाल करनेवाले को अपनी अनुभूतियाँ संप्रेषण करने का प्रथम प्रयास है। बार-बार इसको दोहराकर शिशु अपनी पसन्दों तथा नापसंदों को प्रदर्शित करता है तथा अन्योन्यक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता की जानकारी देता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु के पास जाते समय सदा मुस्कुराते रहिये । उसके साथ दृष्टि-संपर्क करके मुस्कुराइये, जब शिशु मुस्कुराये उसको पुरस्कृत कीजिये ।
- शिशु को गुदगुदी कर उसके चेहरे पर मुस्कान लाइये तथा आप स्वयं उसको देखकर मुस्कुराइये ।

### संशोधन / परिवर्तन:

**दृष्टि क्षति :** शिशु से मधुर आवाज में बात कीजिये । उसे गाना सुनाइये । जब शिशु कुंजन तथा अन्य सुखद ध्वनियों को अपने गले से निकालता है, आप उसका अनुकरण कीजिए ।

# मद - 5 उत्तेजित करने पर हँसता है (गुदगुदी, उछाल, मौखिक क्रीडा)

आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

शिशु प्रारूपिक तौर पर 6 सप्ताह से तीन माह की आयु में हँसता है ।

आरंभ में वे गुदगुदी या जोरदार ध्वनियों जैसे भौतिक प्रेरकों की प्रतिक्रिया में हँसते हैं ।

जीवन की दूसरी छमाही में शिशु सामाजिक प्रेरकों तथा दृष्टि प्रेरकों द्वारा अधिक हँसता है ।

माँ की अपने शिशु के बालों को सहलाने तथा लुका छिपि जैसी परस्पर क्रियाएँ शिशु को प्रेरित करती हैं ।

### महत्व

सामाजिक संकेतों को समझने तथा उपयुक्त सामाजिक प्रतिक्रियाओं में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु की रीढ़ पर, पैरों में तथा गर्दन आदि पर गुदगुदी करके, हँसिये तथा विनोद से भरी बातें कीजिए । शिशु के हँसते ही आप दोहराइएँ ।
- शिशु को उछालकर अपने कंधों या घुटनों पर डालिये । शिशु के हँसते ही इसे दोहराइये ।
- शिशु का चेहरा अपने चेहरे से सटाकर लगाएँ तथा उस पर फूँकिये, बा-बा-बा जैसे शब्दों को उच्चरित कीजिये । शिशु के हँसने पर दोहराइये ।

### संशोधन

**श्रवण क्षति :** ऐसे शिशु को जो सकारात्मक चेहरे या ध्वनि से अभिव्यक्ति करता है, शिशु को पुरस्कृत कीजिए।

**मोटर क्षति :** गुदगुदाहट या उछालने की गतिविधियाँ उन शिशुओं के लिए न करें जिनके शरीर में ऐंठन के कारण हाथ पैर जकड़े होते हैं ।

**दृष्टि क्षति :** यदि शिशु को डर लगे तब उछालने की गतिविधि को रोक दीजिये ।

# मद - 6 खेलते-खेलते चेहरे पर कपड़ा डाल लेता है

आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

शिशु को यह पता चल रहा है कि उसकी चेष्टाएँ तथा हरकतें, वयस्कों द्वारा उसकी ओर ध्यान आकर्षित करने में सहायक हो रही हैं । इससे पूर्व जो यादृच्छिक होती थी, अब उनकी तरह चेष्टाएँ करने का प्रयत्न करता है । लुका छिपि खेलना तथा छिप जाना या हाथों से तालियाँ बजाना ये सब वयस्कों को करते हुए देखता है । अत: वयस्कों को देखकर शिशु नकल करता है । यह उसके जीवन में संप्रेषण का पहला कदम है जिसमें वह वयस्कों का देखभालकर्ता को स्वयं उलझा कर रखता है ।

### महत्व

शिशु अन्य व्यक्तियों से खेलों द्वारा संप्रेषण करने में सहायक होता है । ।

### मध्यस्थता :

- शिशु के चेहरे पर एक नर्म कपड़ा रखिये तथा उसी के हाथ से कपड़ा चेहरे से हटाइये । ऐसा करते हुए उसे "बू" कहिये तथा मुस्कुराइये ।
- शिशु के चेहरे पर कपड़ा डाल कर "बू" कहिये । शिशु को स्वयं अपने हाथ से कपड़ा हटाने दीजिये अब पुन: कपड़ा चेहरे पर डालने के लिए उसे सहायता कीजिये ताकि फिर से ये खेल-खेल सकें ।

### संशोधन:

**मोटर क्षति :** यदि शिशु अपने हाथों से चेहरे से कपड़ा नहीं हटाता, आपकी गोद में बैठे हुए शिशु को अपने सिर को हिलाने दीजिये ताकि कपड़ा अपने आप हट जाये ।

# मद - 7 बात करने वाले व्यक्ति की ओर पलटता है

## आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

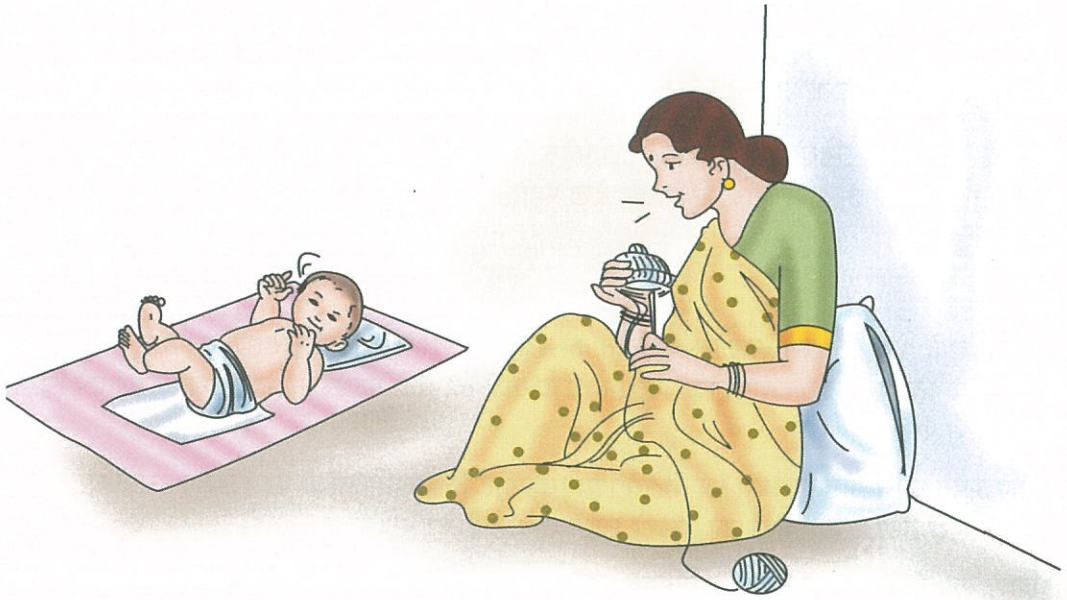

शिशु के जीवन में आसपास के व्यक्तियों में उनकी क्या भूमिका है, ये जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है । देखभाल करने वाले के साथ अनुरक्ति तथा बंधन, शिशु को सुरक्षित महसूस करने में सहायक होता है तथा सामाजिक अन्योन्यक्रिया को प्रोत्साहित करता है, सामाजिक कौशल का निर्माण करता है तथा सारे प्रारंभिक शिक्षा का आधार होता है । 2 से 7 माह की आयु मानव संबंधों को बनाने का प्रारंभिक साधन है। अन्यों के प्रति ये प्रारंभिक संबंध शिशु की अन्योन्यक्रिया के समय अनेक संवेदी रूपात्मकताओं को पारस्परिक रूप से उपयोग करने की क्षमता पर आधारित होता है । देखभालकर्ता के साथ प्राथमिक अनुरक्ति की स्थापना, शिशु के सक्रिय जीवन में बढ़ती हुई दिलचस्पी के समानांतर होती है । इन घटनाओं के कारण शिशु अक्सर जटिल संप्रेषण पद्धतियों में भाग लेना आरंभ करता है

### महत्व

यही सामाजिक क्रीड़ा शिशु की देखभाल करने वाले को उसकी श्रवण-शक्ति तथा ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया के बारे में सावधान करती है, श्रवण-शक्ति, शिशु के भाषा-विकास के लिए बहुत आवश्यक है। अत: किसी ध्वनि या आवाज के प्रति शिशु की प्रतिक्रिया शिशु के सुनने की क्षमता का संकेत है । यद्यपि शिशु किसी की बातों को समझ नहीं सकता तथापि

उसे संप्रेषण में बहुत दिलचस्पी होती है तथा वक्ता को बात करते हुए सुनकर ही वह बहुत कुछ सीख जाता है । उससे वह यह सीखता है कि वक्ता के मुँह की चेष्टाओं के कारण ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं । यानि वक्ता जो कुछ कर रहा होता है वह ध्वनि उत्पन्न करने का प्रयत्न है और ये ध्वनियाँ विचारों तथा अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं ।

## मध्यस्थता :

- कक्ष में पहुँचते ही शिशु का नाम पुकारिये जैसे ही वह आपकी ओर पलटे उसको अपनी मुस्कुराहट तथा आलिंगन से पुरस्कृत कीजिये ।
- कक्ष के कई कोनों से घण्टी बजायें या किसी वस्तु से आवाज कीजिये तथा ध्यान रखें कि शिशु की दृष्टि सीमा से बाहर रहे । यदि शिशु ध्वनि के स्रोत की ओर देखे तो उसको देखकर मुस्कुराएँ तथा छाती से लगाइये ।
- ध्यान से देखें कि शिशु रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन जैसी घरेलु वस्तुओं से आई ध्वनि को या दरवाजे के खटखटाने से आई ध्वनि की ओर सिर पलटा कर देख रहा है या नहीं ।

## संशोधन:

**मोटर क्षति:** यदि शिशु को प्रमस्तिकीय पक्षाघात की बीमारी हो तथा उसका सिर एक तरफ झुका हुआ रहता हो, किसी और व्यक्ति द्वारा उसका नाम लेकर बुलाने या दरवाजे की घंटी बजाने से पहले उसके सिर को निम्न प्रकार से ठीक ढंग से रखिये :

अ. आप अपने घुटने मोड़कर फर्श पर बैठिये शिशु की पीठ को अपनी जाँघों पर रखकर उसके घुटनों को छाती तक लाइये तथा उसके हाथों को उसकी छाती या घुटनों पर रखिये ।

आ. शिशु का मुँह को सामने करके बिठाकर उसके पैरों को फैलाकर अपने एक घुटने के पास रखिये ध्यान दीजिये कि उसके दोनों हाथ सामने लायें तथा सिर आगे रहे ।

इ. शिशु को अपने एक हाथ में उठाकर इस तरह रखें कि वह उस दिशा में देखने के लिए पलटे जहाँ वह सामान्य रूप से नहीं पलटता ।

**दृष्टि क्षति:** चूँकि शिशु किसी वस्तु की ओर देखने के लिए पलटने से उसे लाभ नहीं मिलता, उसे उस वस्तु को छूने तथा महसूस करने देकर उसे पुरस्कृत कीजिये ।

# मद - 8 दर्पण में अपने प्रतिबिम्ब को थपथपाता है

आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : स्वयं का प्रतिबिम्ब

### सामान्य

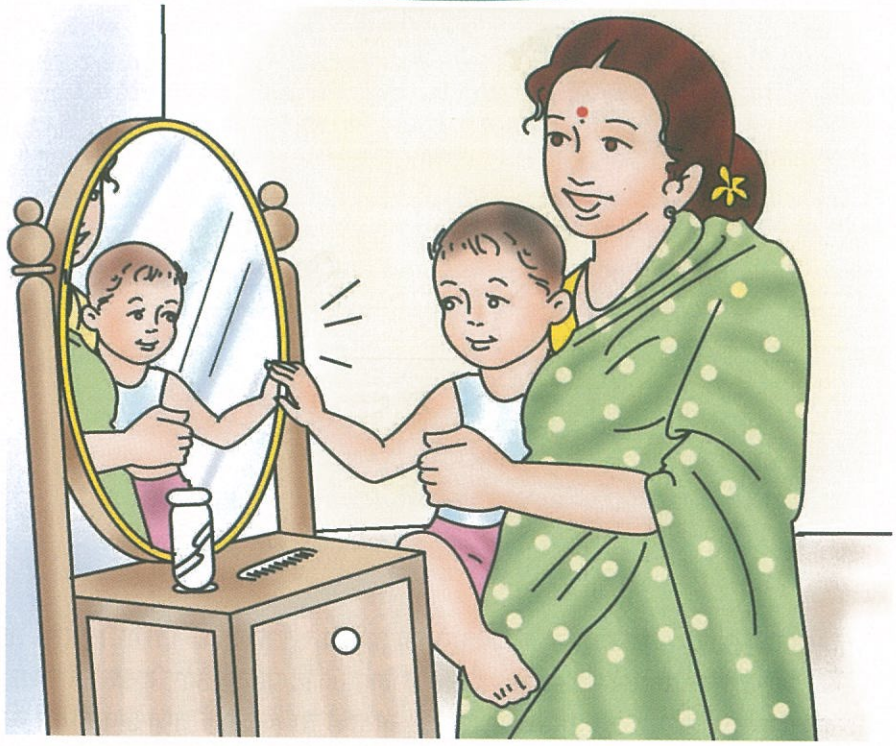

### महत्व

शिशु अपने आप को दर्पण में देखकर जोड़ता तथा पहचानता है ।

### मध्यस्थता :

- दर्पण के सामने से गुजरते हुए शिशु को दर्पण में उसका प्रतिबिम्ब दिखाइये तथा जब वह अपना चेहरा पहचाने मुस्कुराये तथा उसका छाती से लगाइये ।
- शिशु को अपनी गोद में बिठाकर दर्पण में उसका अपना प्रतिबिम्ब दिखाइये । उसे गुदगुदी करके मुस्कुराने के लिए उकसाएँ । ऐसा करने पर उसे अपनी छाती से लगायें ।

### संशोधन

**दृष्टि-क्षति:** आप शिशु के हाथ को अपने चेहरे पर तथा बाद में उसके स्वयं के चेहरे पर घुमाइये जिससे उसे अपने चेहरे के हावभाव बदले देखकर वह मुस्कुराये । ऐसा करते समय चेहरे के भागों का नाम लीजिए ।

# मद - 9 बाँहों में आने के लिए अपने हाथ ऊपर उठाता है ।

आयु: 3-6 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

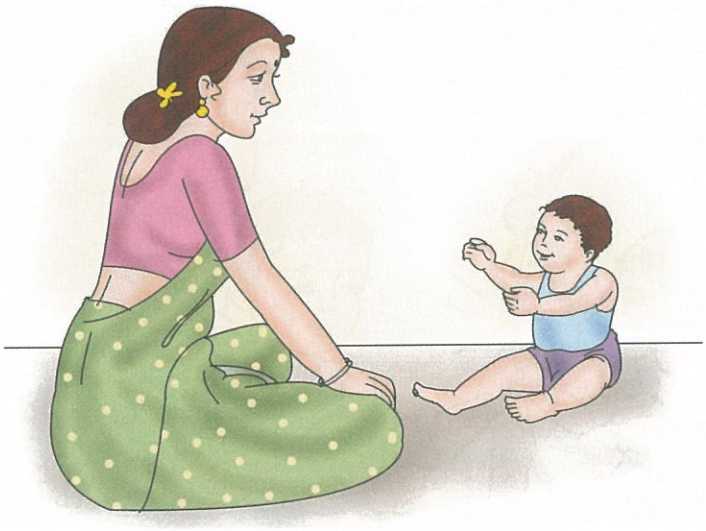

जीवन के चौथे माह में शिशु औरों द्वारा बाहों में लिये जाने की अपेक्षा रखते हैं । वे विभिन्न चेहरों को विभिन्न रूप से प्रतिक्रिया देते हैं । जो व्यक्ति उन्हें नीचे उतारता है उसके जाा के दिशा की ओर देखता है तथा जो उनसे बात करता है उसको देखकर मुस्कुराते हैं । जब उनके साथ खेला जाता है तो हँसते हैं तथा अपने प्रति व्यक्तिगत ध्यान पर खुश होते हैं ।

शिशु अपने माता-पिता की क्रियाओं की तुलना करता है । माँ किस तरह व्यवहार करती है यह अपने अनुभव से जान पाता है । माँ अपने शिशु की चेष्टाओं को देखते हुए उसी के बारे में सोचते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है ।

शिशु अपनी आवश्यकताओं तथा शारीरिक अनुभव के संदर्भ में अपने माँ की क्रियाओं को पहचानता है । इस तरह माता और शिशु की भावात्मक उपस्थिति शिशु के विकास के लिए आवश्यक है । चौथे माह में शिशु अपने आप को गोद में उठा लेने के लिए पूर्वाभासी समायोजन करते हैं ।

### महत्व

अन्य व्यक्तियों के साथ भावात्मक संबंध स्थापित करना शिशु अपने हाथ उठाकर सूचित करता है कि वह बाहों में आना चाहता है । ये सामाजिक विकास का एक अभिन्न अंग है जो संकेतों द्वारा संप्रेषण करने में सहायक होता है ।

## मध्यस्थता :

1. आपकी बाँहों में लेने से पहले शिशु को उसको हाथ उठाने को प्रोत्साहित कीजिये और अपने हाथ बढ़ाकर पूछिये कि क्या वह आपके पास आना चाहता है ।
2. सभी अन्य शिशु द्वारा पहचाने जाने वाले व्यक्तियों से ऐसा ही करवाइये ।
3. यदि शिशु वयस्कों के ध्यान को आकर्षित करना चाहता हैं तो अपने हाथ बढ़ाकर उसे बुलाइए तथा अन्य व्यक्ति से कहें कि शिशु के पीछें से आगे की ओर हाथ पकड़ रखें जैसे ही शिशु बाँहों में आने के लिए आगे बढ़े, उसकी प्रशंसा कीजिए ।
4. शिशु को उठाते समय धीरे से उसके हाथ पकड़िये तथा उसकी बगल में हाथ डालकर उठाइये ।
5. अपनी पीठ के बल लेटे हुए शिशु को आपके हाथ उठाकर आपकी ओर आने को प्रोत्साहित करें ।
6. शिशु द्वारा आपके हाथों को मजबूती से पकड़ने के बाद धीरे से उसे बैठने की स्थिति में खींचे । यदि शिशु का सिर नहीं ठहरता हो तो यह प्रक्रिया नहीं करनी चाहिए ।

## संशोधन

**दृष्टि क्षति:** शिशु जानी पहचानी आवाजों को पहचानकर जवाब देता है तथा आपके कक्ष में पहुँचते ही आपकी ओर पलटता है ।

# मद - 10 माँ की आवाज सुनते ही उसकी ओर पलटता है
## आयु: 3-7 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

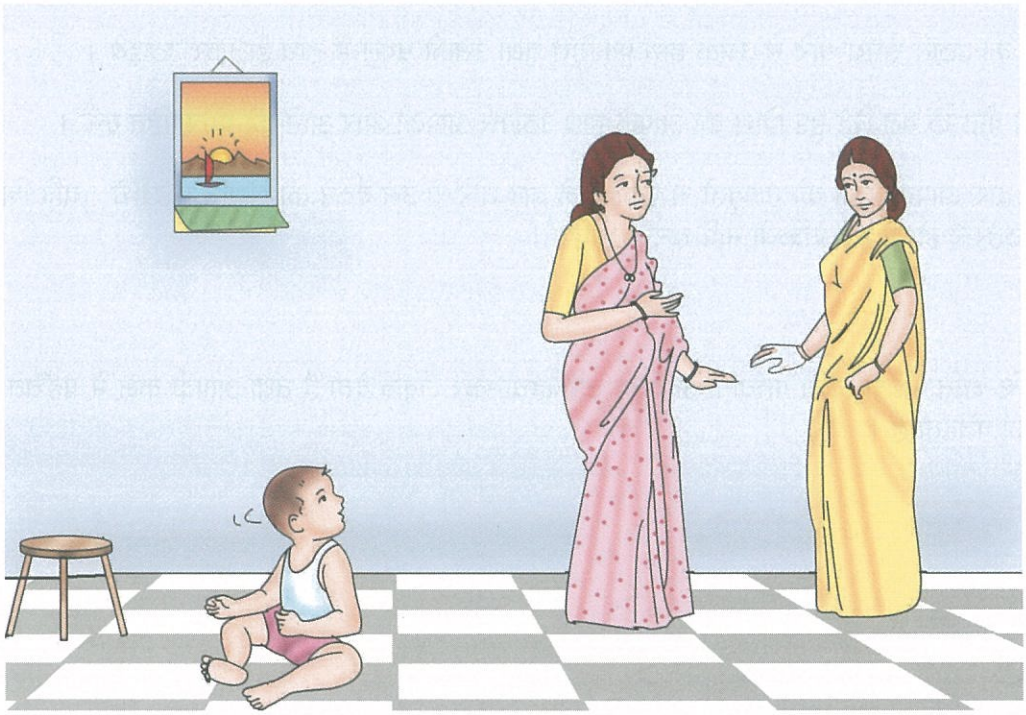

शिशुओं में विभिन्न ध्वनियों को सुनकर उनकी विभिन्नता पहचानने का संवेदी क्षमता होती है । जन्म के कुछ ही दिन पश्चात शिशु मानव वाणी जैसी लगने वाली अन्य वाणियों तथा ध्वनियों के प्रति प्रति-संवेदी होते है।

जन्म लेते ही शिशु स्त्री की ध्वनि को वरीयता देते हैं । जन्म के कुछ ही सप्ताहों बाद वे अपनी माँ तथा अन्य व्यक्तियों की आवाज में अंतर को पहचानते हैं । इसका अर्थ यह है कि शिशु अपनी माँ को उसकी आवाज से ही नहीं अपितु उसके दर्शन से भी पहचानता है । ऐसा व्यवहार उसकी अनुरक्ति के प्रतिमान को दर्शाता है ।

शिशु अपनी माँ की ओर देखकर उसकी गतिविधियों का अनुसरण कर तथा अपनी माँ की आवाज को पहचान कर उसके साथ भावात्मक संबंध बनाता है । शिशु अपनी ज्ञानेन्द्रियों से संसार की खोज करते हैं और ज्ञानेन्द्रियों में शिशु के लिए सबसे आवश्यक ज्ञानेन्द्रीय है श्रवण-शक्ति । श्रवण-शक्ति द्वारा शिशु विभिन्न लोगों के बीच के अंतर को, वस्तुओं को पहचानता हैं । अन्य पारिवारिक सदस्यों तथा मित्रों से पृथक अपनी देखभाल करने वाली यानि माँ की आवाज को पहचान सकता है ।

## महत्व

शिशु अपने ज्ञानेन्द्रियों का ठीक ढंग से उपयोग करना सीखना आरंभ करता है । इससे उसको अपने देखभाल करने वालों तथा अजनबियों को पहचानने तथा उनमें अंतर करने में सहायता मिलती है । ये अंतत: अनुरक्ति स्थापित करने में सहायक होती है ।

## मध्यस्थता :

- कक्ष में पहुँचते ही शिशु को नाम से पुकारिये । जैसे ही वह आपकी ओर पलटे पुरस्कार के रूप में मुस्कुराकर, गले लगाकर उसे चूम लीजिये ।
- कक्ष के अलग-अलग कोनों से घण्टी बजाइये तथा किसी वस्तु से शिशु की दृष्टि सीमा में आये बिना ध्वनि उत्पन्न कीजिये । ध्वनि के स्रोत को शिशु जब पहचाने तब मुस्कुराकर, गले लगाकर, उसे पुरस्कृत कीजिये ।
- इस बात पर ध्यान दीजिये कि क्या शिशु ध्वनि के स्रोत यानि, रेडियो, टेलिविजन या दरवाजे पर दी गयी दस्तक को खोज पाता है या नहीं ।

## संशोधन:

**मोटर क्षति :** यदि शिशु को प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात हो तथा अपना सिर एक तरफ रखने की प्रवृत्ति हो, इन निम्न तरीकों द्वारा ठीक से बिठाएँ ताकि वह किसी की आवाज या दरवाजें की घण्टी को पहचान सकें।

अ) अपने घुटनों पर बैठें तथा अपनी जाँघों पर शिशु की पीठ को रखकर उसके घुटनों को उसकी छाती तक ले जाएँ तथा उसके हाथों को उसकी छाती तथा घुटनों पर लगाये ।

आ) शिशु का चेहरा आगे करके उसके पैरो को अपने घुटनों पर लगाकर उसके हाथों को सामने लायें सिर को ठीक सामने की ओर देखने की दिशा में रखें ।

इ) शिशु को अपनी बाँहों में लेकर इस तरह रखें कि वह उस दिशा में सिर को पलटा कर देख सके जिस दिशा में वह सामान्यत: नहीं देखता हो ।

**दृष्टि क्षति:** चूँकि शिशु पलटकर किसी वस्तु को देखने से असमर्थ होता है उसे उस वस्तु को हाथ से छूने तथा महसूस करने देकर पुरस्कृत करें ।

# मद - 11 अन्य शिशुओं के साथ लुका-छुप्पी खेलते हुए देखकर हँसता है आयु: 6-9 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

शिशुओं में संतोषजनक अनुभूति मुख्यत: मुस्कुराहट तथा हँसी द्वारा व्यक्त होती है । 6 से 12 माह की आयु में हाथे, सामाजिक प्रेरकों, लुका-छुप्पी जैसी क्रीड़ाओं या माँ के चेहरे बनाने पर शिशु हँस पड़ते हैं । जन्म के दूसरे वर्ष में शिशु ऐसी क्रियाओं पर हँसता है जिसमें वह स्वयं भाग ले सकता हो, जैसे जीभ को बाहर निकाल कर उस तक पहुँचना या किसी वयस्क व्यक्ति के चेहरे से कपड़ा हटाना । शिशु क्रमश: भौतिक प्रेरकों से आगे बढकर ज्ञानात्मक निर्वचन की ओर अग्रसर होता है ।

### महत्व

प्रारंभिक सामाजिक संबंधों को बनाने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु के सामने लुका-छुपी तथा चालू-पुर्जों के खेल खेले, ताकि वह उनमें स्वयं भाग ले सकें ।
- शिशु के चेहरे पर एक कपड़ा डालिये और उसे खींचिये और कहिये शिशु कहाँ है? जब शिशु इस खेल में कई बार भाग लेता है तो वह अंत में स्वयं ही कपड़ा अपने चेहरे से हटायेगा ।
- आप अपना चेहरा कपड़े से छिपाये तथा शिशु से कहिये आपको ढूँढ़े । आपको ढूँढने पर उसे गले से लगाकर पुरस्कृत करे ।

### संशोधन:

**दृष्टि क्षति:** शिशु को चालू पुर्जों द्वारा खेल में निमग्न कीजिये लुका-छिपी जैसे खेल खेलें ताकि वह छिप जाए और आप उसे बुलायें । शिशु के हँसने पर आप भी हँसे ।

# मद - 12 हाथों में पकड़े हुए खिलौने दिखाता है
## आयु: 6-9 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

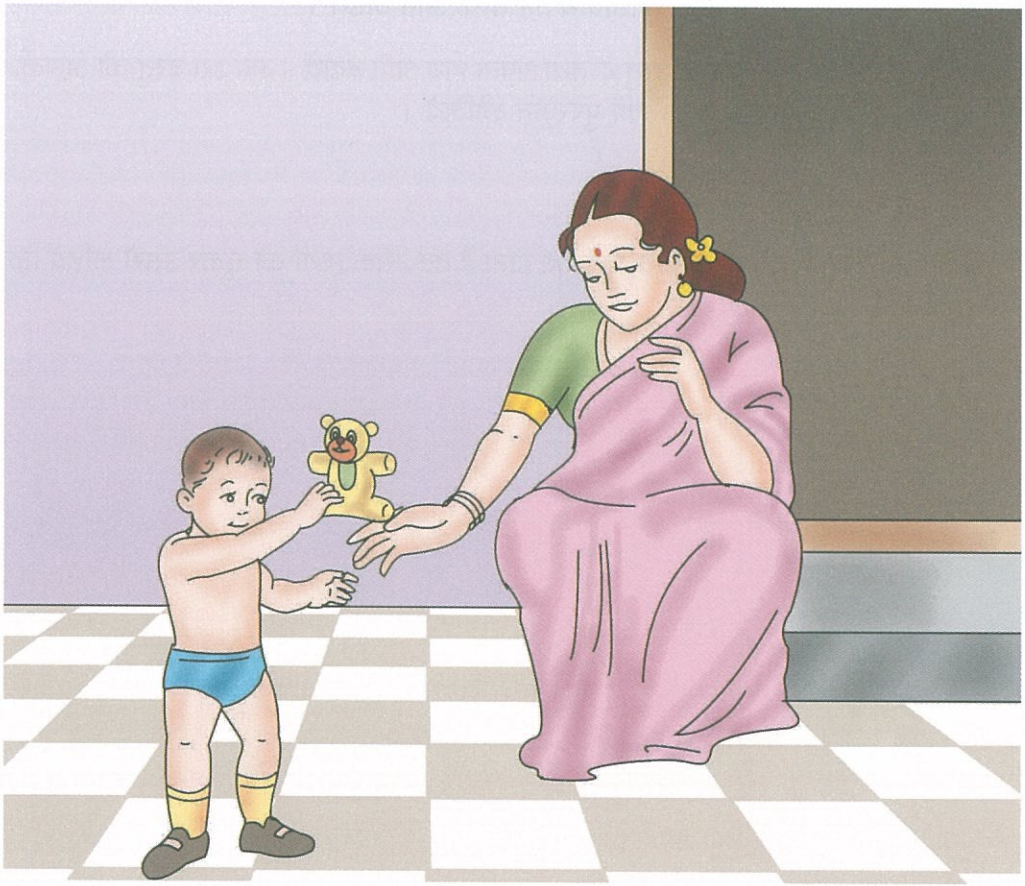

शिशु अन्य शिशु को पहचानने की सर्व प्रथम सूचना उसके 4-5 माह की आयु में प्राप्त होती है । जब वह अन्य शिशु को देखकर मुस्कुराता है या उसके रोने पर दिलचस्पी दिखलाता है शिशुओं के बीच स्नेहपूर्वक संबंध साधारणत: 6-8 माह के बीच में बनता है, जिसमें अन्य शिशु को देखना, उसके पास पहुँचना तथा उसे छूना शामिल होता है ।

9-13 माह के बीच अन्य शिशुओं को देखकर उनकी आवाज तथा आदतों की नकल करके तथा पहली बार अन्य शिशु के साथ मिलकर खिलौनों से खेलता है, वरना सामान्यत: यदि कोई अन्य शिशु उसके खिलौने को ले लेता है तो वह नाराज हो जाता है ।

शिशु के जीवन के दूसरे वर्ष से ही अन्य शिशुओं के प्रति सामाजिक प्रतिक्रियाएँ तेजी से विकसित होती हैं । 13 से 18 माह की आयु तक शिशु अन्य समकक्ष शिशुओं की नकल करते हुए मुस्कुराते है तथा हँसते है । उनसे संबंध स्थापित करने के लिए अपने खिलौनों का आदान-प्रदान करते हैं ।

## महत्व

समकक्ष शिशुओं के साथ संबंध जोड़ने तथा इशारों से संप्रेषण करने में सहायक होता है । शिशु अपने भावुकता को हाव भावों द्वारा व्यक्त कर सकता है ।

## मध्यस्थता :

- जब शिशु के हाथ में खिलौना हो, उससे कहिये कि आपका खिलौना दिखायें । यदि वह गोले को दिखाता हो परंतु आपको देने से मना करता हो, तो अन्य गतिविधि की तरफ आगे बढिये ।
- पहले शिशु से पूछिये कि आपको कुछ वस्तु दें तथा अपना हाथ आगे बढायें । जब उस वस्तु को आपकी ओर बढ़ाता है परंतु सौंपता नहीं फिर भी हँसकर उसको पुरस्कृत कीजिये ।

## संशोधन:

**दृष्टि क्षति:** जब शिशु खिलौनो के साथ खेल रहा होता है तब उसके हाथों को छूकर उससे कहिये कि आपको वह खिलौना दिखायें ।

# मद - 13 खिलौनो / वस्तुओं (झुनझुना, ग्लास, चम्मच) को देखकर उनके साथ खेलता है उनको नीचे गिराकर उनके भागों को टटोलता है आयु: 6-9 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

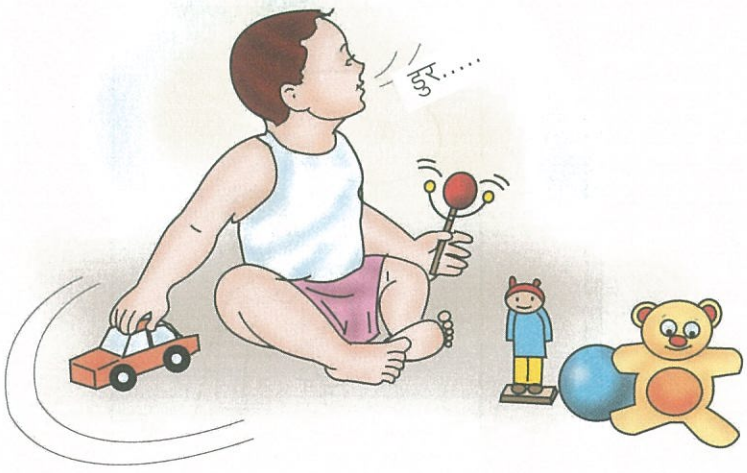


शिशु अपने स्पर्श से खाने पीने की चीजों तथा अन्य वस्तुओं के गुण तथा बनावट को जानने के प्रयत्न में रहते हैं। स्पर्श तथा चीजों को टटोलना उनकी दुनिया के विभिन्न वस्तुओं के संवेदी सूचना का महत्वपूर्ण तरीका है ।

### महत्व

चीजों को देखकर, टटोलकर तथा खोज कर उसे संतुष्टि मिलती है तथा उस वस्तु के बारे में आवश्यक संवेदी निवेश करता है । वह यह जानने में प्रयत्नशील होता है कि वस्तुएँ कैसे काम करती हैं ।

### मध्यस्थता :

- शिशु को एक झुनझुना या खिलौना दीजिये । उसके हाथों को दृष्टि रेखा के पास लाइये । जब वह उस खिलौने को पकड़ कर उसे टटोलता है तब उसे शाबाशी देकर गले लगाएँ ।
- किसी वस्तु को शिशु के हाथ में रखें तथा उसकी प्रतिक्रिया को अवलोकित करें । यदि शिशु उस वस्तु को नीचे गिरा देता है तब उसे उस वस्तु को वापस पकड़ायें या दूसरा खिलौना जो अलग परिभाषा, वजन या आकृति का हो । 10 सेकण्ड तक प्रतीक्षा कीजिये ताकि वह उस वस्तु को अपनी उँगलियाँ उस वस्तु पर घुमाता है या नहीं ।
- शिशु की देखभाल की दिनचर्या के कार्यक्रमों (जैसे: पोतडे बदलना, खाना खिलाना, नहलाना, कपड़े पहनाना) में शिशु को विभिन्न वस्तुएँ पकड़ाइये ।
- यदि शिशु वस्तुओं को नहीं पकड़ता, आप उसके हाथ पर अपना हाथ रखिये ताकि वह वस्तु को पकड़ने में सफल हो सके । धीरे-धीरे अपना हाथ हटाएँ ताकि शिशु वस्तुओं को स्वयं पकड़ सकें ।

# मद - 14 हाथों से ताली बजाता है तथा हाथ हिलाकर बिदा करता है आयु: 9-12 महीने

## क्षेत्र : सामाजिक खेल

### सामान्य

7-9 माह की आयु में शिशु वाक्-ध्वनियों का उच्चारण आरंभ करते हैं तथा सरल कार्य तथा इशारे करते हैं।

### महत्व

उपयुक्त सामाजिक व्यवहार, संप्रेषण तथा सामाजिकीकरण में सहायक होता ।

## मध्यस्थता :

- शिशु कुछ काम सफलता से करें जैसे पूरा खाना खाले तब ताली बजाएँ तथा शिशु को प्रोत्साहित करें कि वह अपने आप कार्य पूरा करें ।
- कोई गीत या तुकान्त कविता को अभिनय के साथ बोलिये तथा शिशु को हाथ से ताली मारने की नकल का प्रोत्साहन दीजिये । अभिनय करने के लिये सहायता करें । धीरे-धीरे उसकी सहायता रोक दें ताकि वह स्वयं उस गीत पर अभिनय करे तथा ताली बजा सकें । सफल होने पर ताली बजाकर उसको प्रोत्साहित करें ।
- घर से बाहर जाते समय परिवार को बाई-बाई करने का प्रोत्साहन दें ।
- शिशु का हाथ अपने हाथ में लेकर बाई-बाई कहें, जब कोई उसे बाई-बाई कहें ।
- धीरे-धीरे सहायता बंद करें । जब कोई बाई-बाई कहें, तब उसे अपने हाथ उठाने में मदद करें पर स्वयं उसी को हाथ हिलाकर बाई-बाई करने दीजिये । सफलता पर उसे छाती से लगाकर प्रशंसा करें ।
- झाँककर शोर मचाने का खेल खेलें, परंतु आप स्वयं हाथ हिलाते हुए बाई-बाई करते हुए गायब हो जाएँ । शिशु को ऐसा ही करने का प्रोत्साहन दीजिये ।

# मद - 15 किसी वयस्क को कुछ देने के लिये आगे हाथ बढ़ाता है पर देता नही आयु: 9-12 महीने

## क्षेत्र: स्वतंत्र क्रीड़ा

### सामान्य

### महत्व

शिशु को अपनी वस्तुओं को पास रखने में सहायक होता है । शिशु को अपनी वस्तुओं को पहचानने तथा ध्यान देना सिखाता है ।

## मध्यस्थता :

- खाना खाते समय शिशु से कहे कि वह आपको थोड़ा-सा खाने दें । तब उसकी थाली से छोटा टुकड़ा ले तथा अपनी थाली से उसे कुछ खिलायें ।
- जब शिशु खिलौने से खेल रहा होता है उससे खिलौना माँगिये । उसके हाथ से खिलौना लीजिये और उसे वापस कीजिये।
- शिशु से आप कुछ वस्तु माँगे तथा अपना हाथ आगे बढ़ायें । वस्तु देने पर उसे वापस दे दें ।

## परिवर्तन:

**मोटर क्षति:** कई संस्तंभी बच्चे स्वैच्छिक रूप से पकड़ी हुई वस्तु को देर तक नहीं छोड़ सकते । धीरे से उसकी कलाई को दबाकर वस्तु को छुडवायें ।

**दृष्टि क्षति:** शिशु का हाथ पकड़ कर उसके हाथ से वस्तु को निकालें ।

# मद - 16 गुड़िया या पशु को पकड़ लेता है ।
## आयु: 9-12 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

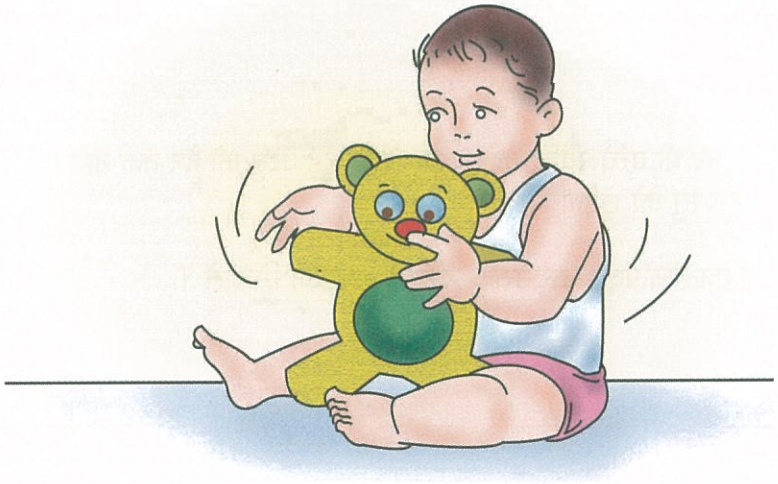

शिशु अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति गतिविधियों द्वारा करते है ।

### महत्व

भावनात्मक संबंध बनाने तथा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- अच्छे व्यवहार के लिए स्नेहशीलता को ही, पुरस्कार के रूप में दीजिये ।
- जब शिशु आप से प्रेम तथा उसके प्रति संवेदना की अपेक्षा करता है, तब उससे प्रेमपूर्वक व्यवहार करें ।
- यदि शिशु के पास उसका प्रिय खिलौना हो (जैसे कपड़े से बनाया हुआ जानवर) उसे थपथपाइये और छाती से लगायें तथा शिशु को दोहराने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- रात को सोते समय अपने पारिवारिक सदस्यों को प्यार से गले लगाये, चूमे और शिशु से ऐसा करवायें । हर रोज इस तरह शुभ-रात्रि कहने की तरह ऐसा करवाये ।
- गुड़िया को आप गले से लगाये और शिशु से करवाये ।
- गुड़िया को शिशु के हाथ में सौपे और कहिये कि वह उसकी देखभाल करें । गुड़िया को सुलाये तथा उसको गाना सुनायें तथा पिता के पास ले जायें ।
- जब आप शिशु को गले लगाकर शुभ रात्रि कहते है, उसी तरह शिशु को अपनी गुड़िया से गले मिलाकर शुभ-रात्रि कहलवाये ।

# मद - 17 माँगने पर वस्तु को देता है
## आयु: 9-12 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

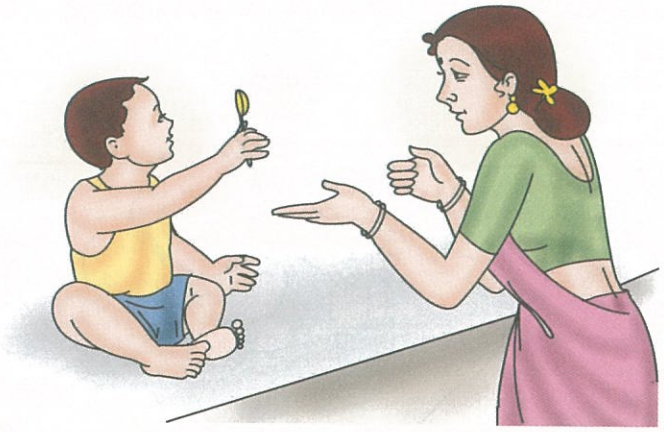

### महत्व

शिशु को अन्य शिशुओं के साथ वस्तुओं को आपस में बाँटना तथा सामूहिक गतिविधियों में भाग लेना। अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध बनाना भी सीखता है।

### मध्यस्थता :

- शिशु का हाथ पकड़ कर खिलौने को आपके हाथ में देना सिखाइये।
- एक अभिमान्य खिलौना लेकर शिशु को दीजिये, और वापस लीजिये। बार-बार दोहराइये। शिशु को पता चलेगा कि उसे खिलौना वापस मिलेगा। आरंभ में खिलौने को तुरंत वापस कीजिये तथा हमेशा उसकी नजर के सामने रखिये।
- जब शिशु उंगली की आकृति वाले खाने के टुकड़े या सूखा अनाज आदि खा रहा हो, तब एक टुकड़ा उसके मुँह में रख कर कहिये "-को खिलाओ" पश्चात आपके मुँह में डालने को कहिये। जब वो उस टुकड़े को उठाये, तब कहिये "-- को खिलाओ" आवश्यक हो तो उसके हाथ से ये सब करवायें। सफल होने पर हँसिये और उसकी प्रशंसा कीजिये।
- कोई वस्तु शिशु के हाथ में रखिये और उससे कहिये "मुझे दो" और अपना हाथ आगे बढ़ाइये। स्वयं उसका हाथ पकड़ कर ये सब करवाइए।
- संगीत बजाने वाला खिलौना लेकर उसे दिखाइए कि, कैसे चाबी घुमाने से संगीत बजता है।
- खिलौना शिशु को वापस कीजिये जिससे उसे पता चले कि खिलौने को भी आपस में आदान-प्रदान किया जा सकता है।
- "मुझे दो" नामक खेल खेलें, जिसमें एक आकर्षक वस्तु को शिशु के हाथ में देकर कहिये "-(वस्तु का नाम)" --"मुझे दो" हाथ से ताली बजाइये और पूछिये "मुझे दो" तथा आवशयक हो तो उसे अपने हाथ से ये सब करवायें। सफल होने पर ताली बजाएँ और शिशु की प्रशंसा करें।

# मद - 18 अन्य शिशुओं के साथ शारीरिक तौर पर या मौखिक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करना आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

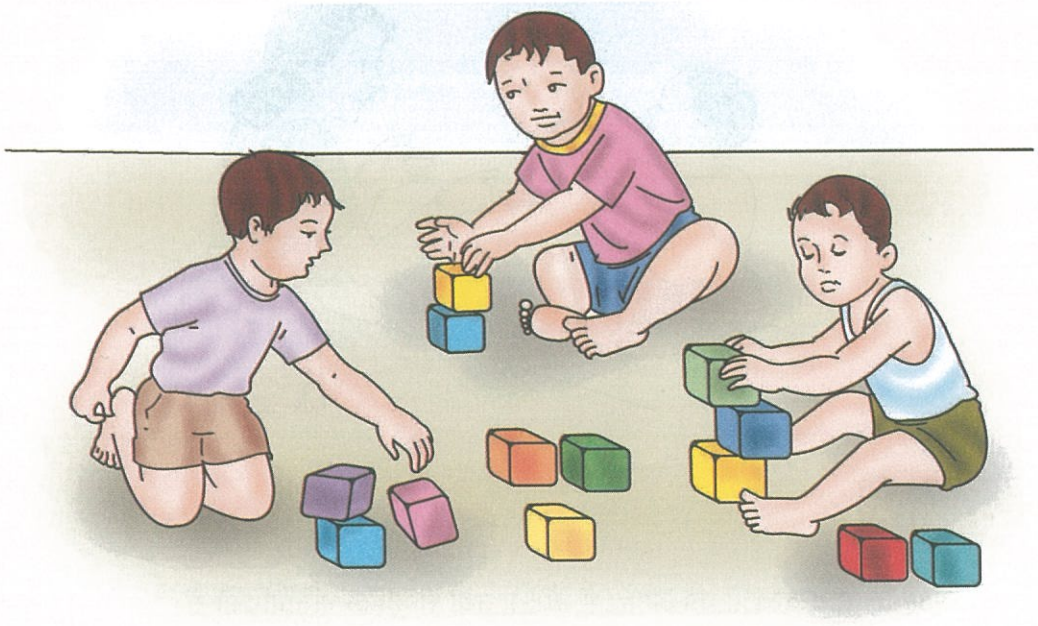

12 माह की आयु में शिशु किसी चीज के मना करने पर उस काम को रोक देते हैं । 15 माह की आयु से शिशु, वयस्कों के प्रति दिलचस्पी दिखलाते हैं तथा उनके साथ रहने तथा उनकी नकल करने की इच्छा रखते हैं ।

### महत्व

शिशु को सामूहिक मानक तथा समकक्ष शिशुओं से संबंधित मानकों का अनुसरण करने में सहायक होता है । सरल संप्रेषण को वृद्धि करता है जो समूह में स्वीकार्य होने शिशु की सहायता करता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु को अपने समकक्ष शिशुओं से अन्योन्यक्रिया करने का अवसर दीजिए ।
- शिशु को सामुहिक कार्यक्रमों में आवेष्टित कीजिये तथा साधारण आदेश दीजिये ।
- उदाहरण: सामान्य वस्तुएँ पकड़ाना ।

# मद - 19 प्रतिदिन के कार्यक्रमों का अनुकरण करता है तथा घरेलू काम करता है आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र : सहकारिता

### सामान्य

वयस्कों की भूमिका का अनुकरण करते हुए, शिशु अपने आप को वयस्को जैसा महसूस करता है तथा वयस्को के ऐसे कार्यों की साधना करता है जिन्हें आगे चलकर स्वयं कर सकेगा ।

### महत्व

सामाजिक स्वीकृति प्राप्त व्यवहार को सीखने में सहायक होता है ।
शिशु को घिसा-पिटा / रुढिबद्ध भूमिका अदा करने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- खेल क्रियाकलापों द्वारा, शिशु को घरेलू वस्तुओं को ठीक जगह रखने की शिक्षा दीजिये ।
- खिलौनों को उठाकर बड़े डिब्बे में डालना सिखाइये ।
- कुछ वस्तुओं को शिशु के हाथ में देकर उसे बताइये कि उन वस्तुओं को कहाँ रखना है ।
- शिशु की सहायता या सहायता की कोशिश को सराहिये ।
- शिशु को दिनचर्या की जानकारी होने के बाद कुछ कार्य सौपें ।
- धुले हुए कपड़ों को तहकरवाइये और शाबाशी दीजिये ।
- टब बाल्टी या प्लास्टिक के बर्तन साफ करते समय शिशु को पानी में टब / बर्तनों को पानी में खँगलवाइये।
- ना टूटने वाले बर्तनों को (प्लास्टिक के बर्तन) सिंक / मोरी में डालने का अभ्यास कराये । सफलता पर प्रशंसा करें।

# मद - 20 वयस्क को अपने खिलौने देकर वापस नहीं लेता आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र : सहकारिता

### सामान्य

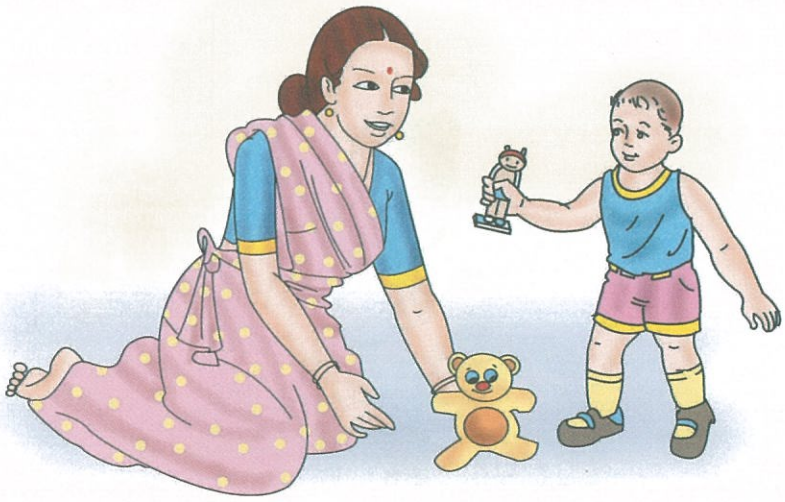

सारे शिशु ऐसी अवस्था से गुजरते है, जब वे अपने खिलौनों के बारे में स्वत्वात्मक होता है । फिर भी, समय के साथ-साथ शिशु अन्य शिशुओं को खेलते हुए देखता है तथा जान लेता है कि क्रीड़ा एक ऐसी कला है जिसमें अपने खिलौनों को अन्य शिशुओं के साथ मिल बाँटकर खेलना, सहयोग करना तथा परिवार के बाहर के व्यक्तियों / शिशुओं से सकारात्मकता से अन्योन्यक्रिया करना ।

### महत्व

अन्य व्यक्तियों / शिशुओं से अन्योन्यक्रिया करना, सामाजिकीकरण करना तथा नियमों का पालन करना सिखाता है ।

### मध्यस्थता :

- भोजन के समय शिशु से थोड़ा खाना माँगिये । थोड़ा सा लीजिये । अपनी थाली से थोड़ा शिशु को दीजिये ।
- जब शिशु खिलौनों से खेल रहा होता है, अपने हाथ बढ़ाकर उसका खिलौना माँगिये तथा फिर से शिशु को वापस करें ।
- शिशु से पहले कुछ माँगिये, अपने हाथों में वस्तु को लेकर पीछे कीजिये, फिर उसे वापस करके शिशु को पुरस्कृत करें ।

### संशोधन:

**मोटर क्षति :** कई संस्तम्भी शिशु स्वयं किसी वस्तु को हाथ से जल्दी से नहीं छोड़ सकते । ऐसे शिशुओं को हाथ की कलाई को नीचे ढकेलकर वस्तु को निकाल लें ।

**दृष्टि क्षति:** शिशु के हाथों से बार-बार पकड़े हुए वस्तु को उसके हाथ से निकालने का अभ्यास करें ।

# मद - 21 दिनचर्या के कामों का अनुकरण करता है

आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र : सहकारिता

### सामान्य

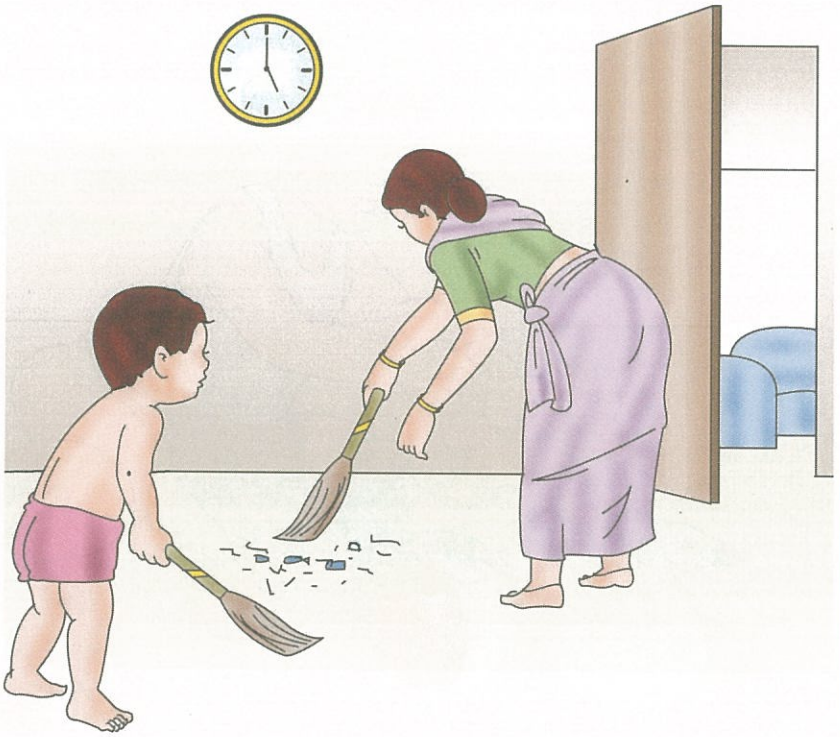

दिनचर्या के कार्यों के लिए हाथों का उपयोग करने को हस्तचालन कहते है । परिसरों को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हस्तचालित करने की क्षमता बहुत ही उपयोगी कौशल है। इन कुशलताओं / कौशलों का अभ्यास करके शिशु स्वतंत्र होना सीखता है । जब अधोवर्तन तथा उत्तानन आवुंचन कलाई का विस्तार उँगलियाँ तथा कोहनियाँ सभी को ठीक से समक्रमिक कर सकता है तब वह हस्तचालन में कुशलता प्राप्त कर लेता है ।

### महत्व

**मध्यस्थता :**

ऐसे कुछ और हुनरों को सिखाने के लिए, शिशु को खाने की ऐसी वस्तुएँ दीजिये जिसको पाने के लिए उस उसके ऊपर की पन्नी को खोलना पड़ेगा (उदाहरण: पन्नी में लिपटा चाकलेट) । शिशु को एक जिप की पट्टी दीजिये तथा जिप को ऊपर-नीचे खींचिये । एक चालू-पुरजे वाले खिलौने को चाभी देकर घुमाइये । शिशु को उसे घुमाने में स्वयं करने तक मदद कीजिये । शिशु को बर्तनों तथा डिब्बों पर से प्लास्टिक के ढक्कन को हटाने के लिए प्रोत्साहित कीजिये ।

हस्तचालन के जटिल कौशल को विकसित करने के लिये उपाय । शिशु को, वयस्कों के चमड़े की पट्टी (बेल्ट) को कैसे खोला जाये, सिखाइये । उसे बेल्ट देकर स्वयं अभ्यास करने दीजिये । कपड़ों की अलमारी को खोलने तथा गुड्डे या स्वयं शिशु के कपड़ों के बटन खोल कर शिशु को दिखाइये । शिशु को अभ्यास करने दीजिये । पहले बड़े बटनों से आरंभ कर छोटे बटन खोलना सिखाइये । शिशु को आटे की गूँधे से खेल खिलाइये। गूँधे को गोल घुमाकर सॉप के आकार में बनाकर दिखाइये, फिर से उसे गोल बनाकर बेलन से फैलाइये और उसको शिशु के हाथों थपथपाइये । शिशु को नये तरीके अपना कर आटे की लोंधी से नये आकार बनाने को प्रोत्साहित करें । शिशु को पियानो जैसे खिलौने को बजाने को प्रोत्साहित कीजिये ।

# मद - 22 विभिन्न वस्तुओं से सत: ही खेलता है

आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र : क्षेत्र स्वतंत्रता

### सामान्य

यह गतिविधि शिशु को अपने संवेदी व्यवस्था द्वारा अपनी स्वयं की दुनिया को जानने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब शिशु विभिन्न वस्तुओं से खेलता है, वह अपनी संवेदी व्यवस्था को सतर्क करता है जिससे वह देख, महसूस और सूंघ सकता है । यही प्रक्रिया उसके मस्तिष्क को संदेश पहुँचाती है, जिसके कारण वह अपने पास-पड़ोस के बारे में जान सकता है ।

### महत्व

जब शिशु विभिन्न वस्तुओं से खेलता है, तब वह अपने मस्तिष्क को संदेश भेजकर, अपने पास-पड़ोस के बारे में जानकारी प्राप्त करता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु के पास एक खुला हुआ खिलौनो का डिब्बा या कपड़ों का टोकरा रखिये । उसे डिब्बे में के खिलौनो को दिखलाइये तथा उससे कहिये खेलने के लिए कुछ वस्तु लायें । जब वह किसी क्रिया में निमग्न हो, तब थोड़ी देर के लिए कक्ष से बाहर जाइये । जब शिशु किसी वस्तु के साथ खेल में निमग्न हो उसकी प्रशंसा कीजिये तथा बीच बीच में खिलौनों को अपने हाथों में ठीक ढंग से पकड़ने में सहायता दीजिये ।

**सूचना:**

खिलौनों के डिब्बे को एक ही जगह रखे तथा शिशु को अपने खिलौनों को स्वयं ही चुनने तथा बिना कहे ही खिलौना दीजिए ।

**संशोधन:**

**मोटर क्षति :** यदि शिशु निश्चल होता हो तो उसकी कलाइयों और टखनों पर हल्के-फुल्के भारवाले खिलौनों को ऐसा बाँध दीजिये कि खिलौने उसके हाथ और पैरों की पहुँच में हो । जब वह उनके साथ खेलने का प्रयास करे तो उसे पुरस्कृत करें ।

**दृष्टि क्षति :** शिशु को दिनभर अनुकूल क्षेत्रों में रखें शिशु (कुर्सी जिसके अतराफ टेबुल हो या चटाई बिछाकर उस पर रखें) और उसके हाथों और पैरों की पहुँच के भीतर खिलौने रखें । आवाज करनेवाले खिलौने से खेलने या नरम खिलौने से गुदगुदायें और शिशु को प्रोत्साहित करें ।

# मद - 23 एक ही खिलौने पर विविध प्रकार की क्रियाएँ दिखलाता है आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

शिशु की 9-24 माह आयु की अवधि व्यावहारिक निर्माण तथा अंतरीकरण द्वारा अभिलक्षित होती है क्योंकि शिशु अपने आप के बारे में समझने में असफल होता है । शिशु की अंतर्निहित संवेदनाएँ तथा प्रतिरूप मस्तिष्क के प्रतिनिधियों के रूप में व्यवस्थित होते है । वह दो घटनाओं को सरलता से जोडने की जगह विभिन्न संबंधित व्यवहारों को आपस में जोड सकता है । शिशु अपने संवेदी व्यवस्था में अपने अनुभवों को सुव्यवस्थित पारस्परिक संबंधों की इकाइयों में अंतर्राकरण करता है । इन संवेदन आधारित आंतरिक प्रतिरूपों के कारण, शिशु अपनी ही दुनिया को खोजने के लिये पहल ले सकता है । यह क्षमता शिशु के केन्द्रीय स्नायुविक व्यवस्था की अप्रतिहत परिपक्वता तथा उपयुक्त अनुभवों पर आधारित होता है । संवेदी, चालक तथा भावात्मक क्षेत्रों के अनुभवों को जोड़ना तथा कृत्रिम क्रीड़ाओं तथा भाषा के उपयोग द्वारा योजनाओं का अभ्यास स्वयं को समनुरूप तौर पर स्वयं को औरों से विभेदीकरण करना तथा भाषा के द्वारा संवेदनाओं को अभिव्यक्त करना ये सारे प्रतिनिधित्व क्षमता, विभेदीकरण तथा दृढीकरण की अवस्था को दर्शाते हैं ।

## महत्व

### मध्यस्थता :

- शिशु के दृष्टि क्षेत्र के सामने एक खिलौने को पकड़ कर उसे ऐसे घुमाये कि वह शिशु के हाथ तक पहुँचे, ताकि शिशु खिलौने को स्वयं अपनी दृष्टि क्षेत्र में ला सके ।
- यदि शिशु खिलौने को अपने दृष्टि क्षेत्र में नहीं लाता, उसके हाथ धीरे से खिलौने के मध्य-भाग में ले जाइये या धीरे से उसके सिर को खिलौने वाले हाथ की ओर घुमाये । प्रतीक्षा कीजिये कि शिशु स्वयं ये सब कर सकता है या नहीं।
- गुड़िया को चूमकर, थपथपाकर, बात करके, खाना खिलाने का अभिनय करके शिशु से अनुकरण करवाइये ।
- कार जैसे खिलौने द्वारा, आवाजे तथा करतब दिखलाकर, अनुकरण करवाये ।
- एक गोला लेकर उसको लुढका कर फेंककर, उछाल कर शिशु द्वारा अनुकरण करवाइये ।
- एक बोतल तथा कंघी देकर गुड़िया को दूध पिलाने, कंघी करने का अभ्यास करायें ।

# मद - 24 कभी कभार अन्य शिशुओं के पास खेलता है

आयु: 12-15 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

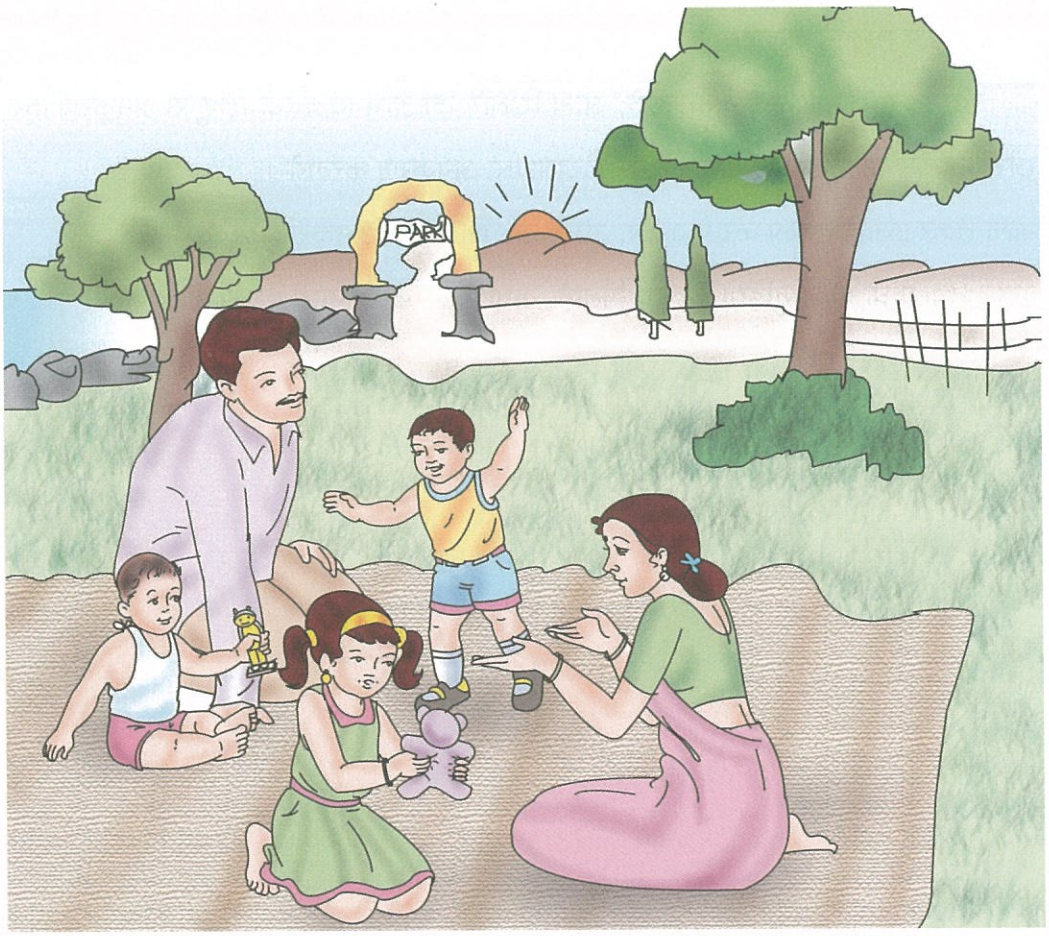


शिशु अन्य शिशुओं के बारे में उत्सुक होकर सीख रहा है ये सहकारी खेल तथा सामाजिकीकरण कौशल बढ़ाता है, जिसके कारण वह विभिन्न परिस्थितियों में अन्य शिशुओं के साथ मेल-जोल बढ़ा सकता है ।

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- शिशु के साथ एक और सम आयु वाले शिशु को खेलने के लिये साथ में लीजिये । तीसरे शिशु को कार ढकेलने, ईंटो से भवन बनाने जैसे कार्य (जिनको देखकर शिशु को अनुकरण करना है) । यह देखे कि ब्लक्स, कार, जैसे कई एक प्रकार की वस्तुएँ वहाँ पर हो ।

- अन्य शिशु को कुछ शारीरिक क्रिया जैसे कुर्सी के नीचे रेंगना तथा अपने सिर पर डिब्बा रखना, करने दीजिये । शिशु से उसका अनुकरण करने को कहिये ।

- दो शिशुओं को एक साथ बिठाइये । पहले "बाइ-बाइ" जैसे शब्दों को अनुकरण करने को कहो । सिर के ऊपर हाथ रखना, पैरों के अंगूठे को छूना, तथा सिर के बल फर्श पर ठहरना तथा लुढकना जैसी नई क्रियाएँ करना सिखाइये। सफलता से करने पर प्रशंसा कीजिए ।

- दो शिशु मिलकर गोल घूमने का खेल खेले ।

# मद - 25 कभी वयस्को से लिपटता है कभी उनको ढकेल देता है आयु: 15-18 महीने

## क्षेत्र: अनुरक्ति

### सामान्य

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- शिशु को मण्डी, बगीचे, या बाजार को ले जाइये । जब शिशु आपसे लिपटे रहता है उसे धैर्य दीजिये । यदि स्वयं कुछ करना चाहे तो उसे करने दीजिये ।

**सूचना:**

शिशु यह महसूस कर रहा है कि वह बिना माता-पिता की सहायता के स्वयं कुछ काम कर सकता है । ये स्वतंत्रता की ओर महत्वपूर्ण कदम है ।

**संशोधन:**

**मोटर क्षति:** यदि शिशु नहीं हिल सकता, सिर को दूसरी ओर फेरना तथा आँख बंद करना जैसी अन्य प्रतिक्रियाएँ देखिये ।

# मद - 26 खिलौनों को उठाता है तथा दूर हटाता है

आयु: 15-18 महीने

## क्षेत्र: सहकारिता

### सामान्य

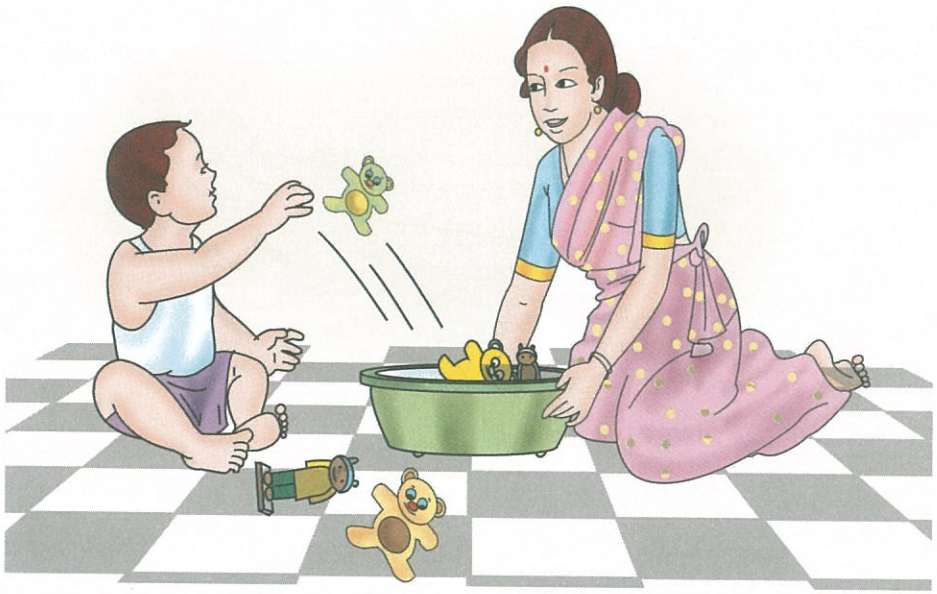

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- शिशु की गतिविधियों के बदलाव के लिए तैयार कीजिये ये कहते हुए कि "भारी चीजे हटाकर रखने का समय हो गया या जाने का समय आ गया ।" कुछ समय पश्चात् कुछ खिलौनों को उठा कर शिशु से सहायता माँगे । वह पहली बार में केवल कुछ ही वस्तुओं को उठाएगा ।
- शिशु को तैयार करने के बाद, उससे कहिये कि वह अपने सारे खिलौने दूर हटा दे । जब सारे खिलौनों को शिशु हटायेगा उसे पुरस्कृत कीजिये तथा छाती से लगा लीजिये ।

**संशोधन:**

**चालक क्षति :** यदि शिशु अपने अगांगो का उपयोग कर सकता है, उसे छोटे खिलौनों को हटाकर रखने के लिए प्रोत्साहित कीजिये ।

**दृष्टि क्षति:** शिशु की पहुँच के दायरे में एक छोटा डिब्बा और खिलौने समनुरूप से उपयोग करें । डिब्बे में डालने को प्रोत्साहित करें । जैसा जैसा कुशलता बढ़ती है सहायता करना कम कीजिए ।

# मद - 27 अन्य शिशु या वयस्क का अनुकरण करता है

आयु: 15-18 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

संकेत पढ़ने और पढ़कर उसका अनुकरण करने की शिशु की क्षमता, उसके भावात्मक विकास, अभिव्यक्ति तथा माता-पिता के साथ संचार के लिये आवश्यक है । अन्य व्यक्तियों की अभिव्यक्तियों तथा क्रियाओं को देखकर, शिशु भी उसी की तरह प्रतिक्रिया व्यक्त करता है । इस प्रकार का अमौखिक संचार देखभाल करने वाले तथा अन्य व्यक्तियों के साथ शिशु के संबंधों को प्रतिक्रियात्मक बनाते है ।

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- शिशु के साथ एक और शिशु को खेलाने के लिए रखे । खिलौना कार ढकेलने, भवन बनाने के लिये ईटों को जमाने आदि कार्य उस अन्य शिशु से करवाये जिसे देखकर शिशु अनुकरण करें ।
- कुर्सी के नीचे रेंगने, या सिर पर डिब्बा रखने जैसे कार्य अन्य शिशु से करवाये तथा शिशु को उसका अनुकरण करने को कहें ।
- दो शिशुओं को एक साथ बिठाएँ । पहले शिशु द्वारा "बाय-बाय" जैसी क्रियायें करवाये । बाद में अन्य क्रियाएँ जैसे सिर को छूना, पैरों के अंगूठे को छूना, सिर के बल फर्श पर झुकना, गोल गोल घूमना जैसे नई क्रियायें करके, शिशु द्वारा अनुकरण करवायें ।
- "रिंग ए राउन्ड द रोसी" खेल दो शिशुओं द्वारा करवाये ।

# मद - 28 अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तत्काल पारितोषिक माँगता है

आयु: 21-24 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

विकास: शिशु जानता है कि उसके आस-पास के वयस्क उसे कई चीजे देते है । धीरे-धीरे वह जानना शुरु करता है कि वह हमेशा अपनी मनमानी नही कर सकता तथा जो चाहे वो चीज पा सकता । वयस्क उस पर अधिक से अधिक सीमाये लगाकर मनमानी करने तथा उसके अनुपयुक्त मांगो को पूरा करने से मना करते हैं । परंतु वह ये भी जानता है कि मनाहि हमेशा के लिये सुनिश्चित नही होता । अत: वह अपनी माँगों को मनवाने के लिये चालबाजी की कला का उपयोग करता है यहीं से उसकी मर्जी तथा स्वतंत्रता की परीक्षा का आरंभ होता है । शिशु तोल-मोल या सौदा करने का प्रयत्न करता है, तथा यह देखना चाहता है कि, अपने परिसर लोगों पर उसका कितना अधिकार तथा नियंत्रण है । इस प्रकार वह अपनी स्वतंत्रता को, दावे के साथ जारी रखता है ।

### महत्व

अपनी पहचान का गठन करता है ।

### मध्यस्थता :

- प्रतिदिन के नित्यक्रमों में शिशु को उसकी राय को व्यक्त करने दीजिये । उसके उचित प्रस्ताव को तथा अभिप्राय को स्वीकार करने से उसका मनोबल और स्वतंत्रता बढ़ती है ।

# मद - 29 अपनी वस्तुओं की दृढ़ता से रक्षा करता है

आयु: 21-24 महीने

## क्षेत्र: क्षेत्र स्वतंत्रता

### सामान्य

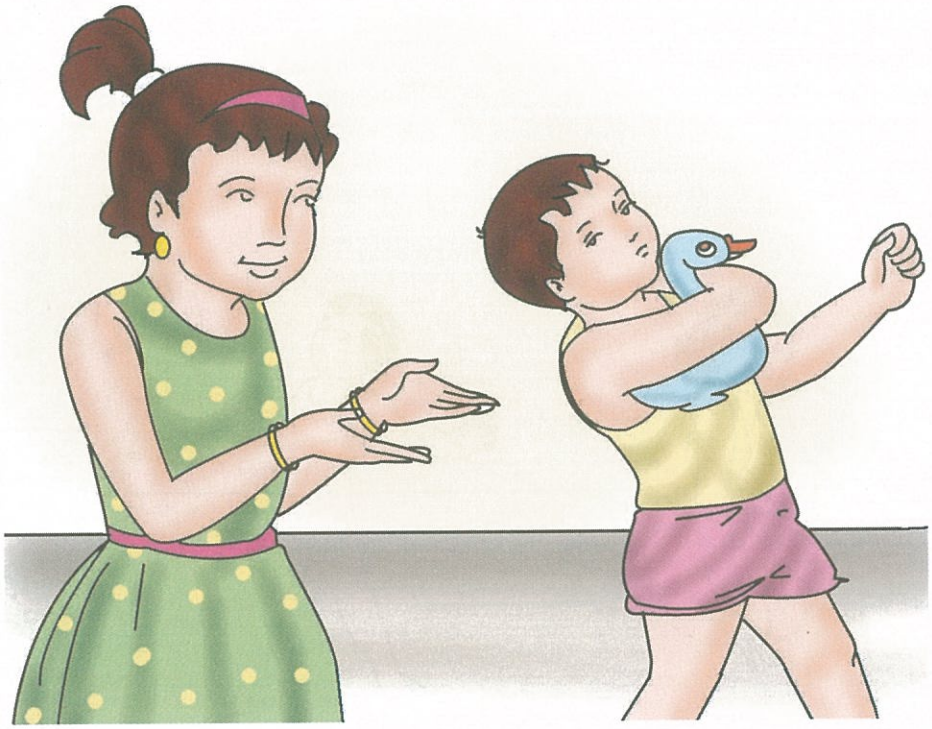

### महत्व

अपनी वस्तुओं के प्रति आदर-भाव तथा अपनेपन की भावना का विकास करने में सहायक होता है । शिशु को व्यक्तियों तथा अपनी वस्तुओं से सम्बद्ध होने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- शिशु से उसकी वस्तुएँ माँगिये । उदाहरणार्थ: उसके चहेते खिलौने को लाने के लिये कहें और उससे पूछें कि वो किसके खिलौने है । शिशु को उत्तर देने का अवसर दीजिये तथा उसे बताइये कि ये खिलौने उसी के है । ऐसे खेल खिलायें जिसके द्वारा वह अपने खिलौनो या वस्तुओं को पहचाने तथा उसके भाई-बहनो की वस्तुओं खिलौनों को पृथक करें ।

# मद - 30 पूछने पर अपना प्रथम नाम बताता है

आयु: 24-30 महीने

## क्षेत्र: पहचान

### सामान्य

माँ के तथा अन्य वस्तुओं के अंतर-चित्रण के ठीक विपरीत सवत: का मानसिक चित्रण ही स्वपहचान को बनाता है।

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- कक्ष में पहुँचते ही तथा जब भी उसे आप बुलाना चाहें शिशु का नाम पुकारिये । अनुकरण को प्रोत्साहित कीजिये ।
- दर्पण का उपयोग करते हुए, शिशु को उसका प्रतिबिंब बताइये तथा उसका नाम दोहराये । उसी प्रकार आप स्वयं की ओर इंगित करके पूछिये पिता यहाँ पर है ।
- आँख-मिचौनी या लुका-छिपी खेल खेलें । आप अपना चेहरा छिपायें या कुर्सी के पीछे छिप जायें । शिशु का नाम पुकारें तथा उसको ढूँढने निकले । टटोलते हुए शिशु को छू लें और कहें शिशु यहाँ है । शिशु को दोहराने को कहे।
- शिशु को छिपने के लिये प्रोत्साहित करे तथा पूछें कि वह कहाँ है । नाम से पुकारने पर छिपने की जगह से कैसे सामने आयें, उसे करके बताएँ ।

# मद - 31 अपने स्वत: का लिंग जानता है

आयु: 24-30 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

### महत्व

**मध्यस्थता :**

- शिशु से पूछिये वह लड़का है या लड़की उसे अपना सिर हिला कर हॉ या नहीं कहने को कहें ।
- अन्य शिशुओं को ध्यान से देखने को कहिये । उनमें से उससे लड़के तथा लड़कियों की पहचान कराइये शिशु को लड़के तथा लड़कियों के चित्र दिखाकर पूछिये इनमें लड़का कौन और लड़की कौन ।

**संशोधन:**

**दृष्टि क्षेत्र:** शिशु लड़के - लड़कियों में अंतर और बड़ा होने तक नही पहचानेगा । अत: उसके शरीर के अंगों के नाम बताकर, लड़के-लड़कियॉ, पुरुष और स्त्री के बारे में बताएँ । उसे लड़के-लड़की में अंतर ध्वनि के आधार पर करवाये ।

# मद - 32 स्वेच्छा से अपने खिलौनों को चुनता है तथा स्वत: मनोरंजन करता है

## क्षेत्र: क्षेत्र स्वतंत्रता

### सामान्य

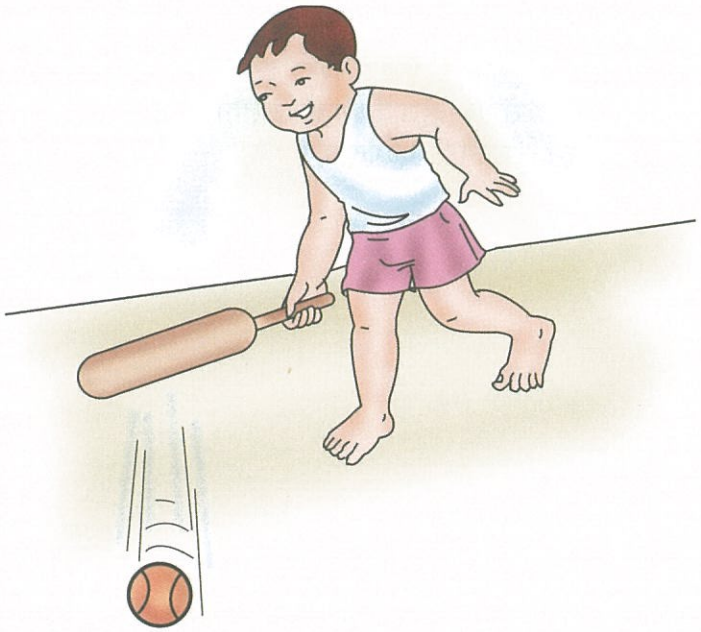

शिशु जब अपने आप घूमने फिरने लगते हैं तथा अपने कदमों को नियंत्रित कर सकते हैं, उसी अवस्था से छोटे बच्चों में स्वेच्छा की इच्छा प्रबल हो जाती है । 18 माह की आयु तक शिशु को चलने का कुछ अभ्यास हो जाता है तथा स्वयं चलने के काबिल हो जाता है । जैसे ही शिशु अपने प्रस्तुत परिसर में सुरक्षित हो जाता है, वह नई चीजे खोजता है । यही उसके सीखने का तथा अपने देखभाल करने वालों की निरंतर उपस्थिति से छुटकारा पाने का उपयुक्त समय है । स्वत: चलन की क्षमता जो स्वप्रेरित होती है, स्वेच्छा से सीखने तथा आत्मविश्वास को प्रोत्साहित करता है ।

### महत्व

अपनी वस्तुओं को पहचानने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- खेलने की जगह खिलौनों के डिब्बे या कपड़े की पेटी को रखिये । जब शिशु अपनी गतिविधि में निमग्न होता तब कक्ष से थोड़ी-थोड़ी देर के लिये बाहर जाइये । उसकी गतिविधियों के बारे में वर्णन करते हुए तथा स्वक्रीड़ा की प्रशंसा करते हुए, बीच-बीच में ऐसे खिलौने जिनके साथ वह ठीक ढंग से खेल नही पाता, के साथ खेलने में उसकी सहायता करें ।

**सूचना:**

खिलौनों को समनुरूप जगह पर रखिये तथा शिशु को अपने खिलौने स्वत: रूप से चुनने को और बिना कहे खेलने को प्रोत्साहित कीजिये ।

## संशोधन:

**चालक क्षति:** यदि शिशु निश्चल होता हो तो उसकी कलाइयों और टखनों पर हल्के-फुल्के भारवाले खिलौनों को ऐसा बाँध दीजिये कि खिलौने उसके हाथ और पैरों की पहुँच में हो । जब वह उनके साथ खेलने का प्रयास करे तो उसे पुरस्कृत करें ।

**दृष्टि क्षति :** शिशु को दिनभर अनुकूल क्षेत्रों में रखें शिशु कुर्सी जिसके अतराफ टेबुल हो या चटाई बिछाकर उस पर रखें और उसके हाथों और पैरों की पहुँच के भीतर खिलौने रखें । आवाज करनेवाले खिलौने आदि खेलने शिशु को प्रोत्साहित करें या नरम खिलौने से गुदगुदायें ।

# मद - 33 संगीत के साथ ताली बजाता है

आयु: 24-30 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

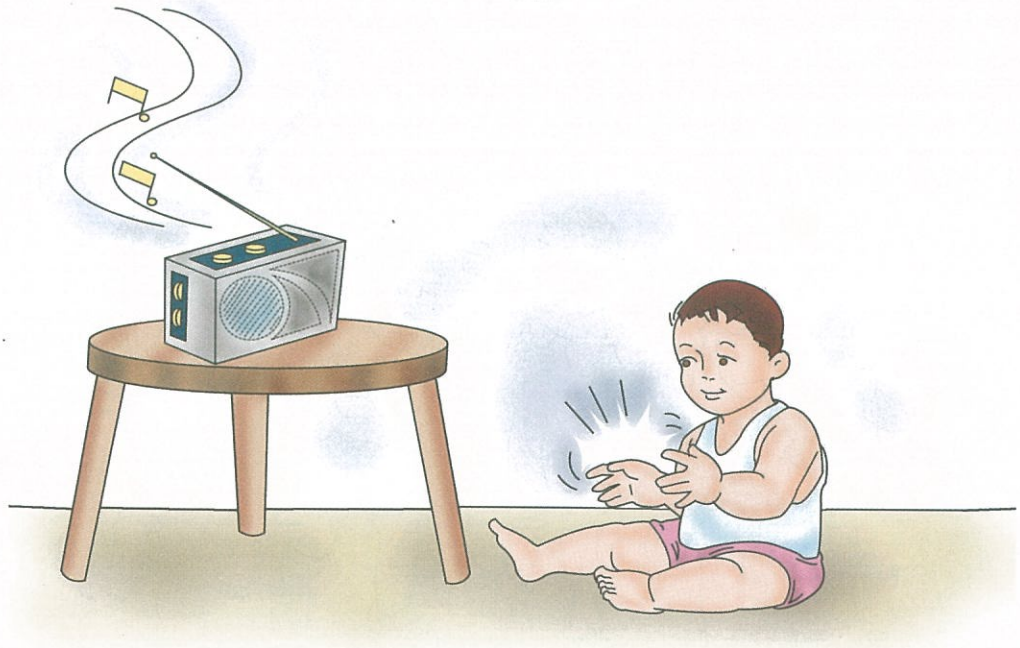

शिशु अक्सर असामान्य ध्वनियों तथा आवाजों को सुनने में दिलचस्पी रखता है । खासकर जब संगीत बज रहा होता है तब शिशु उसका आनंद उठाता है और ये उनके चेहरे के हाव-भाव तथा शारीरिक गतिविधियों से पता चलता है ।

### महत्व

लय तथा खुशी का मेल उनको संगीत को पसंद करने को प्रोत्साहित करता है । उसके अतिरिक्त, संगीत बच्चों को उपशामक करने में सहायक होता है तथा उनमें सकारात्मक भावनाएँ विकसित करता है ।

### मध्यस्थता :

- संगीत / गाना बजाइये तथा ताली बजाते हुए या नाचते हुए उसका आनंद लेने का प्रदर्शन कीजिये । शिशु को आपका अनुकरण करने को प्रोत्साहित करें ।
- संगीत / गाने के आवाज को कम या ज्यादा कीजिये जिससे शिशु के आनंदित होने तथा चेहरे की अभिव्यक्तियों का पता चलता है ।
- शिशु के साथ संगीत के बारे में बात करें और उसे संगीत से आनंद उठाने में सहायता करें ।

# मद - 34 साधारणतया अन्य बच्चों के बगल में खेलता है परंतु उनके साथ नहीं खेलता आयु: 15-18 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

### महत्व

संबंधों को बनाने में सहायक ।

### मध्यस्थता :

- शिशु को अन्य शिशुओं के साथ मेल जोल बढ़ाने दीजिये । अन्य शिशुओं के पास उसे ठहराये ताकि वह उन्हें खेलते हुए देख सके । जब वह उनकी ओर जाकर उनके साथ बैठता है तो उसे प्रोत्साहित करें ।
- अपने शिशु को व्यस्त जगहों पर ले जाइये तथा अन्य बच्चों को देखने तथा उनका अनुकरण करने को कहिये ।
- शिशु को अन्य शिशुओं के पास ठहराये ताकि वह उन्हें खेलते हुए देख सके ।

**सूचना:**

इस आयु के बच्चे साधारणतया अन्य बच्चों के साथ नहीं खेलते, परंतु वे अन्य बच्चों को खेलते हुए देखकर उनके पास जा सकते है और खेल का मजा ले सकते है ।

## संशोधन:

**श्रवण-क्षति:** आपके बच्चे को अन्य बच्चों से मिलवाइये और समझाइये कि वह ठीक से सुन नहीं सकता।

**चालक क्षति:** यदि शिशु ठीक से रेंग या सरक नहीं सकता तो उसे ऐसी जगह पर रखें कि वह अन्य बच्चों को घर से स्कूल या वापस घर आते-जाते या खेलते देख सके ।

**दृष्टि क्षति:** अन्य बच्चों को ध्वनि उत्पन्न करने वाले खिलौनों के साथ खेलने को और उससे बात करने को कहें।

# मद - 35 अपना प्रथम नाम तथा आयु बताता है

आयु: 15-18 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

### महत्व

**मध्यस्थता :**

बच्चे को अपनी पहचान बनाने तथा अपनी हैसियत बढ़ाने में सहायक ।

- एक दर्पण लेकर उसमें बच्चे को झाँककर देखने को कहें और उससे पूछे कि उसमे किस की छाया है । बच्चे को उत्तर देने के लिये प्रोत्साहित कीजिये तथा फिर पूछिये कि उसकी आयु क्या है । उससे उसकी आयु बताये ।
- अन्य बच्चों से कहिये कि उसको उसके नाम तथा आयु के साथ पुकारें ।

**संशोधन:**

**दृष्टि क्षति:** दर्पण में चेहरा दिखाने की प्रक्रिया न करें ।

# मद - 36 वयस्को की सहायता करना चाहता है

आयु: 30-36 महीने

## क्षेत्र: सहकारिता

### सामान्य

### महत्व

निर्देशों का पालन भविष्य में कुशलताओं की नींव है ।

साधारण अनुरोध को मानने का अर्थ है कि बच्चा नित्यक्रम के गतिविधियों में भाग ले सकता है ।

## मध्यस्थता :

1. बच्चे को बर्तनों, ब्रशों, नैकपिन तथा स्पंज से खेलने दीजिये । यदि वह उन वस्तुओं का सही उपयोग करके कुछ अच्छा काम कर सकता है, तब उसे पुरस्कृत करें ।
2. खाना खाने के समय मेज पर सारी चीजों को रखने का काम बच्चे को सौंपिये यदि वह ठीक ढंग से सारी चीजे मेज पर रख सके तो उसे पुरस्कृत कीजिये ।
3. शिशु को बर्तन साफ करना या झाड़ू लगाने जैसे घरेलू काम करने दीजिये ।

## संशोधन:

**मोटर क्षति:** यदि बच्चा अपने हाथ हिला सकता है तब उसे धोने या सफाई करने का काम करने दीजिये।

**दृष्टि क्षति:** आप घरेलू काम करते समय बच्चे को साथ लेकर उसको बताइये कि आप क्या काम और क्यों कर रहे है ।

# मद - 37 लड़के और लड़की के बीच के अंतर को पहचानता है आयु: 30-36 महीने

## क्षेत्र: पहचान

### सामान्य

आरंभ में बच्चे अपने संरक्षक को पहचानते है तथा बाद में संरक्षक तथा अजनबी में अंतर पहचान सकते है ।

### महत्व

लिंग भूमिका की रूढिबद्ध धारणा की विरचना करता है ।

### मध्यस्थता :

- बच्चे को लड़के और लड़कियों के चित्र दिखलाइये । उस चित्र में लड़के और लड़कियों को पहचानने को कहिये या खेलते समय पहचानने को कहिये ।
- बच्चे से उसकी स्वत: की लिंग को पहचानने को कहे ।

### संशोधन:

**दृष्टि क्षति:** बडी उम्र तक भी बच्चा लिंग भेद की पहचान नही कर पाता है । वह जिससे भी परस्पर क्रिया कर रहा हो उस बच्चे का लिंग बताइये ।

# मद - 38 अन्य बच्चे के साथ खेलना आरंभ करता है
## आयु: 30-36 महीने

## क्षेत्र: सामाजिक क्रीड़ा

### सामान्य

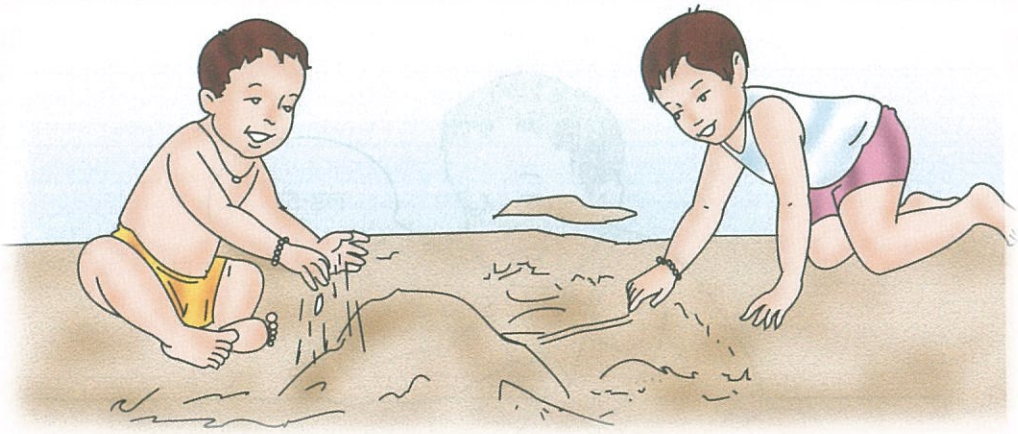

सामाजिक क्रीड़ा के समय बच्चा अन्य बच्चों के साथ खेलता है । वे अपने खिलौने आपस में मिल-बाँटकर खेलते हैं तथा पिता, माँ तथा शिशु की भूमिका निभाते है ।

### महत्व

संबंध बनाने में सहायक होता है ।

### मध्यस्थता :

- बच्चे को अपनी आयु से बड़े बच्चों के साथ खेलने का अवसर दें । जब उनके साथ अपने खिलौने बाँट कर बारी-बारी से खेलने पर उसकी प्रशंसा करें ।
- उसे अपने भाई/बहन को अपना एक खिलौना देन को प्रोत्साहित करें ।
- बगीचे में उसे ये सिखाया जाये कि हर बच्चा बारी-बारी से झूला या फिसलन के खेल खेलें ।

### संशोधन:

**मोटर क्षति:** चूँकि उसके हाथ-पैर काम नहीं करते, एक खिलौना देकर खेलने में सहायता करें और अन्य बच्चे से करवाइये ।

**दृष्टि क्षति:** अन्य बच्चों को करते हुए देखकर वर्णन कीजिये । (वे क्या कर रहे हैं, किसकी बारी है) बच्चे को बताये कि, वह उसकी बारी है या अन्य बच्चे की बारी ।

# परिशिष्ट

## परिशिष्ट : अ

# वाणी, भाषा तथा संचार


| मद संख्या | वर्णन | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | बोलने वाले के चेहरे की ओर देखता है (आयु: 0-3 महीने) | 23 |
| 2. | मानव की आवाज को सुनकर रोना बंद करता है (आयु: 0-3 महीने) | 25 |
| 3. | विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं के लिए विभिन्न प्रकार के रोदन (आयु: 0-3 महीने) | 27 |
| 4. | शिशु को खाना खिलाने के बाद या डायपर बदलने के पश्चात् कुजन करना (आयु: 0-3 महीने) | 29 |
| 5. | शिशु क्रोध से कही गयी ध्वनियों से भयभीत होता है तथा प्रतिक्रिया दिखाता है (आयु: 4-6 महीने) | 31 |
| 6. | मुख में जीभ का अन्वेषण तथा होठों को चाटने, चरमराने, बड़बड़ाने खट-खट की आवाजें (आयु: 4-6 महीने) | 33 |
| 7. | शिशु प्रारंभिक, तुतलाहट, बहुधा सुनी गई बाबा या दादा जैसी ध्वनियॉ करता (आयु: 4-6 महीने) | 35 |
| 8. | नाम सुनते ही सिर घुमाता है (आयु: 4-6 महीने) | 37 |
| 9. | आसपास के परिसर में कुछ सामान्य वस्तुओं तथा व्यक्तियों के नामों को पहचानता है (आयु: 7-9 महीने) | 39 |
| 10. | अन्य लोगों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए शब्दों की ध्वनियों का उपयोग करता है (आयु: 7-9 महीने) | 41 |
| 11. | बातचीत जैसी अभिव्यक्ति को उपयोग करके, शिशु अपनी ही भाषा में कुछ वस्तुओं के नाम लेता हुआ प्रतीत होता है । (आयु: 10-11 महीने) | 43 |
| 12. | "नही" शब्द को समझता है (आयु: 10-12 महीने) | 45 |
| 13. | जब-तब इशारों के साथ-साथ शिशु का साधारण आदेशों का अनुसरण करना (जैसे: वह चीज नीचे रखे, गोला कहॉ है) (आयु: 10-12 महीने) | 46 |
| 14. | शिशु कुछ प्रश्नों की उपयुक्त मौखिक प्रतिक्रिया / उत्तर देकर अपनी ग्राह्यशक्ति/ समझने की शक्ति को प्रदर्शित करता है (उदाहरण: नमस्ते / बाई-बाई) (आयु: 10-12 महीने) | 48 |
| 15. | शिशु ध्वनियों का अनुकरण करने का प्रयत्न करता है (आयु: 10-12 महीने) | 50 |

| | | |
|---|---|---|
| 16. | शिशु, अम्मा, पापा, दादा इत्यादि प्रारंभिक वास्तविक शब्द उच्चरित करता है । (आयु: 10-12 महीने) | 52 |
| 17. | नाम बताने पर शिशु सामान्य वस्तुओं को इंगित करता है । (आयु: 13-15 महीने) | 54 |
| 18. | पशुओं की आवाजों का अनुकरण करता है (आयु: 13-15 महीने) | 55 |
| 19. | शरीर के 4-5 अवयवों की ओर इंगित करता है या 5 या अधिक चित्रों की ओर इशारा करता है । (आयु: 14-16 महीने) | 56 |
| 20. | कुछ प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देता है क्या-कर रहा, कहाँ-वस्तु (आयु: 16-18 महीने) | 58 |
| 21. | लगभग 50 शब्द तक कह सकता है (आयु: 16-18 महीने) | 59 |
| 22. | दोहरे शब्दों की पदावली (आयु: 19-24 महीने) | 60 |
| 23. | सरल वाक्य तथा 3 शब्दीय वाक्य (आयु: 19-24 महीने) | 61 |
| 24. | शिशु 4-5 शब्दवाले वाक्यों का निर्माण करता है । (आयु: 25-36 महीने) | 62 |
| 25. | मिश्रित वाक्यों का उपयोग करता है (आयु: 25-36 महीने) | 63 |

# परिशिष्ट : बी

# सामाजिक


| मद संख्या | वर्णन | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | व्यक्तियों के चेहरे की ओर एक क्षण देखता है (आयु: 0-3 महीने) | 77 |
| 2. | छूने पर / बात करने पर / देखने या आवाज सुनने पर मुस्कुराता है या आवाजें निकालता है । (आयु: 0-3 महीने) | 79 |
| 3. | खेलते हुए हाथ पैर मारता है (आयु: 0-3 महीने) | 81 |
| 4. | किसी के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखकर वह भी मुस्कुराता है । (आयु: 3-6 महीने) | 82 |
| 5. | उत्तेजित करने पर हँसता है (गुदगुदी, उछाल, मौखिक क्रीडा) (आयु: 3-6 महीने) | 83 |
| 6. | खेलते-खेलते चेहरे पर कपड़ा डाल लेता है (आयु: 3-6 महीने) | 84 |
| 7. | बात करने वाले व्यक्ति की ओर पलटता है (आयु: 3-6 महीने) | 85 |
| 8. | दर्पण में अपने प्रतिबिम्ब को थपथपाता है (आयु: 3-6 महीने) | 87 |
| 9. | बाँहों में आने के लिए अपने हाथ ऊपर उठाता है । (आयु: 3-6 महीने) | 88 |
| 10. | माँ की आवाज सुनते ही उसकी ओर पलटता है (आयु: 3-7 महीने) | 90 |
| 11. | अन्य शिशुओं के साथ लुका-छुप्पी खेलते हुए देखकर हँसता है (आयु: 6-9 महीने) | 92 |
| 12. | हाथों में पकड़े हुए खिलौने दिखाता है (आयु: 6-9 महीने) | 93 |
| 13. | खिलौनो / वस्तुओं (झुनझुना, ग्लिास, चम्मच) को देखकर उनके साथ खेलता है उनको नीचे गिराकर उनके भागों को टटोलता है (आयु: 6-9 महीने) | 95 |
| 14. | हाथों से ताली बजाता है तथा हाथ हिलाकर बिदा करता है (आयु: 9-12 महीने) | 96 |
| 15. | किसी वयस्क को कुछ देने के लिये आगे हाथ बढ़ाता है पर देता नही (आयु: 9-12 महीने) | 98 |
| 16. | गुड़िया या पशु को पकड़ लेता है । (आयु: 9-12 महीने) | 100 |
| 17. | माँगने पर वस्तु को देता है (आयु: 9-12 महीने) | 101 |
| 18. | अन्य शिशुओं के साथ शारीरिक तौर पर या मौखिक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करना (आयु: 12-15 महीने) | 102 |

| | | |
|---|---|---|
| 19. | प्रतिदिन के कार्यक्रमों का अनुकरण करता है तथा घरेलू काम करता है (आयु: 12-15 महीने) | 103 |
| 20. | वयस्क को अपने खिलौने देकर वापस नहीं लेता (आयु: 12-15 महीने) | 104 |
| 21. | दिनचर्या के कामों का अनुकरण करता है (आयु: 12-15 महीने) | 105 |
| 22. | विभिन्न वस्तुओं से सत: ही खेलता है (आयु: 12-15 महीने) | 106 |
| 23. | एक ही खिलौने पर विविध प्रकार की क्रियाएँ दिखलाता है (आयु: 12-15 महीने) | 108 |
| 24. | कभी कभार अन्य शिशुओं के पास खेलता है (आयु: 12-15 महीने) | 110 |
| 25. | कभी वयस्को से लिपटता है कभी उनको ढकेल देता है (आयु: 15-18 महीने) | 112 |
| 26. | खिलौनों को उठाता है तथा दूर हटाता है (आयु: 15-18 महीने) | 113 |
| 27. | अन्य शिशु या वयस्क का अनुकरण करता है (आयु: 15-18 महीने) | 114 |
| 28. | अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये तत्काल पारितोषिक माँगता है (आयु: 21-24 महीने) | 115 |
| 29. | अपनी वस्तुओं की दृढ़ता से रक्षा करता है (आयु: 21-24 महीने) | 116 |
| 30. | पूछने पर अपना प्रथम नाम बताता है (आयु: 24-30 महीने) | 117 |
| 31. | अपने स्वत: का लिंग जानता है (आयु: 24-30 महीने) | 118 |
| 32. | स्वेच्छा से अपने खिलौनों को चुनता है तथा स्वत: मनोरंजन करता है | 119 |
| 33. | संगीत के साथ ताली बजाता है (आयु: 24-30 महीने) | 121 |
| 34. | साधारणतया अन्य बच्चों के बगल में खेलता है परंतु उनके साथ नहीं खेलता (आयु: 15-18 महीने) | 122 |
| 35. | अपना प्रथम नाम तथा आयु बताता है (आयु: 15-18 महीने) | 124 |
| 36. | वयस्को की सहायता करना चाहता है (आयु: 30-36 महीने) | 125 |
| 37. | लड़के और लड़की के बीच के अंतर को पहचानता है (आयु: 30-36 महीने) | 127 |
| 38. | अन्य बच्चे के साथ खेलना आरंभ करता है (आयु: 30-36 महीने) | 128 |

# संदर्भ

# संदर्भ


कूप.जे, गोल्डबर्ट (1987), कम्युनिकेशन बिफोर स्पीच, बेकेन्हेन, क्रूम हेल्म पब्लिशर्स, लंदन।

इनग्राम.डी, (1989) फस्ट लैंग्वेज एक्युजिशन, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, न्यू यार्क ।

रोबर्ट.ई, ओवेन्स जे आर, (1984) लैंग्वेज डेवलप्मेंट एन इन्ट्रोडक्शन, मेरिल पब्लिशिंग कंपनी, कोलंबस।

कीर्नन सी, रीड बी, गेल्डर्बाट जे, (1987) फाउंडेशन ऑफ कम्युनिकेशन एंड लैंग्वेज, ए कोर्स मैन्युअल मैनचेस्टर युनिवर्सिटी प्रेस, ब्रिटिश लाइब्रेरी कैटलोगुइंग ।

जार्ज एच. शेम्स (1990) ह्यूमन कम्युनिकेशन डिसोडर्स, मेरिल पब्लिशिंग कंपनी, कोलंबस।

राबिन एल्विस एंड क्रैल्री पेनन (1989), लैंग्वेज थेर्पी ए प्रोग्राम टू टीस इंग्लिश व्यूर पब्लिशर्स, लंदन।

थामस जे हिक्सन (1980) इन्ट्रोडक्शन टु कम्युनिकेशन डिर्साडर्स प्रेन्टिस हाल पब्लिशर्स न्यू जर्सि।

सोलाडीर (1980) इंटरडिसिप्लिरी लैंग्वेज इंटरवेंशन प्रोग्राम फॉर दी मॉडरेटली टु प्रोफौंड लैंग्वेज रिर्टाडेड चैल्ड, ग्रुने एंड स्ट्रेटन पब्लिशर्स न्यू यार्क ।

चार्लस वैनरिपर (1996), (IxEd) स्पीच करेक्शन एन इंट्रोडक्शन टु स्पीच पाथालोजि एंड आडियोलॉजी, आलिन एंड बकॉन पब्लिशर्स, लंदन ।

डैना विलियम्स (1995), अर्ली लिजनिंग स्किल्स । विनस्लो प्रेस पब्लिशर्स टेलफोर्ड रोड, बिसिस्टर।

ग्लीसन बीजे, (1989) डेवलपमेंट ऑफ लैंग्वेज (II Ed) मेरिल पब्लिशिंग कंपनी, कोलंबस ।

गिल्बर्ट मेके, एंड विलियम इुन्न (1989) अर्ली कम्युलिकेटिव स्किल्स, रौटलेज पब्लिशर्स, लंदन एंड न्यूयार्क ।

सुब्बा राव टी.ए, एनआईएमएच, ए मैन्युल ऑन डेवलपिंग कैम्युनिकेशन स्किल्स इन मेंटली रिटार्डेड ।

लंच, सी एंड कूपर, जे (1991) अर्ली कम्युनिकेशन स्किल्स, विनस्लो पब्लिशर्स, बिसेस्टर ।

विकीम जॉनसन, (1975) स्टेप बै स्टेप लर्निंग गाइड फॉर रिगार्डेड इनफैंट एंड चिल्ड्रन । सिराक्युस युनिवर्सिटी प्रेस, न्यू यार्क ।

एम.एन. हेग्डे (1996) ए कोर्स बुक ऑन लैंग्वेज डिसार्डर्स इन चिल्ड्रन । सिंगुलर पब्लिशिंग ग्रुप, सैन्डिगो - लंदन ।

एल.माकोहोन (1980) टीचिंग एक्सप्रेसिव एंड रिसिप्टिव लैंग्वेज टु स्टुडेंट्स विथ मॉडरेट एंड सिवियर हाण्डिक्याप्स, प्रो.ईडी, पब्लिशर्स, टेक्सस

माइकेलिस सी.टी (1983) हैण्डिकैप्ड इन्फेन्टस एंड चिल्ड्रन, यूनिवर्सिटी पार्क पब्लिशर्स, बाल्टिमोर

जार्ज टी.मेनचर, पी एच डी (1981) अर्ली मैनेजमेंट ऑफ हियरिंग लॉस ग्रुन एंड स्टाटन पब्लिशर्स, न्यू यार्क ।

जेरी एल नार्दर्न, पी एच डी (III Ed) (1984) हियरिंग इन चिल्ड्रन, विलियम्स एंड विलियम्स, पब्लिशर्स, बाल्टीमोर लंदन ।

शैरोन ए.रेवर (1991) स्टैटेजीस फॉर टीचिंग एट रिस्क एंड हैन्डिकैप्ड इन्फैन्टस एंड टाडलर्स ए ट्रान्स डिसिप्लिनरी अप्रोच, मेरिल पब्लिशर्स न्यू यार्क ।

रोनाल्ड एस.इलिंगवर्थ (XEd) (1987) दि नार्मल चाइल्ड, चर्चिल, लिविंग्स्टोन लंदन ।

रोनाल्ड एस.इलिंगवर्थ (VIII Ed) (1984) दि डेवलपमेंट ऑफ इन्फन्ट एंड यन्ग चाइल्ड नार्मल एंड अबनार्मल, चर्चिल लिविंग्स्टान, लंदन ।

चार्ल्स डब्ल्यू स्नो (1989) इन्फन्ट डेवलपमेंट, प्रेन्टिस हाल, एन्गेल वुड क्लिक्स, पब्लिसर्स, न्यू जेर्सी।

वेस्ली एस.केन्नेथ थुर्मन, लीन्डस एफ पर्ल (1993) फैमिली सेन्टर्ड अर्ली इंटरवेन्शन विथ, इन्फैन्टस एंड टोडर्ल्स पॉल एच, ब्रूक्स पब्लिशर्स, बाल्टीमोर ।

शर्मा पी.एल.सोर्स बुक फॉर ट्रेनिंग टीचर्स ऑफ हियरिंग इम्पेयर्ड (1987), नेशनल कौंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, न्यू दिल्ली ।

क्रुटेन्डस, लैंग्वेज इन इनफेंसी एंड चाइल्डहुड ए लिन्विस्टिक इन्ट्रोडक्शन टु लैंग्वेज (1979) मैन्चेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस पब्लिशर्स ।

एम.सी.गार्थी, फीजिकली हैन्डिकैप्ड चैल्ड (1984) फेबर एंड फेबर पब्लिशर्स लंदन ।

सोफिया लेविट, ट्रीटमेंट ऑफ सेरेब्रल पाल्सी एंड मोटर डिले (1995) ब्लाकेवेल पब्लिशर्स, लंदन ।

रवेरा (Ravera) एस.ए.स्ट्रेटेजीस एंड टेक्निकल्स फॉर इनफैंटस एंड टॉडलर्स विथ सिवियर डिजेबिलिटिज (1991) मेरील पब्लिशर्स ।

हेस एंड न्यूबी, आडियोलोजी (1979) यूनिवर्सिटी ऑफ मेर्रीलैंड, प्रेन्टिस हॉल पब्लिशर्स, न्यू जेर्सी

होले बी.मोटर डिवेलपमेंट इन चिल्ड्रन नॉर्मल एंड रिटार्डेड (1970) ब्लाकवेल पब्लिशर्स, लंदन।

मेक कॉर्मिक स्क्रीनिंग फॉर हियरिंग इम्पेर्ड इन यंग चिल्ड्रन (1988) क्रूम हेल्म पब्लिशर्स, लंदन ।

फिनी, एन आर (1974) हैन्डलिंग द सेरेब्रल पाल्सीड चैल्ड एट होम (II Ed) न्यू यार्क, डन्टोन - सनराइज, इंक ।

लेविट-एस (1995) ट्रीटमेंट ऑफ सैरेब्रल पाल्सीड एंड मोटर डिले (III Ed) ऑक्सफर्ड ब्लाकविल साइंस लिमिटेड

हिंचिलिफि ए (2003) चिल्ड्रन विथ सेरेब्रल पाल्सी-ए मैनुअल फॉर थेरापिस्टस, पेरेन्टस एंड कम्यूनिटी वर्कर्स, न्यू डेल्ही, विस्तार पब्लिकेशन्स ।

स्केर्जर ए एल, स्प्रमुटर आई (1990) अर्ली डायग्नोसिस एंड थेरापि इन सेरेब्रल पाल्सी-ए प्राइमर ऑन इन्फैन्ट डेवलपमेंट प्राब्लम्स न्यू यार्क, मार्सेल डेक्कर इंस ।

पेन्सो डी ई (1987) ऑकुपेशनल थेरपी फॉर चिल्ड्रन विथ डिसाबिलिटिज, सौथ वेल्ज, क्रूम हेल्स लिमिटेड ।

विन्सन ई-बी (1998) ऑक्यूपेशनल थेरपी फॉर चिल्ड्रन विथ स्पेशल नॉलज लन्डन वुर पब्लिशर्स लिमिटेड।

शार्ट डी ग्राफ ए.एम पालीसानो जे.आर (1988) ह्यूमन डेवलेपमेंट फॉर ऑक्युपेशनल एंड फीजिकल थेरपिस्ट बाल्टीमोर, यू एस ए

शेपर्ड बी.आर (1995) फिजियोथेरपी इन पीडियाट्रिक्स (IIIएडीशन) आक्सफोर्ड, बटरवर्थ एंड हेनमैन लिमिटेड ।

कैम्पबेल के एस फीसिकल थेरपी फॉर चिल्ड्रन सान्डर्स पब्लिकेशन ।

कैम्पबेल के.एस (1984) पीडियाट्रिक न्यूरॉलोजिकल फीजिकल थेरपी, यू एस ए चर्चिल लिविंग्स्टन इन्क।

थामसन ए स्किन्नर ए, पियर्सी जे, (1996) टाइर्डज फीजियोथेरपी मुम्बई, इंडिया, वर्जीस पब्लिशिंग हाऊस ।

विल्हेल्म जे.आई, (1993) फिजिकल थेरपी असेस्मेंट इन अर्ली इन्फैन्सी यूएसए, चर्चिल लिविंग्स्टोन ।

लॉग एम.टी., टोस्कैनो.के, (2002) पीडियाट्रिक फिजिकल थेरपी (II एडीशन) मेरीलैंड, लिपिनकॉट विलियम्स एंड विल्किन्स ।

स्क्रटन.डी, गिल्बर्स्टन एम (1975) फिजियोथेरपी इन पीडियाट्रिक प्रैक्टिस, लंडन, बंटरवर्थ्स ग्रुप ।

ओ ब्रयान सी., हेप्स.एस (1995) नार्मल एंड इंपेर्ड मोटर डेवलपमेंट, लंडन, चैपमैन एंड हॉल ।

होले.बी. (1976) मोटर डेवलपमेंट इन चिल्ड्रन नार्मल एंड रिटार्टेड, आक्स्फोर्ड, ब्लैकवेल साइंटिफिक पब्लिकेशन्स ।

वर्नर.डी (1987) डिजेबुल्ड विलेज चिल्ड्रन-ए गाइड फॉर कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर्स, रिहैबिलिटेशन वर्कर्स एंड फैमिलीस, यू.एस.ए, दि हिस्पेरियन फाउंडेशन ।

बेली.बी.डी., वोलरी.एम, (1989) - असेसिंग इन्फंट्स एंड प्री-स्कूलर्स विद हैंडीकैप्स यूएसए, मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी ।

पर्शा ए.जे., शिवकुमार टी.सी., नारायण.जे., माधवीलता.के, (2003) रैपिड रीचिंग एंड प्रोग्रामिंग फॉर आइडेंटिफिकेशन ऑफ डिजेबिलिटीज - ए पैकेज ऑन प्रिवेन्शन एंड अर्ली डिटेक्शन ऑफ चाइल्डहुड डिजेबिलिटीज फॉर ग्रास रूट लेवल वर्कर्स, सिकंदराबाद, एनआईएमएच ।

पर्शा ए.जे., राव.एस (2003) अर्ली इंटरवेन्शन टु आईयूजीआर चिल्ड्रेन एट रिस्क फॉर डेवलेपमेंटल डिलेस, सिकंदराबाद, एनआईएमएच ।

स्नो.डब्ल्यु.सी., (1989) इन्फंट डेवलपमेंट, यूएसए, प्रेंटिस हॉल इंटरनेशनल लिमिटेड ।

इलिंगवर्थ.एस.आर. (1991) दि नार्मल चाइल्ड सम प्राब्लम्स ऑफ दि अर्ली इयर्स एंड देयर ट्रीटमेंट एक्सेड लंडन, चर्चिल लिविंग्स्टोन ।

इलिंगवर्थ.एस.आर. (1984) दि डेवलपमेंट ऑफ इन्फंट एंड यंग चाइल्ड (VIIIएडी), लंडन, चर्चित लिविंगस्टोन ।

मार्टिन.एन.जे., जेन्स.जी.के., अटरमियर एम.एस.(1986) दि कैरीलोना करिकुलम फॉर हैंडीकैप्ड इन्फंट्स एंड इन्फट्स एट रिस्क बैटीमोरेम, पॉल.एच., ब्रूकर्स पब्लिशिंग कंपनी ।

जेगर.एल, (1987) होम प्रोग्राम इंस्ट्रक्शन शीट्स फॉर इन्फंट्स एंड यंग चिल्ड्रन, यूएसए., अरिजोना, थेरपी स्किल बिल्डर्स ।

कोहली.टी (1987) पोर्टेज बेसिक ट्रेनिंग कोर्स फॉर अर्ली स्टिमुलेशन ऑफ प्री स्कूल चिल्ड्रन इन इंडिया, न्यू देल्ही, युनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन्स फंड ।

बैटशॉ.एल.,डब्ल्यु., पेरेट.एम.वाई. (1986) चिल्ड्रन विद हैंडिकैप्स-ए मेडिकल प्राइमर (IIएडी) (वोल्यूम5) यूएसए., दि यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगॉन प्रेस ।

ब्राउन एल.एस., डेनोवैन.एम.सी., डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग फॉर इन्फंट्स एंड यंग चिल्ड्रन (IIएडी) (वै.5) यूएसए., यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगान प्रेस ।

जेली एस.आर, कोयनर.बी.ए., (1983) डेवलपमेंटली डिजेबुल्ड चिल्ड्रन एंड टॉड्लर्स, असेसमेंट एंड इन्टरवेंशन, फिलाडेलफिया, एफ.ए., डेवीस कंपनी ।

बनर्जी.ए., हैंब्लीन.टी., (1995) फिजिकल मैनेजमेंट फॉर दि सेरेब्रल पाल्सीड चाइल्ड । कलकत्ता, इंडिया, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सेरेब्रिल पाल्सी ।

बर्न्स.आर.वाई., मैक्डोनाल्ड.जे.(1998) फिजियोथेरपी एंड दि ग्रोइंग चाइल्ड, लंडन, डब्ल्यू.बी.सॉडर्स कंपनी लिमिटेड ।

गेलेह्यू.डी.एल., ओज्मन.जे.सी.(1998) अंडरस्टैंडिंग मोटर डेवलपमेंट - इन्फन्ट्स, चिल्ड्रन, एडोलेसेंट्स, एडल्ट्स (II एडी.) सिंगापूर, मेग्रा-हिल कंपनीस ।

कीफ.जे., (1999) असेस्मेंट ऑफ लो विजन इन डेवलपिंग कंट्रीस बुक-2, असेस्मेंट ऑफ फंक्शनल विजन, जिनेवा, डब्ल्युएचओ ।

क्रैजिसेक.एम.जे.,टामलिन्सो.ए.आई.टी. (1983) डिटेक्शन ऑफ डेवलपमेंटल प्राब्लम्स इन चिल्ड्रेन-बर्थ टु अडोलसेंस (II एड.) बाल्टीमोर्स, यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस ।

कैलेन्सी.एच., क्लार्क.जे.एम.(1990) ऑक्युपेशनल थेरपी विद चिल्ड्रेन, मेल्बोर्न, चर्चिल लिविंगस्टोन ।

थापसन.जे.आर., ओ क्विन.ए (1979) डेवलेपमेंटल डिजेबिलिटीस-ईटियालोजीस, मैनिफेस्टेशन्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

हैंडबुक ऑफ केयर एंड ट्रेनिंग फॉर डेवलेपमेंटल डिजेबिलिटीस (1991) नं:4 नं:3, जापान लीग फॉर दिमेंटली रिटार्टेड ।

शेफर.एस.डी., मोइर्ख.एस.एम. (1989) डेवलेपमेंटल प्रोग्रामिंग फॉर इन्फन्ट्स एंड यंग चिल्ड्रेन (III एडी) (वोल्यूम-3) यूएसए, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगॉन प्रेस ।

स्नो.डब्ल्यु.सी. (1989) इन्फंट डेवलेपमेंट, न्यू जर्सी, प्रेन्टिस हाल ।

इलिंग्वर्थ एस.आर. (1991) दि नार्मल चाइल्ड-सम प्राब्लम्स ऑफ दि अर्ली इयर्स एंड देयर ट्रीटमेंट (Xएडी) एडिन्बरा, चर्चिल लिविंगस्टोन ।

इलिंगवर्थ.एस.आर.(1983) दि डेवलेपमेंट ऑफ दि इन्फंट एंड यंग चाइल्ड-नार्मल एंड एब्नार्मल (VIIIएडी), एडिनबरा, चर्चिल लिविंगस्टोन ।

रोजेनब्लिथ.जे.एफ., सिम्स-नाइट.जे.ई. (1985) इन दि बिगिनिंग-डेवलेपमेंट इन दि फर्स्ट टू इयर्स ऑफ लाइफ, न्यू देल्ही, सेज पब्लिकेशन्स ।

जेन्टाइल.एम. (1997) फंक्शनल विजुअल बिहेवियर-ए थेरपिस्ट्स गाइड टु इवैलुएशन एंड ट्रीटमेंट आप्शन्स, यूएसए, एओटीए ।

वारे.एच.डी (1994), ब्लाइंडनेस एंड चिल्ड्रेन-ऐन इंडिवीजुअल डिफरेन्सेस अप्रोच, न्यू यार्क, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस ।

पर्शा.ए.जे. नववी.के.आर. (2004) विजुअल स्टिमुलेशन एक्टिविटीस फॉर इन्फंट्स एंड टॉडलर्स- ए गाइड टु पेरेंट्स एंड केयरगिवर्स, सिकंदराबाद, एनआईएमएच ।

बी.एच., (1999) दि ग्रोइंग चाइल्ड । ऐन अप्लाइड अप्रोच (IVएडी) न्यू यार्क, लॉगमैन ।

कोल.एम., एंड कोल.एस.पी.(2001) दि डेवलपमेंट ऑफ चिल्ड्रेन (IVएडी) न्यू यार्क, वर्थ पब्लिशर्स।

बर्क.एल.बी (1993) इन्फन्ट्स, चिल्ड्रेन एंड एडोलेसेट्स, बोस्टन, एलीन एंड बेकन ।

ओसोफ्स्की.जे.बी.(1979) हैंडबुक ऑफ इन्फन्ट डेवलेपमेंट न्यू यार्क: जॉन वैले एंड सन्स ।

सीफर्ट.,के.,हॉफनग, आर.जे.,(2000) चाइल्ड एंड एडोलेसेंट डेवलेपमेंट (V डी), बोस्टन: मोंगहटन मफलिन कंपनी ।

स्नो.सी.डब्ल्यु (1998) इन्फंट डेवलेपमेंट न्यू जर्सी: इंगलवुड क्लिफ्स ।

मसेन.एच.पी.एट आल (199३) चाइल्ड डेवलेपमेंट एंड पर्सनैलिटी (VIIएडी) न्यू यार्क: मार्पर एंड रो ।

फेबर.आर एंड मार्टिन.सी.एल (2003) एक्स्प्लोरिंग चाइल्ड डेवलेपमेंट.बोस्टन: एलीन एंड बेकन।

बी.एम., एंड बॉय्ड.डी.(2002) लाइफ स्पैन डेवलेपमेंट (IIIएडी). बोस्टन, एलीन एंड बेकन ।

हर्लाक ई.बी., (1975) हेवलेपमेंटल साइकालोजी (IV एडी) न्यू डेल्ही, टाटा मैक्ग्रा हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड ।

जोन्स एफ.आर.,एंड मॉर्गन.आर.एफ (1985) दि साइकालोजी ऑफ ह्यूमेन डेवलेपमेंट, (IIएडी) न्यू यार्क: मार्पर एंड रो, पब्लिशर्स ।

चौबे.एस.पी. (1987) डेवलेपमेंटल साइकालोजी आगरा: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एजुकेशनल पब्लिशर्स ।

लेफ्रान्कोइस.सी.आर.(1990) दि लाइफस्पैन (IIIएडी) कैलिफोर्निया: वाड्स्वर्थ पब्लिशिंग कंपनी।

ल्यूगो.जे.ओ., एंड मेर्शी जी.एल.,(1979) ह्यूमन डेवलेपमेंट : ए साइकॉलिजिकल, बायोलाजिकल, एंड सोशियोलॉजिकल अप्रोच टु द लाइफ स्पैन (IIएडी) न्यूयार्क: मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी., इन्का.,

ह्ग्स्. एफ.पी.एंड लॉय्ड डी.एन.(1985) ह्यूमन डेवलपमेंट ऐक्सेस दि लाइफ स्पैन. न्यूयार्क: वेस्ट पब्लिशिंग कंपनी ।